सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 46, नई दिल्ली । शनिवार, 26 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

लोग तुम्हारी स्तुति करें या निंदा, लक्ष्य तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहांत आज हो युग में, तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो।
- स्वामी विवेकानंद

03 सदर में 40 हज़ार दुकान बंद करके फेस्टा ने पाकिस्तान को सबक सिखाने की मांग
06 विलुप्त जीवों के जीवन के संकेत
08 अग्निवीर योजना: बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी का पर्दाफाश

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के द्वितीय सम्मान समारोह में सम्मान प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म को भरकर जमा करे। आपके फार्म जमा करने के बाद जूरी द्वारा जांच कर आपको ईमेल/व्हाट्सएप से सम्मान समारोह का निमंत्रण भेजा जाएगा।
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSeK5Go2e5KD4m1v82E-oGAISA7BAXqX5hTm31j9OLZG4fifCA/viewform?usp=dialog

सम्मान हेतु योग्यता।।

परिवहन, सड़क सुरक्षा, प्रदुषण नियंत्रण, महिला सुरक्षा एवं अन्य किसी भी श्रेणी/क्षेत्र में आप जनहित में कार्य कर रहे है या करते है तो आप परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के द्वितीय सम्मान समारोह में अपना सम्मान प्राप्त करने के लिए... अपना परिचय, कार्य शैली, कार्य क्षेत्र एवं किस आधार पर सम्मान प्राप्त करने में योग्य हैं।

transportvisheshcontent@gmail.com Switch account

The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form

* Indicates required question

अधिकृत मानदंड *
- ◯ नाम
- ◯ संस्था
- ◯ ट्रस्ट
- ◯ अन्य
- ◯ Other:

आपका या संस्थान परिचय *

Your answer

सम्मान श्रेणियां *
- ◯ परिवहन
- ◯ महिला सुरक्षा
- ◯ सड़क सुरक्षा
- ◯ प्रदूषण नियंत्रण
- ◯ लेखाकार
- ◯ कवि
- ◯ कवित्री
- ◯ प्रदूषण मुक्त वाहन निर्माता (इलेक्ट्रिक वाहन)
- ◯ सुरक्षा नियंत्रित उपकरण निर्माता
- ◯ वाहन स्क्रैप डीलर
- ◯ उग्रवाद सुरक्षा जागृति
- ◯ पत्रकार
- ◯ ऐंकर
- ◯ Other:

परिचय पत्र (आधार अंक या पंजीकरण प्रमाण पत्र) *

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

आपके द्वारा लागू किया जा रहे मानदंडों को साबित करने के लिए साक्ष्य *

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

परिवहन सम्मान श्रेणियां *
- ◯ सार्वजनिक सेवा
- ◯ छात्र वाहन सेवा
- ◯ यात्री बस सेवा
- ◯ यात्री कार सेवा
- ◯ लॉजिस्टिक सेवा
- ◯ ड्राइवर कल्याण सेवा
- ◯ बस कल्याण सेवा
- ◯ लॉजिस्टिक्स कल्याण सेवा
- ◯ N.A. (अगर आप किसी ओर श्रेणी से भाग ले रहे हैं)
- ◯ Other:

Submit Clear form

गाड़ियों के नंबर प्लेट स्कैन कर डेटाबेस से मिलान करेंगे दिल्ली के बॉर्डरों पर लगे कैमरे, इन वाहनों की होगी नो एंट्री

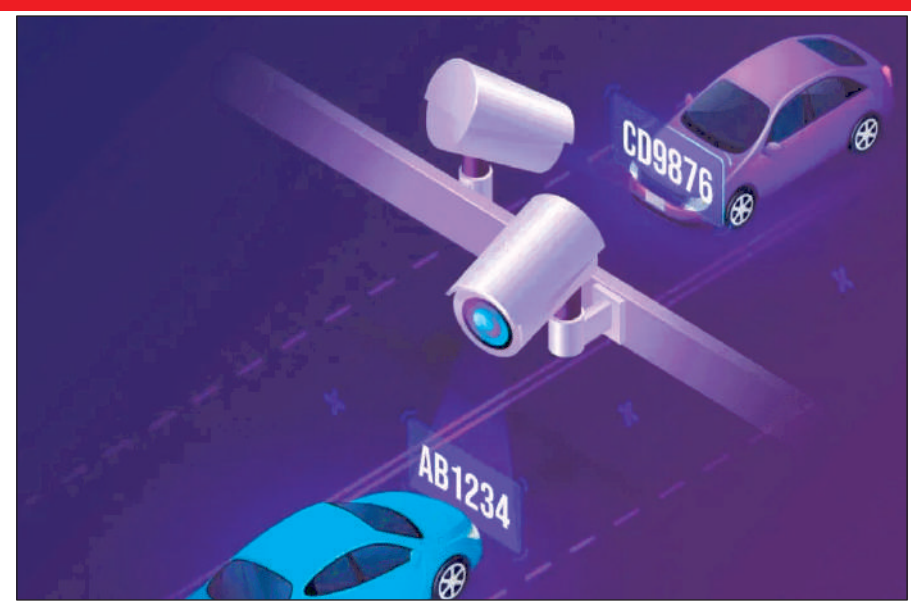

दिल्ली सरकार पुरानी और प्रदूषण फैलाने वाली गाड़ियों को रोकने के लिए सीमाओं पर कैमरे लगाएगी। ये कैमरे गाड़ियों के नंबर प्लेट स्कैन कर डेटाबेस से मिलान करेंगे। उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना लगेगा। पर्यावरण मंत्री ने अधिकारियों को इस योजना को जल्द लागू करने का निर्देश दिया है ताकि दिल्ली में प्रदूषण कम किया जा सके। एक जून तक कार्यों की समीक्षा की जाएगी।

नई दिल्ली। नई कार्ययोजना के तहत प्रदूषण फैलाने वाले एवं उम्र पूरी कर चुके वाहनों को राष्ट्रीय राजधानी में प्रवेश करने से रोका जाएगा। इसके लिए दिल्ली की सीमा पर स्थित सभी प्रवेश बिंदुओं पर स्वचालित नंबर प्लेट पहचान (एएनपीआर) कैमरे लगाए जाएंगे।

पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा की अध्यक्षता में आयोजित एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक में पर्यावरण विभाग, परिवहन विभाग और दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ प्रदूषण पर चर्चा के दौरान उम्र पूरी कर चुके वाहनों को दिल्ली में प्रवेश से रोकने के उपायों की समीक्षा की गई। ऐसे वाहन दिल्ली में प्रदूषण के प्रमुख कारणों में से एक हैं।

कैमरे वाहनों के नंबर को कैप्चर कर क्रॉस चेक करेंगे

मंत्री ने एएनपीआर कैमरों को जल्द से जल्द लगाने पर जोर दिया। ये स्वचालित कैमरे वाहनों के नंबर को कैप्चर करने के बाद उन्हें वाहन डेटाबेस से क्रॉस-चेक करेंगे। इससे यह पता चलेगा कि उक्त वाहन को दिल्ली की सीमा में प्रवेश करने वैधता है या नहीं। वाहन पंजीकरण विवरणों की जांच वाहन डेटाबेस में की जाएगी ताकि पता लगाया जा सके कि वाहन उम्र पूरी कर चुके वाहन के रूप में सूचीबद्ध भी हैं या नहीं।

बॉर्डर पर एलईडी स्क्रीन भी स्थापित की जाएंगी

दिल्ली बार्डर के प्रवेश द्वारों पर वाहनों की स्थिति बताने के लिए एलईडी स्क्रीन भी स्थापित की जाएंगी, जो वाहन के नंबर को फ्लैश करेंगी और उम्र पूरी कर चुके वाहन के रूप में सूचीबद्ध पाए जाने पर संबंधित वाहन नंबर के साथ "रांग एंट्री" दर्शाएंगी। इस आशय के संदेश वाहन मालिकों को भी एसएमएस और वाटसएप के जरिये उनके मोबाइल फोन पर भेजे जाएंगे।

प्रदूषण को प्रारंभिक स्तर पर रोकने की तैयारी

सिरसा ने कहा कि "हम प्रदूषण को उसके प्रारंभिक स्तर पर ही रोकना चाहते हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर दिल्ली के विभिन्न बार्डर प्वाइंट्स पर चरणबद्ध तरीके से एएनपीआर कैमरे लगाए जा रहे हैं ताकि उम्र पूरी कर चुके (एंड-आफ-लाइफ) वाहनों का पता लगाकर उन्हें रोका जा सके।"

इस निर्देश का उल्लंघन करने पर उन पर जुर्माना लगाया जाएगा। इसके अतिरिक्त, एंड-आफ-लाइफ की सीमा पर पहुंचने जा रहे वाहन मालिकों को भी अलर्ट संदेश भेजे जाएंगे, ताकि नियमों के अनुपालन के लिए अपने वाहनों में समय रहते आवश्यक बदलाव किए जा सकें।

एक जून की समय सीमा और लक्ष्यों की भी समीक्षा

सचिवालय में आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान मंत्री ने वाहन प्रदूषण नियंत्रण, वायु गुणवत्ता सुधार, वृक्षारोपण, ठोस और सीएंडडी कचरा प्रबंधन समेत पानी का छिड़काव करने वाले ट्रकों एवं एंटी-स्मॉग गन की तैनाती के लिए एक जून की समय सीमा और लक्ष्यों की भी समीक्षा की।

डीपीसीसी, एमसीडी, एनडीएमसी, जल बोर्ड और दिल्ली ट्रैफिक पुलिस जैसे विभागों को उनके क्रियान्वयन की समय सीमा को सुव्यवस्थित और संशोधित क्रियान्वयन कार्यक्रम के साथ रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया गया। बैठक में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी, वन संरक्षण, यमुना पुनर्जीवन और पर्यावरणीय स्थिरता पर जनजागरूकता के लिए नई रणनीतियों पर भी चर्चा की गई।

दिल्ली में सड़कों को लेकर मास्टर प्लान तैयार, अब जल्दी नहीं टूटेंगी; मरम्मत का खर्च भी घटेगा

दिल्ली की सड़कों पर जल्द ही प्लास्टिक का इस्तेमाल होने वाला है। इससे सड़कों की उम्र दो साल बढ़ जाएगी और जल्द टूटने की समस्या से भी निजात मिलेगी। प्लास्टिक मिक्स सामग्री की सड़क बनाने के लिए दिल्ली सरकार सीआरआरआई से मदद लेने पर विचार कर रही है।

नई दिल्ली। सड़कें ज्यादा दिनों तक चलें, इसे देखते हुए राष्ट्रीय राजधानी में प्लास्टिक वाली सड़कों का दौर शुरू होने वाला है। इससे सड़कों की उम्र दो साल और बढ़ जाएगी। जल्द टूट जाने की समस्या से भी निजात मिल सकती है। प्लास्टिक मिक्स सामग्री की सड़क बनाने के लिए दिल्ली सरकार सीआरआरआई (केंद्रीय सड़क अनुसंधान संगठन) से मदद लेने पर विचार कर रही है।

सीआरआरआई भी इसके लिए तैयार है, जल्द ही बैठक होने की संभावना है। कुछ साल पहले सीआरआरआई ने प्रयोग के तौर पर दिल्ली कैंट में ऐसी सड़क बनाई थी, जिसके परिणाम बेहतर आए हैं।

विज्ञानियों का मानना है कि एक किमी सड़क बनाने में एक टन तक प्लास्टिक कचरे का उपयोग किया जा सकता है। भाजपा की सरकार आने के बाद से सरकार सड़कों की दशा को लेकर चिंतित है, जो पिछले 10 साल में अक्सर खराब ही रही हैं। इस समस्या से जनता को सबसे ज्यादा जूझना पड़ा है।

इसे ध्यान में रखते हुए सरकार अब सड़कों की मजबूती और लंबे समय तक चलने वाली सड़क बनाने की रणनीति के तहत प्लास्टिक वाली सड़कों पर विचार कर रही है।

सफल रहा है इसका प्रयोग

प्लास्टिक कचरा मिक्स सड़कें बनाने का प्रयोग कुछ साल पहले दिल्ली में कैंट एरिया में किया गया था। जहां सदर बाजार रोड को बनाया गया था, जो आज तक अच्छी हालत में है। इससे पहले भी कुछ स्थानों पर इसका प्रयोग किया गया था, जो सफल रहा है।

ऐसे तैयार होता है प्लास्टिक का कचरा

सीआरआरआई के विज्ञानियों के अनुसार, सड़क बनाने के लिए कोल तार व रोड़ी मिक्स सामग्री में प्लास्टिक के उस कचरे को शामिल किया जाता है, जो बेकार हो चुकी प्लास्टिक की वस्तुओं को मशीनों द्वारा काटकर छोटे-छोटे टुकड़ों में तैयार किया जाता है। मानक के अनुसार, एक किमी सड़क बनाने में लगभग एक टन तक ऐसा कचरा उपयोग किया जा सकता है।

सड़कों को लेकर अभी ये है स्थित

दिल्ली में लोक निर्माण विभाग के पास 1,259 किमी सड़कें हैं। ये सड़कें प्रमुख हैं, जिन पर शहर का अधिक दबाव रहता है। विभाग की मानें, तो सड़क पांच साल तक चलने में ही खराब हो जाती है, इस दौरान कई बार मरम्मत भी करानी पड़ती है। अधिकारियों के अनुसार, सड़क पर भरने वाले पानी के कारण भी जल्दी सड़कें खराब होती हैं।

हम दिल्ली सरकार से इस बारे में बात कर रहे हैं, उम्मीद है जल्द मुख्यमंत्री के साथ इस बारे में बैठक होने की संभावना है। भाजपा सरकार सड़कों को लेकर बेहतर काम करने के प्रयास में है। अगर इस तकनीक को अपनाया जाता है तो जनता को बहुत लाभ मिल सकेगा। - डॉ. अंबिका

डीटीसी डिपो और टर्मिनलों पर तैनात होंगे जल दूत; लगेंगे डिजिटल वाटर कूलर

दिल्ली के मंत्री पंकज सिंह ने कहा कि गर्मियों में शुद्ध और ठंडा पीने का पानी उपलब्ध कराना एक बुनियादी आवश्यकता है। डिपो में वाटर कूलर स्थापित करना हमारे कर्मचारियों और यात्रियों के लिए बढ़ती गर्मी में एक राहत देने वाला कदम है। मंत्री ने कहा कि डीटीसी द्वारा बस स्टाप पर लू से बचाव की जानकारी देने वाले पोस्टर और पंफलेट लगाए जाएंगे व बांटे जाएंगे।

नई दिल्ली। भीषण गर्मी में यात्रियों को राहत देने के लिए दिल्ली सरकार सभी डीटीसी डिपो और टर्मिनलों पर डिजिटल वाटर कूलर लगाएगी। जल दूतों की भी तैनाती करेगी। पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर 10 प्रमुख डिपो पर ये प्रोजेक्ट शुरू किया जाएगा। इस बात की जानकारी परिवहन मंत्री पंकज कुमार सिंह ने विभाग की हीट एक्शन प्लान 2025 के तहत बृहस्पतिवार को तैयारियों की समीक्षा बैठक करने के बाद दी। बैठक के दौरान परिवहन विभाग, दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) और दिल्ली इंटीग्रेटेड मल्टी-मोडल ट्रांजिट सिस्टम लिमिटेड के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। पंकज सिंह ने कहा कि गर्मियों में शुद्ध और ठंडा पीने का पानी उपलब्ध कराना एक बुनियादी आवश्यकता है। डिपो में वाटर कूलर स्थापित करना हमारे कर्मचारियों और यात्रियों के लिए बढ़ती गर्मी में एक राहत देने वाला कदम है। मंत्री ने कहा कि डीटीसी द्वारा बस स्टाप पर लू से बचाव की जानकारी देने वाले पोस्टर और पंफलेट लगाए जाएंगे व बांटे जाएंगे। उन्होंने बताया कि बंद पड़ी डीटीसी बसों को फूड क्योस्क में बदला जाएगा। इसकी शुरुआत तीन प्रमुख टर्मिनलों आनंद विहार आइएसबीटी, सराय काले खां आइएसबीटी और कश्मीरी गेट आईएसबीटी पर की जाएगी। वहीं मंत्री ने कहा कि आनंद विहार और सराय काले खां टर्मिनलों को अत्याधुनिक मल्टी-माडल ट्रांजिट हब में बदला जाएगा, जिससे बस, मेट्रो, रेलवे और इलेक्ट्रिक वाहनों के बीच बेहतरीन कनेक्टिविटी सुनिश्चित हो सकेगी।

पहले चरण में पायलट प्रोजेक्ट के तहत 10 प्रमुख डिपो में डिजिटल वाटर कूलर लगाए जाएंगे। योजना के सफल रहने पर दिल्ली के सभी डिपो में एक साथ इसकी शुरुआत की जाएगी। मंत्री पंकज सिंह ने कहा कि यह पहल हमारे पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम को और अधिक संवेदनशील और उत्तरदायी बनाने के साथ-साथ जनसेवा के प्रति हमारी मजबूत प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है।

मंत्री ने बताया कि गर्मी के मौसम में बीमार पड़ने वाले लोगों के इलाज के लिए सभी दिल्ली के सरकारी अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों पर विशेष स्वास्थ्य टीमों की तैनाती की जाएगी।

क्या भारत को सिंधु जल समझौता सस्पेंड के बजाय निरस्त करना चाहिए!

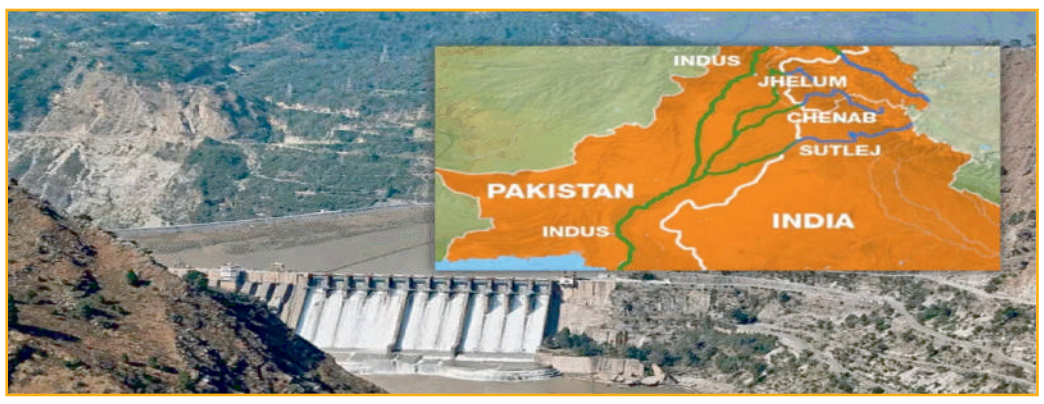

रामस्वरूप रावतसरे

पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने सिंधु जल समझौते को निलंबित कर दिया है। यह समझौता भारत और पाकिस्तान के बीच कई युद्ध होने के बाद भी बना हुआ था। भारत के इस कदम को कई एक्सपर्ट पहले वाटर युद्ध की शुरुआत बता रहे हैं। इस बीच भारतीय एक्सपर्ट ने मोदी सरकार को अमेरिका से सीख लेने के लिए कहा है। सामरिक मामलों के विशेषज्ञ ब्रह्मा चेलानी ने कहा कि सिंधु जल समझौता भारत के लिए एक गलती की तरह से है। इस समझौते से पाकिस्तान को 6 नदियों का ज्यादातर पानी मिल गया। उन्होंने बताया कि साल 2016 में पीएम मोदी ने उरी आतंकी हमले के बाद कहा था कि ''खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते हैं।'' मोदी सरकार को यह सिंधु जल समझौता सस्पेंड करने का फैसला लेने में 8 साल लग गये।

ब्रह्मा चेलानी के अनुसार मोदी सरकार यह फैसला लेने में बहुत धीमी रही। अब एक और बड़ा आतंकवादी हमला होने के 8 साल बाद सरकार को सिंधु जल समझौते को निलंबित करने के लिए बाध्य होना पड़ा है जबकि इस समझोते को बहुत पहले ही खतम कर देना चाहिए था। चेलानी ने कहा कि भारत के इस रवैये की तुलना अमेरिका से की जानी चाहिए। अमेरिका एकतरफा तरीके से रूस के साथ दो समझौतों इंटरमीडिएट रेंज न्यूक्लियर फोर्सेस (आईएनएफ) और एंटी बलिस्टिक मिसाइल समझौते से अचानक ही बाहर हो गया। पहलगाम में हुए आतंकी हमले पर भारत ने एक्शन लेना चालू कर दिया है। पाकिस्तान प्रायोजित इस आतंकी हमले के बाद भारत ने कूटनीतिक कदम उठाए हैं। भारत ने सिंधु जल समझौते को निलंबित करने के अलावा पाकिस्तानी नागरिकों के वीजा रद्द करने, अटारी सीमा बंद करने और पाकिस्तानियों को देश निकाला देने का फैसला लिया है। इन सबमें सबसे बड़ी चोट सिंधु जल समझौते को रद्द करके की ही गई है। इसकी माँग भी लम्बे समय से हो रही थी। भारत और पाकिस्तान, एक ही भूभाग का हिस्सा है। भारत से कई नदियाँ बह कर पाकिस्तान जाती हैं। सिंधु नदी तंत्र की नदियाँ पाकिस्तान के पानी का सबसे बड़ा स्रोत हैं। इन्हीं के पानी के बँटवारे को लेकर किया गया समझौता सिंधु जल समझौता कहलाता है।

यह समझौता वर्ष 1960 में हुआ था। इसके लिए लगभग एक दशक तक बातचीत पाकिस्तान और भारत के बीच चली थी। तब प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और पाकिस्तान के तानाशाह अयूब खान ने इसको मंजूरी दी थी। सिंधु जल समझौते के तहत सिंधु नदी तंत्र की 6 नदियों (व्यास, रावी, सतलुज, सिन्धु, चेनाब और झेलम) के पानी का बँटवारा होता है। इस जल समझौते के अनुसार, पूर्वी नदियाँ (व्यास, रावी और सतलुज) के पानी पर पूरा अधिकार भारत का है, यानी इनमें बहने वाले पानी का वह किसी भी तरह से इस्तेमाल कर सकता है। भारत इन नदियों पर बाँध बना सकता है, उनकी जलधाराएँ मोड़ सकता है, उनसे नहरें निकाल सकता है और पूरा उपयोग कर सकता है। सिंधु जल समझौते के अनुच्छेद 2 का खंड (1) कहता है, "पूर्वी नदियों का पूरा पानी भारत के अप्रतिबंधित उपयोग के लिए उपलब्ध रहेगा, सिवाय इसके कि इस अनुच्छेद में अन्यथा अलग से उसके लिए कोई प्रावधान किया गया हो।' पूर्वी नदियों को लेकर पाकिस्तान को दखलअंदाजी करने का कोई अधिकार नहीं है।

इसको लेकर भी अनुच्छेद 2 के खंड (2) में प्रावधान है। इसमें लिखा है, "घरेलू उपयोग को छोड़कर, पाकिस्तान सतलुज और रावी नदियों के पानी को बहने देने के लिए बाध्य होगा और उन स्थानों पर इनके पानी में किसी भी तरह का हस्तक्षेप नहीं होने देगा, जहाँ ये पाकिस्तान में बहती हैं और अभी तक पूरी तरह से पाकिस्तान में प्रवेश नहीं कर पाई हैं।

दरअसल, यह नदियाँ पाकिस्तान में अंतिम रूप से घुसने से पहले कई बार दोनों सीमाओं के इधर-उधर बहती हैं। पूर्वी नदियों के अलावा बाक़ी पश्चिमी नदियों (सिंधु, झेलम, चेनाब) के पानी पर पूरा अधिकार पाकिस्तान का है। समझौता के अनुसार, भारत इन नदियों को लेकर कोई भी रोक नहीं लगा सकता।

समझौते का अनुच्छेद 3 का भाग (2) कहता है, "भारत पश्चिमी नदियों के जल को बहने देने के लिए बाध्य होगा, और इसमें किसी भी तरह के हस्तक्षेप की अनुमति नहीं देगा, कुछ परिस्थितियों को छोड़ कर।' यह परिस्थितियाँ घरेलू उपयोग और कृषि उपयोग से जुड़ी हुई हैं। इस समझौते के तहत इन 6 नदियों के लगभग 70 प्रतिशत-80 प्रतिशत पानी पर पाकिस्तान को जबकि 20 प्रतिशत -30 प्रतिशत पानी पर भारत को अधिकार मिलता है। इसको लेकर पहले भी प्रश्न उठाए जाते रहे हैं कि इसका सीधा फायदा पाकिस्तान को मिला है और भारत को इससे कोई लाभ नहीं है।

23 अप्रैल, 2025 को भारत के विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने सिंधु जल समझौते के निलंबन की घोषणा की। भारत ने बताया कि पहलगाम में हुए आतंकी हमले में पाकिस्तान का रोल सामने आया है, ऐसे में समझौते को भारत निलंबित कर रहा है। इस हमले में 28 लोगों की हत्या इस्लामी आतंकियों ने कर दी है। मरने वाले अधिकांश हिन्दू हैं जिन्हें धर्म पूछ कर मारा गया जबकि वहां मुस्लिम समुदाय के बहुत से लोग भी थे।

भारत ने स्पष्ट कर दिया कि यह समझौता तब ही वापस अमल में लाया जाएगा जब पाकिस्तान आतंक पर ठोस कार्रवाई करना चालू करेगा। सिंधु जल समझौते पर इतना बड़ा एक्शन इससे पहले कभी नहीं लिया गया था। यहाँ तक कि 1965 युद्ध, 1971 युद्ध और कारगिल के दौरान भी इसे कूटनीतिक विकल्पों के तहत नहीं लाया गया था। 2019 में हुए पुलवामा आतंकी हमले के बाद भारत ने समझौते को 'रिव्यू' करने की बात कही थी। भारत इससे पहले भी कई बार पाकिस्तान को नोटिस भेज कर समझौते की शर्तों में बदलाव की माँग कर चुका है हालाँकि, उस पर कोई आगे ठोस कार्रवाई नहीं हुई है।

जानकारों के अनुसार पाकिस्तान की आबादी का एक बड़ा हिस्सा अब भी खेती पर निर्भर है। उसकी खेती का इलाका भी पंजाब और सिंध में सिमटा हुआ है। बलूचिस्तान और खैबर-पख्तूनख्वाह जैसे राज्य सूखे मरुस्थल जैसे हैं। पाकिस्तान में होने वाली खेती के लिए 90 प्रतिशत पानी सिंधु नदी तंत्र से आता है। यह पानी भारत से ही बह कर जाता है। सिंधु नदी तंत्र से आने वाला पानी पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था में 25 प्रतिशत हिस्से के लिए जिम्मेदार है। पाकिस्तान पहले से ही पानी की किल्लत झेल रहा है। ऐसे में भारत का यह समझौता निलंबित करना उसके लिए बड़ा झटका बताया जा रहा है। यह पानी रुकने से उसकी खेती तो प्रभावित होगी ही, कराची और लाहौर जैसे बड़े शहर भी पानी के लिए तरस जाएँगे। कई विशेषज्ञों का मानना है कि समझौते के निलंबित होने के बाद यह पानी पाकिस्तान जाने से रोकने के लिए भारत को नए बाँध बनाने होंगे, इससे ही पूरी तरह यह कार्रवाई अमल में आ पाएगी हालाँकि, भारत तुरंत भी पाकिस्तान को चोट दे सकता है। भारत अपने हिस्से में इन नदियों की धाराएँ अस्थायी रूप से सेना और बाकी विभाग को काम पर लगाकर मोड़ सकता है। इसके अलावा भारत इन नदियों में बहने वाले पानी की मात्रा, इनके जलस्तर, बहाव की गति और बाकी डाटा भी अब पाकिस्तान के साथ साझा नहीं करेगा। ऐसे में पाकिस्तान को बाढ़ और पानी में कमी का अंदाजा भी नहीं लगा पाएगा। यह स्थिति उसके लिए आगामी मानसून में और भी विकट होगी।

भारत के यह समझौता रद्द करने के बाद पाकिस्तान में हलचल तेज है। इससे पहले भी समझौते को रद्द करने की स्थिति में अंतरराष्ट्रीय मंच पर जाने की बात कहता आया है हालाँकि, इससे कोई विशेष फर्क नहीं पड़ने वाला है। पाकिस्तान में इस समय इस बात को लेकर भी खौफ है कि भारत इन कूटनीतिक क़दमों के अलावा और क्या सैन्य एक्शन लेगा।

रामस्वरूप रावतसरे

'दूसरों को वही नियंत्रित करना चाहता है जो खुद को नियंत्रित कर पाने में असमर्थ है।'

अधिकतर क्रोध और भय ही ऐसे हैं जो दूसरों को नियंत्रित करना चाहते हैं?

क्रोध क्यों नियंत्रित करना चाहता है?

उसमें आत्मविश्वास, आत्मबल की कमी है। वह कामना और संशय से ग्रस्त है।

उसे लगता है दूसरे को उसकी बात माननी चाहिए जो शायद वह नहीं मानेगा इसलिए क्रोध आता है।

दूसरा उसकी हर बात मानने लगे, कहे ऐसा करने लगे तो क्रोध की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

जो आदमी स्वयं को नियंत्रित करने में समर्थ है अर्थात कामना और संशय से ग्रस्त नहीं है तो वह सहजता से किसीको कोई कार्य करने के लिए कहेगा।उसकी बात को माना जायेगा।

भय भी दूसरे को नियंत्रित करना चाहता है क्योंकि दूसरे से हानि की आशंका होती है।

इसका मतलब वह उसके भय को नियंत्रित करने में असमर्थ है।

ज्ञानी कहते हैं भय को नियंत्रित करना अपने आपको नियंत्रित करना है।

The controller is the controlled.

खुद को नियंत्रित करने, दबाने, कुचलने से भय जाता नहीं।

भय को समझना चाहिए।

भय और स्वयं मिले हुए हैं।

भयवृत्ति तथा अहंवृत्ति एकीकृत हैं।

वे कहते हैं अपने भयरुप अनुभव का प्रतिरोध मत करो।उसे होने दो।

वह संचित आंतरिक वृत्ति है।

न अच्छी, न बुरी।जैसी है वैसी है।उसका औचित्य समर्थन या विरोध नहीं किया जाय तो वह खुद-ब-खुद शांत हो जाती है।

अकारण भय का कोई कारण नहीं होता।

कारण अहंबुद्धि तलाशती है।

वह अहंवृत्ति को नहीं देखती, वह बाहर व्यक्ति-घटना-परिस्थिति को देखती है।

बाहर कुछ है जो भयजनक है। उससे हानि की संभावना है इसलिए उसे नियंत्रित करना जरूरी है।इसके लिए बाहरी सहयोग जुटाने की कोशिश की जाती है।

बुद्धिमान आदमी समझ जाता है कि मैं अपने भय को नियंत्रित कर पाने में असमर्थ हूं इसलिए बाहर किसीको नियंत्रित करना चाहता हूं।

जो अपने आंतरिक कारण को समझ लेता है उसके लिए कोई बाहरी कारण नहीं रहता।उसे फिर बाहर कुछ करने की जरूरत ही नहीं पड़ती।

जो भयरहित है।जिसे भय लगता ही नहीं वह क्यों किसीसे व्यर्थ के संघर्ष में उतरेगा?

संघर्ष तो वही करेगा जो उसीको असली कारण मान रहा है।

आदमी अपने कारण को समझ ले तो आधी समस्या वैसे ही समाप्त हो जाती है।

आधी समस्या बिना अहंबुद्धि के अपन आपको समझने से दूर होती है।

जो कारण को बाहर मानता है उसका कोई उपाय नहीं है।

वह फिर बाहरी कारण को नियंत्रित करने में व्यस्त रहेगा, अपनी तरफ ध्यान ही नहीं देगा।

ये दो उदाहरण हैं।ऐसी ढेरों वृत्तियां हैं।

सबके लिए एक ही जवाब है-

स्वयं को देखो, बाहरी से ध्यान हटाओ।

कारण बाहर नहीं, कारण भीतर है।सबका स्रोत अपने भीतर ही है।

मोह है तो भीतर, शोक है तो भीतर, प्रमाद है तो भीतर।

एक मित्र के युवा पुत्र की मृत्यु हो गयी।गहरा शोक होना स्वाभाविक है।

सच बात यह है कि शोक का कारण स्वयं है, पुत्र नहीं।

जहां असंख्य लोग बाहरी कारण को ही सच मानते हों वहां यही ठीक लगता है।अपना कारण जानने की अंतःप्रेरणा जगती नहीं।

ये तो कोई हो सच्चा जिज्ञासु और वह किसी अच्छे महापुरुष के संपर्क में हो तो सही बात जानना संभव हो सकता है।

जैसे आरंभ में अर्जुन को विषाद हुआ था।वह बाहरी कारणों को ही सच मान रहा था।

कृष्ण ने कहा-तू योगी हो। सभी कारण तेरे हैं।हर्ष विषाद में समता रख।

हर्ष का महत्व न हो तो विषाद का प्रभाव अपने आप समाप्त हो जाता है।

महात्मा कहते हैं-संसार का सुख तो दुख ही है।

दुःखालयं अशाश्वतम्।

यह दुखालय है, सुखालय है ही नहीं।यहां दुख ही सुख बनकर आता है।जब सुख छिन जाता है, दुख अपना असली रुप प्रकट कर देता है।

जिस सुख के माथे सदा तलवार लटकती हो वह सुख कैसा?

उस पर भरोसा कैसे किया जा सकता है?उसके मूल में तो भय है।

तो क्या सामर्थ्य नहीं होनी चाहिए?

अवश्य होनी चाहिए पर स्वस्थता की सामर्थ्य और अस्वस्थता की सामर्थ्य का फर्क भी जान लेना चाहिए।

अस्वस्थता शब्द ही सामर्थ्य के अभाव का सूचक है।

असमर्थ समर्थ कैसे हो सकता है? कल्पना में हो तो भले ही,

मगर कल्पना कल्पना है,

यथार्थ यथार्थ है।

सचमुच समर्थ होना है तो स्वस्थ रहना ही उपाय है।

और स्वस्थता तभी संभव है जब हर्ष विषाद में समदृष्टि हो अर्थात यह समझ साफ हो जाय कि यहां खुशी देने वाली घटना भी हो सकती तथा खुशी छीननेवाली भी।

मगर घटनाएं बाहरी हैं, स्व भीतर है।

और स्व में रहकर ही स्वस्थ रहा जा सकता है।

स्वयं सबसे अधिक निकट है।

स्वयं का सहारा वास्तविक है।

इसलिए तो स्वावलंबन की इतनी प्रशंसा है।आलसी, प्रमादी तो दूसरों पर निर्भर होता है।

वह अपने आलस्य, प्रमाद को नियंत्रित कर पाने में असमर्थ है।

फिर भी ज्ञानी पुरुषों ने इन बलवान वृत्तियों को नियंत्रित करने की कोशिश को सही नहीं माना है।वे तो कहते हैं-

समझो इन्हें।यही तुम्हारे हाथ में है।

समझ है तो समस्या ही समाधान है।

समझ न हो तो समाधान भी समस्या बन जाता है।

नासमझी विषमता के माध्यम से समाधान चाहती है।

समझ समता के माध्यम से समाधान करती है।

जगत के सुख-दुख से मिश्रित स्वरूप को समझने के लिए गहरी और पैनी दृष्टि का होना आवश्यक है अन्यथा सब समझते हुए भी हर्षशोक की आंधी चलती रहती है।

वह समझ है भी नहीं।वह कोरी बौद्धिक जानकारी है।

सत्य को समझने की शक्ति उससे भिन्न है।

वह कोरे स्वार्थ से सोचते रहने की यांत्रिक आदत नहीं है।

वह सक्षम है।

सही समझ जगत के सारे दुखों पर भारी पड़ती है।

यदि स्वस्थता का अनुभव वास्तविक हो तो इसका कारण समझ में आ जाता है।

यह जगत जैसा भी है इसका मूल संदेश पारमार्थिक है।

स्वार्थ में तो हम संघर्ष ही जानते हैं।

जब हम ऐसे जानने की जगह नहीं जानने के आनंद में रहते है, ऐसा समझने की जगह, नहीं समझने के आनंद में रहते हैं तब जो भी हो।वह स्वतंत्र है और हम प्रस्तुत हैं बिना किसी शोक या चिंता फ़िक्र के।

अर्थहीन जानना भी कोई जानना है?

कभी कोई समस्या आये ही नहीं-मन में ऐसी प्रार्थना करने वाला मनुष्य अज्ञानी है।

समस्याएं क्यों नहीं आनी चाहिए, उन्हें समस्या कहा ही क्यों जाय?

सिर में दर्द होने को कोई समस्या समझे तो समझे वास्तव में वह एक तथ्य है और उससे दवा आदि से निपटने की जरूरत है।

वह एक बात है बाकी ९९ प्रतिशत समस्याएं विचार जन्य हैं।

जब मैं विचार, किसी भी विचार से ऊपर उठने की कोशिश नहीं करता,

जब मैं हृदय, किसी भी हृदय से श्रेष्ठ होने का प्रयास नहीं करता समता की शांति प्रकट हो जाती है।

तात्पर्य है द्रष्टा-दृश्य दोनों हृदय में ही रहें।

अहंकार में द्रष्टा, दृश्य से ऊपर उठने की कोशिश करता है।

ऐसा करके जब वह दृश्य को नियंत्रित करने की कोशिश करता है तब वह हृदय को ही दबाना चाहता है जबकि उसे नम्र होकर हृदय में रहना चाहिए।

दृश्य भी हृदय में है इसलिए द्रष्टा दृश्य दोनों बराबर हो जाते हैं।

मुट्ठी में भी आकाश होता है। जब हम मुट्ठी बांधते हैं, तो मुट्ठी के भीतर भी वही आकाश है। लेकिन क्या हम उसको आकाश कहतें हैं?

हमें तो यही पता है कि आकाश तो विराट है। वास्तव में, हमारी मुट्ठी में भी आकाश ही होता है, लेकिन पूरा आकाश नहीं होता। चुंकि मुट्ठी भी आकाश में ही है, पूरे आकाश को मुट्ठी नहीं घेर सकती। मुट्ठी आकाश से बड़ी नहीं हो सकती। मनुष्य की चेतना परमात्मा को पूरा अपनी मुट्ठी में नहीं ले पाती, क्योंकि मनुष्य की चेतना स्वयं ही परमात्मा के भीतर है। फिर भी हम कोशिश करते हैं। उस कोशिश में थोड़ी-सी झलकें मिल सकती हैं। लेकिन झलक भी तभी मिल सकती है, जब हम करूणा/सौहार्द/मैत्री से समझने की कोशिश करतें हों। अगर जरा भी मैत्री की कमी हो, तो उसकी झलक भी नहीं मिलेगी, मिलती झलकें भी खो जाएगीं।

बर्बाद होते चीनी ड्रैगन और भारतीय कंपनियां : शिवानन्द मिश्रा

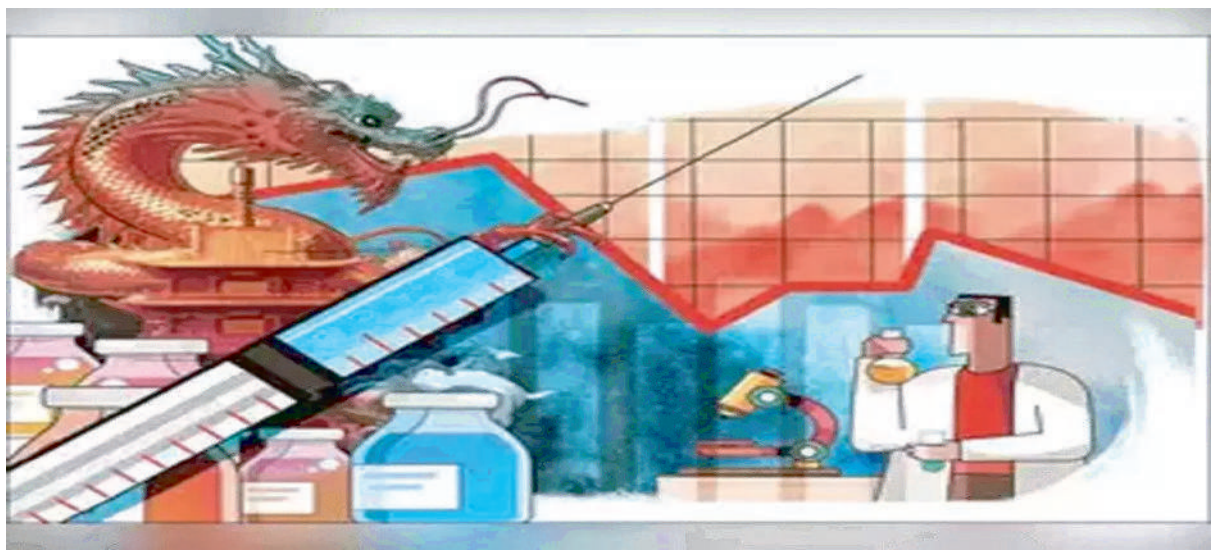

90% चर्चा इस बात पर होती है कि चीन ने विश्व अर्थव्यवस्था को कैसे हाईजैक किया और कैसे वे ऐसा करने के लायक नहीं हैं, कैसे सभी राजनेताओं ने हमें निराश किया है और कैसे वे सभी बौद्धिक संपदा चुरा रहे हैं और कैसे हम बर्बाद हो जाएँगे यदि हम टिकटॉक डाउनलोड करना बंद नहीं करते हैं।

यह सत्य है या नहीं, यह लेख इस कथन से असहमत होने के बारे में नहीं है। इसका आशय इस तथ्य के बारे में नहीं है कि अमेरिका में एक औसत चीनी छात्र अपने काम के घंटों के मामले में अन्य सभी छात्रों (भारतीयों सहित) से बेहतर है और उसका एकमात्र नुकसान यह है कि उसकी अंग्रेजी अच्छी नहीं है लेकिन वह उस स्तर पर पहुँच रही है। यह लेख इस तथ्य के बारे में नहीं है कि चीन के लोग कड़ी मेहनत करते हैं जबकि इतालवी लोग छुट्टियाँ मनाते हैं और फ्रांसीसी लोग 4 दिन का सप्ताह चाहते हैं अथवा आप भारत में एक अच्छे मशीनिस्ट या जालसाज को काम पर नहीं रख सकते क्योंकि वे सभी कॉल सेंटर में बैठे हैं और तकनीकी रूप से चुनौती प्राप्त अमेरिकियों के सवालों का जवाब दे रहे हैं। ये सत्य है कि चीन और उसके लोग उस स्थान के लायक नहीं हैं जहाँ वे पहुँचे हैं। यह लेख एक ऐसे उद्योग के बारे में है, जिसमें चीन को भारत ने मात दी है।

सरकार ही नहीं, वास्तव में कंपनियां ही प्रतिस्पर्धा करती हैं और जहां तक भारत का सवाल है, विनिर्माण के पतन के लिए जिम्मेदार लोग ये कंपनियां हैं।

मुंबई में इंजीनियरिंग कॉलेज जिसे सर्वश्रेष्ठ में से एक माना जाता है, से किसी ने जिस भी शाखा में अध्ययन किया है- मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, सिविल, प्रोडक्शन, टेक्सटाइल, 80% सॉफ्टवेयर उद्योग के लिए कोडर बन जाते हैं।

उन कॉलेजों में प्लेसमेंट के लिए साक्षात्कार के वक्त कैंपस आयोजित करने के लिए हर कॉलेज में प्रशिक्षण और प्लेसमेंट अधिकारी (टीपीओ) द्वारा बताया जाता है कि प्रौद्योगिकी कंपनियों को प्राथमिकता दी जाती है।

लेकिन यह समझ में नहीं आता, क्या इंजन बनाना तकनीक नहीं है? भारत में इसे तकनीक नहीं, विनिर्माण के रूप में लिया जाता है। TCS के किसी कर्मचारी द्वारा न्यूयॉर्क में बैंक के लिए कोबोल कोड लिखना तकनीक माना जाता है। हो सकता है कि चीनियों ने हमें ऐसा करने के लिए मजबूर किया हो।

भारतीय कंपनी बजाज ऑटो ने अपना R&D बनाया। बैच दर बैच मोटरसाइकिलों की डिजाइनिंग और निर्माण को आकर्षक बनाना और इसके लिए भुगतान करना। चयन अनुपात 1:15 था। अधिकांश IIT, REC और VJTI में टॉपर थे जो बिल्कुल बेकार थे। वे कार्नोट साइकिल नहीं बना सकते थे, डीजल और पेट्रोल इंजन के बीच अंतर नहीं बता सकते थे। उन्हें ऊंचाई और योजना दें, वे साइड व्यू नहीं बना सकते थे। उनमें से अधिकांश कोड लिखने पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे, जैसा कि भारत में प्रचलन चल रहा है लेकिन ऐसे रत्न भी हैं, जो भावुक और जानकार हैं लेकिन अंग्रेजी में व्यक्त नहीं कर सकते हैं। जब हिंदी, मराठी, तेलुगु, तमिल और इसी तरह के अन्य भाषाओं में साक्षात्कार आयोजित किया जाय तो ऐसे रत्न मिलते हैं।

ये भारतीय, सरकार, अंग्रेजी बोलने, लिखने वाले एलीट क्लास अपने को समझने वाले से लाख गुना बेहतर हैं।

दक्षिण में स्थित TVS कंपनी ने भी एक बेहतरीन R&D बनाया।

वर्ष 2005 में, चीनी मोटरसाइकिलों ने 30% सस्ते उत्पादों के साथ भारत पर हमला किया। कई डीलरों ने उन्हें बेचना शुरू कर दिया। प्रेस ने भारतीय निर्माताओं के खत्म होने की भविष्यवाणी की। 6 महीने के भीतर वे दिवालिया हो गए। उनकी गुणवत्ता भारतीय मोटरसाइकिलों के बराबर नहीं थी। वे फिर कभी वापस नहीं आए।

बजाज ने फिर अफ्रीका में उन पर हमला करना शुरू कर दिया। अफ्रीकियों के पास दो विकल्प थे; महंगी जापानी मोटरसाइकिलें खरीदें या सस्ती चीनी मोटरसाइकिलें। चीनी मोटरसाइकिलें एक बॉक्स में आती थीं। आप बॉक्स खरीदते हैं और उसे मैकेनिक के पास ले जाते हैं और वह उसे असेंबल कर देता है। नाइजीरिया में मोटरसाइकिलों का इस्तेमाल टैक्सी के रूप में किया जाता है। इसलिए कोई भी आपको एक पैसा भी ज़्यादा नहीं देगा।

ऐसे ही बाजार में बजाज ने अपनी पूरी तरह से असेंबल की गई मोटरसाइकिल लॉन्च की और कड़ी मेहनत की। कीमत चीनी से ज़्यादा और जापानी से कम। आज बजाज मार्केट लीडर है। टीवीएस दूसरे नंबर पर है। चीनियों को बाहर कर दिया गया है। आप ओकाडा (टैक्सी ड्राइवर) के बजाज बाइक के प्रति प्रेम को बखूबी देख सकते हैं। अफ्रीका में देश दर देश, दक्षिण अमेरिका में भारतीयों ने बाजार पर कब्जा कर लिया और चीनियों को बाहर कर दिया है।

2018 में भारत दुनिया में दोपहिया वाहनों का सबसे बड़ा निर्माता बन गया (चीन से दोगुना)। भारतीय कंपनियों ने यूरोपीय ब्रांड खरीदना शुरू कर दिया है। यूरोप में मोटरसाइकिलों का मार्केट लीडर बीएमडब्ल्यू नहीं, बजाज के स्वामित्व वाली केटीएम है।

चीन न केवल बाइक के निर्माण में बल्कि घटकों के निर्माण में भी तेजी से पिछड़ रहा है। भारतीय आपूर्तिकर्ता उन्हें पछाड़ रहे हैं। तीन भारतीय कंपनियों हीरो, बजाज और टीवीएस के बीच आज भारत दुनिया के बाजार पर हावी है। होंडा एक जापानी कंपनी ने अपने अधिकांश आरएंडडी को भारत में स्थानांतरित कर दिया है। ऐसा टीवी, कंप्यूटर, मोबाइल फोन, फार्मास्यूटिकल्स और अन्य उद्योगों में क्यों नहीं किया गया?

वही देश, वही श्रम कानून, वही बुनियादी ढांचा लेकिन वही उद्यमी नहीं।

भारतीय व्यापारियों की विशेषता है कि वे अदूरदर्शी हैं - यह अल्पकालिक भी है और भौगोलिक रूप से सीमित भी। बेशक, सरकार भी मदद नहीं करती। अब, चीनी प्रभुत्व के लिए कौन जिम्मेदार है - सरकार, लोग या कॉर्पोरेट? यह तीनों ही बातें हैं। जब आईटीआई प्रशिक्षित टर्नर और फिटर भी दुकान में काम करने से मना कर देते हैं, जब स्टॉक ब्रोकर को इंजीनियर से ज़्यादा भुगतान किया जाता है, जब टाइपिंग कोड को तकनीक समझ लिया जाता है, जब सरकारें पुराने श्रम और भूमि कानूनों में संशोधन करने से मना कर देती हैं, जब कॉर्पोरेट स्थानीय सोचते हैं न कि वैश्विक और अंत में जब कोई अपने बेटे को दुकान में काम करने के लिए नहीं भेजते हैं, तो इनमें से हर एक कारक चीनी प्रभुत्व के लिए उतना ही ज़िम्मेदार है जितना कि उनका ₹नैतिक भ्रष्टाचार₹।

हमें लूटा गया क्योंकि हमने अपने दरवाज़े और खिड़कियाँ खुली छोड़ दीं। ये सोचना बंद कर देना चाहिए कि चीनी इतनी मेहनत कैसे कर सकते हैं? और वे कम्युनिस्ट सरकार की आज्ञा मानने की हिम्मत कैसे कर सकते हैं?

हमें उनका सारा सामान खरीदना बंद कर देना चाहिए और अपने देश में हर चीज बनाई जा रही है। भारतीय भी तीन दिन के वीकेंड के साथ नौ से पाँच बजे तक काम करेंगे। हम जीत जाएँगे। एक दिन!!

यह आँख खोलने वाली बात - राजीव बजाज (भारतीय उद्योग परिसंघ के भूतपूर्व अध्यक्ष राहुल बजाज के बेटे) ने यह स्वीकार की है कि कुछ समूह है, उनका नाम बदलकर चीन समस्या समूह कर देना चाहिए जो लगातार चीनी चीनी कहते हैं, उनका गुणगान करते रहते हैं। राहुल बजाज ने भारत में ही अपना एक R&D विंग बनाया है जहां विश्व स्तर के तकनीकी विशेषज्ञ तैयार हो रहे हैं।

सदर में 40 हज़ार दुकान बंद करके फेस्टा ने पाकिस्तान को सबक सिखाने की मांग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली में जिस तरह जगह-जगह पहलगाम में हुए आतंकी हमले को लेकर के कैंडल मार्च धरना प्रदर्शन चल रहा है उसी कड़ी में सदर बाजार के लोगों ने भी बाजार बंद रखा ।जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए कायराना आतंकी हमले में 28 पर्यटकों के मारे जाने व्यापारी जगत में काफी रोष था जिसको लेकर पूरी दिल्ली के आज बाजार बंद थे और साथ ही एशिया की सबसे बड़ी मार्केट सदर बाजार भी पूरी तरह से बंद रहा। फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड्स एसोसिएशन के चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा, अध्यक्ष राकेश यादव व पर मेयर जयप्रकाश जेपी भाई की अध्यक्षता में संकड़ों व्यापारियों के साथ-साथ सभी धर्म के लोगों ने मिलकर सड़क धरना प्रदर्शन किया। जिसमें वाहिद खान, सदर खान, आमिर खान, जाने आलम शिवकुमार, नारायण गुप्ता, मुकेश जैन, मुकेश अग्रवाल आंतकवाद के खिलाफ कड़े कदम उठाने की मांग की।

परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने बताया सदर बाजार में लगभग 40 हज़ार दुकाने हैं और आए दिन लाखों व्यापारी यहां पर व्यापार करने आते हैं पूरी तरह से दुकानदारों ने अपनी दुकान बंद करके रोज प्रकट किया। यहां तक की आए दिन रोग लगने वाली रेडी पटरी भी आज नहीं लगी।

इस अवसर पर जेपी भाई ने कहा कि पूरा देश में इसको लेकर काफी रोष है और पूरा देश का व्यापारी एकजुट होकर प्रधानमंत्री को भरोसा दिला रहा है वह सरकार के साथ है। सरकार किसी प्रकार के भी कोई कदम उठाना चाहती है तो वह पूरा सरकार का साथ देंगे। सरकार को चाहिए जल्द से जल्द अंततकवाद के खिलाफ खड़े कदम उठाए।

परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने बताया सुबह फेडरेशन के ऐलान पर सुबह व्यापारी 12 टूटी चौक पर एकत्रित हुए। जिन्होंने हाथ में तरंगों के साथ-साथ बैनर लिए हुए थे जिस पर लिखा हुआ था दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करो, आंतकवाद के खिलाफ कार्रवाई करो, बे गुनाहों का खून बहाना बंद करो, पाकिस्तान मुर्दाबाद जैसे नारे भी लगा रहे थे। पहले व्यापारियों ने वहां पर मारे गए मृत्यु को श्रद्धांजलि दी। फिर व्यापारियों ने 12 टूटी चौक से कुतुब रोड चौक तक हजारों की संख्या में व्यापारियों के साथ एक मार्च निकाला।

इस अवसर पर परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने कहां बड़े दुख की बात है जिस प्रकार जम्मू-कश्मीर में यह घटना हुई है इस घटना ने पूरे देश को हिला कर रख दिया है। यह पाकिस्तान व आतंकवादियों का मकसद है कश्मीर में इस प्रकार का माहौल पैदा करके के वहां दहशत का माहौल पैदा करना क्योंकि वहां पर पर्यटकों ना जाए जिससे वह फिर से कहीं कश्मीरी को गुमराह करके पत्थरबाज या आंतकवादी बन सके जिस देश कभी बर्दाश्त नहीं करेगा।

इस अवसर पर वाहिद खान सदर खान व आमिर खान ने कहा जिस प्रकार वह पर आतंकवादियों ने घटना की है यह उसे कभी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता और इसमें इसमें आपसी भाईचारे बिगड़ने की भी साजिश रची गई है।

इस अवसर पर फेडरेशन के वाइस चेयरमैन पवन खंडेलवाल, कार्यवाहक अध्यक्ष चौधरी योगेंद्र सिंह, वरिष्ठ उपाध्यक्ष भारत भूषण गोगिया, कोषाध्यक्ष दीपक मित्तल, उपाध्यक्ष रमेश सचदेवा, विष्णु यादव हरजीत सिंह छाबड़ा, भारत भरारा, वरिंदर आर्य सहित अनेक व्यापारी उपस्थित थे।

दिल्ली के व्यापारियों द्वारा आज व्यापार स्थगित कर भारत सरकार की आतंकवाद पर सख्त कार्यवाई का समर्थन करने पर आभार : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने दिल्ली के व्यापारियों द्वारा आज अपनी व्यापारिक गतिविधियाँ स्थगित कर पहलगाम में 27 निर्दोषों की निर्मम हत्या करने के दोषी मुस्लिम आतंकियो पर भारत सरकार की सख्त कार्यवाई का समर्थन करने के लिए आभार प्रकट किया है।

चांदनी चौक से सांसद प्रवीन खंडेलवाल आज चांदनी चौक एवं पुरानी दिल्ली के सभी थोक बाज़ारों में पूर्ण बंध के दौरान कपड़ा व्यापारियों की सर्वोच्च संस्था दिल्ली हिन्दुस्तानी मार्केंटाइल एसोसिएशन द्वारा आयोजित आतंकवाद विरोधी मार्च में सम्मिलित हुए। इस मार्च में पुरानी दिल्ली की किराना, ड्राई फ्रूट, कैमीकल, अनाज, लोहा, बुलियान, स्टेशनरी, बिजली समान की मार्किट एसोसिएशन के पदधिकारियों के साथ ही दिल्ली भाजपा के मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर, पूर्व पार्षद सुमन कुमार गुप्ता एवं सतीश जैन आदि भाजपा कार्यकर्ता भी सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर एकत्र पुरानी दिल्ली के व्यापारियों को सम्बोधित करते हुए सांसद प्रवीन खंडेलवाल ने कहा की जब जब देश पर कोई संकट आया है तब तब दिल्ली एवं देश के व्यापारियों ने सरकार को अपना पूरा योगदान एवं आर्थिक समर्थन भी दिया है और मै व्यापारियों का वंदन करता हूं

उन्होने कहा की आज जिस तरह दिल्ली के व्यापारियों ने बिना किसी राजनीतिक आव्हान के भारत सरकार की आतंकवाद समर्थक पाकिस्तान पर सख्त कार्यवाई के निर्णय को व्यापार बंध रख समर्थन दिया है उसके लिए व्यापारियों को साधुवाद है।

श्री खंडेलवाल ने कहा की दरियागंज, जामा मस्जिद, दरीबा, चावड़ी, नई सड़क, लाल कुआं, नया बांस, खारी बावली, नया बाजार, सदर बाजार, मोरी गेट के व्यापारियों के साथ ही चांदनी चौक के कपड़ा व्यापारियों एवं हलवाईयों ने पूर्ण बंध रखा जिसमे 1500 करोड़ रूपए से अधिक का व्यपार स्थगित हुआ। आज 1500 करोड़ रूपये जैसी बड़ी राशि का व्यपार स्थगित कर दिल्ली के व्यापारियों ने स्थापित कर दिया की उनके लिए धन से अधिक देश की सुरक्षा महत्वपूर्ण है।

नवनिर्वाचित महापौर शीघ्र स्थाई समिति का गठन सुनिश्चित करेंगे ताकि दिल्ली वालों को ट्रिपल इंजन सरकार का लाभ अतिशीघ्र मिलना शुरू हो : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने भाजपा प्रत्याशियों सरदार राजा इकबाल सिंह को दिल्ली नगर निगम का महापौर एवं जय भगवान यादव को उप महापौर चुने जाने पर बधाई एवं शुभकामनाऐ दी हैं।

सचदेवा ने कहा है की दिल्ली नगर निगम में भाजपा का महापौर एवं उप महापौर चुने जाने के साथ ही निगम का प्रशासन एवं नागरिक सेवाएं सुचारू रूप से चलने की राह प्रारब्ध हुई है। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की नये महापौर शीघ्र दिल्ली नगर निगम की स्थाई समिति के गठन की राह खोलेंगे ताकि निगम के आर्थिक एवं प्रशासनिक निर्णय पुनः दिल्ली नगर निगम एक्ट 1957 के अनुसार होना शुरू हो सकें। इसके लिए नवनिर्वाचित महापौर शीघ्र स्थाई समिति का गठन सुनिश्चित करेंगे ताकि दिल्ली वालों को ट्रिपल इंजन सरकार का लाभ अतिशीघ्र मिलना शुरू हो।

सिद्धार्थ आनंद और महावीर जैन ने मिलकर बनाई इंटरनेशनल थ्रिलर व्हाइट, जिसमें गुरुदेव श्री श्री रविशंकर की भूमिका में विक्रांत मैसी होंगे

मुख्य संवाददाता

मुंबई। पठान, वॉर और फाइटर के लिए मशहूर फिल्ममेकर सिद्धार्थ आनंद ने अपने बैनर माफ्लिक्स पिक्चर्स के तहत, महावीर जैन फिल्म्स के माध्यम से, उंचाई और नागजिला फेम के प्रोड्यूसर महावीर जैन के साथ मिलकर अपने अगले महत्वाकांक्षी सहयोग की घोषणा की हैः व्हाइट नामक एक इंटरनेशनल प्रोडक्शन।

एक बेहतरीन ग्लोबल थ्रिलर, व्हाइट में बहुमुखी प्रतिभा के धनी विक्रांत मैसी प्रसिद्ध आध्यात्मिक नेता और मानवतावादी गुरुदेव श्री श्री रविशंकर की भूमिका में होंगे।

कोलंबिया में प्रोडक्शन की तैयारियां चल रही हैं, जिसकी शूटिंग इस जुलाई में शुरू होने वाली है। यह फिल्म कोलंबिया के क्रूर 52 साल लंबे गृहयुद्ध के समाधान की शक्तिशाली और प्रेरक कहानी को दर्शाने के लिए एक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय क्रू को साथ लाती है - आधुनिक शांति-निर्माण का एक बड़ा अनकहा अध्याय। मैसी की भागीदारी के बारे में अटकलें तब शुरू हुईं जब अभिनेता को काफी लंबे बाल रखते हुए और शारीरिक परिवर्तन करते हुए देखा गया, जो गहरी आध्यात्मिक उपस्थिति वाले चरित्र के लिए उनकी तैयारी का संकेत देता है। 12वीं फेल और साबरमती रिपोर्ट जैसी फिल्मों में समीक्षकों द्वारा प्रशंसित अभिनय के साथ, विक्रांत मैसी उल्लेखनीय परिवर्तनों से गुजरने की अपनी क्षमता से प्रभावित करना जारी रखते हैं। व्हाइट का निर्देशन प्रसिद्ध विज्ञापन फिल्म निर्माता मोंटू बस्सी द्वारा किया जाएगा और पीसक्राफ्ट पिक्चर्स द्वारा सह-निर्मित, सिद्धार्थ आनंद और महावीर जैन की पावरहाउस जोड़ी के साथ। सिद्धार्थ आनंद की व्हाइट इस बात पर प्रकाश डालने का प्रयास करती है कि कैसे प्राचीन भारतीय ज्ञान ने इतिहास के सबसे लंबे समय तक चलने वाले संघर्षों में से एक को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सिनेमा और कहानी कहने में अपने प्रभावशाली काम के लिए जाने जाने वाले रचनाकारों की एक शानदार टीम के साथ, व्हाइट भारत से एक ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय उत्पादन बनने के लिए तैयार है - जो वैश्विक दर्शकों के लिए शांति और मानवता की एक महत्वपूर्ण, कम ज्ञात कहानी ला रहा है।

मेयर बनते ही राजा इकबाल सिंह ने किया एलान, यूजर चार्ज लिया जाएगा वापस; दिल्लीवासियों के बचेंगे 2400 रुपये

दिल्ली के नवनिर्वाचित मेयर राजा इकबाल सिंह ने दिल्लीवासियों को बड़ी राहत देते हुए कूड़ा उठाने के एवज में लगने वाले यूजर चार्ज को वापस लेने का एलान किया है। यह फैसला केवल रिहायशी संपत्तियों पर लागू होगा जिससे दिल्लीवालों को सालाना 600 से 2400 रुपये तक की बचत होगी। मेयर ने जलभराव की समस्या को दूर करने और सफाई व्यवस्था को सुधारने को भी अपनी प्राथमिकता बताया है।

नई दिल्ली। दिल्ली में ट्रिपल इंजन की सरकार बन गई है। इससे दिल्ली को प्रशासनिक और राजनीतिक निर्णयों में एकरुपता होने से सहूलियत होगी। जबकि कई चुनौतियां भी भाजपा की सरकार के सामने होंगी। हालांकि दिल्ली में ट्रिपल इंजन की सरकार बनते ही दिल्ली वालों को बड़ी राहत मिलने जा रही है।

नवनिर्वाचित महापौर राजा इकबाल सिंह ने दिल्ली वालों को कूड़ा उठाने के एवज में संपत्तिकर के साथ वसूल किए जा रहे यूजर चार्ज से राहत देने की घोषणा की है। हालांकि यह सिर्फ रिहायशी संपत्तियों पर ही होगा। इसके साथ ही महापौर ने कहा कि वह दिल्ली में वर्षा के दौरान जलभराव की स्थिति उत्पन्न न हो वह इसके लिए काम करेंगे।

राजा इकबाल सिंह ने दिल्ली की सफाई व्यवस्था से लेकर वायु प्रदूषण और कूड़े के पहाड़ों को खत्म करने का कार्य अपनी प्राथमिकता में बताया है। साथ ही सदन में तीनों दलों को साथ लेकर चलने और बिना किसी भेदभाव से काम करने का ऐलान महापौर ने किया।

कूड़ा उठाने के एवज में यूजर चार्ज शुरू किया था

बातचीत में राजा इकबाल सिंह ने कहा कि एक अप्रैल से आप की सरकार ने अधिकारियों के साथ मिलकर पिछले दरवाजे से घर-घर से कूड़ा उठाने के एवज में यूजर चार्ज संपत्तिकर के साथ लेना शुरू कर दिया। भाजपा की सरकार इस यूजर चार्ज को वापस कराएगी। उन्होंने कहा कि आप की सरकार में दिल्ली की सफाई व्यवस्था से लेकर स्कूलों की व्यवस्था और अस्पतालों की स्थिति बहुत खराब हो गई थी। ऐसे में चरणबद्ध तरीके से इसमें सुधार किया जाएगा।

स्थायी समिति और अन्य समितियों का गठन किया जाएगा

उन्होंने कहा कि वह दफ्तर में नहीं बल्कि सड़कों पर नजर आएंगे और जनता की समस्याओं का समाधान करेंगे। उन्होंने कहा कि दिल्ली में जलभराव की स्थिति उत्पन्न न हो इसलिए उनकी सरकार यह कोशिश की करेगी समय से नालों की सफाई हो जाए। साथ ही जलभराव के जो स्थान हैं उनके निरीक्षण अधिकारियों के साथ किए जाएंगे ताकि जलभराव न हो। उन्होंने यह भी कहा कि एक माह में स्थायी समिति और अन्य समितियों का गठन कर दिया जाएगा। कूड़े के पहाड़ों को खत्म कराने का काम भी भाजपा की ट्रिपल इंजन की सरकार करेगी।

दिल्ली वालों के बचेंगे 600 से लेकर 2400 रुपये सालाना

नव निर्वाचित महापौर राजा इकबाल सिंह ने यूजर चार्ज वसूलने को बंद करने की घोषणा से दिल्ली के उन संपत्ति मालिकों को राहत मिलेगी जो अपनी संपत्तियों का रिहायशी उपयोग कर रहे हैं। इससे दिल्ली के संपत्ति मालिकों को 600 रुपये से लेकर 2400 रुपये सालाना की बचत होगी। दिल्ली सरकार द्वारा अधिसूचित ठोस कूडा. प्रबंधन उपनियमों के तहत 50वर्ग तक की संपत्ति पर 50 रुपये मासिक तो वहीं 50 से 200 वर्ग मीटर तक की संपत्ति पर 100 रुपये मासिक और 200 वर्ग तक की संपत्ति पर 200 रुपये मासिक वसूलने का प्रविधान है। चूंकि निगम संपत्तिकर के साथ इसे वसूल कर रहा है तो सालाना शुल्क एक साथ ले ले रहा है। ऐसे में रिहायशी संपत्तियों पर यह शुल्क हटेगा तो दिल्ली में संपत्ति मालिकों को 600 रुपये से लेकर 2400 रुपये की सालाना बचत होगी।

यह होंगी भाजपा सरकार की चुनौतियां

दिल्ली में समय से नालों की सफाई, जर्जर भवनों की पहचान और जलभराव न हो इसकी व्यवस्था करना

14 हजार करोड़ रुपये का कर्जा निगम के ऊपर हैं इसे चुकाना भी भाजपा सरकार की चुनौती होगी

कर्मचारियों और अधिकारियों को समय से वेतन जारी करना और उनके बकाये का भुगतान करना

विभिन्न विभागों में कार्यरत अस्थायी कर्मचारियों को समयबद्ध तरीके से नियमित करना

कूड़े के पहाड़ों को खत्म कराना और दिल्ली की सफाई व्यवस्था में सुधार कराना

एमसीडी के अस्पताल और डिस्पेंसरी संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं इसकी पूर्ति करना

यह होगी सहूलियत

केंद्र, दिल्ली और और निगम में एक ही सरकार होने से नीतियों पर मतभेद नहीं होंगे

जरुरत होने पर आर्थिक रूप से दिल्ली सरकार की अतिरिक्त फंड के रूप में मिल सकती है मदद

दिल्ली सरकार को निगम में अपनी नीतिया लागू कराने के लिए नहीं करना पड़ेगा विरोध का सामना

अतिरिक्त और समय से फंड मिलने से विकास कार्यों को मिल सकेगी गति

नगर निगम के अस्पतालों और डिस्पेंसरियों के सुधारने के लिए मदद मिलेगी

जलभराव और दिल्ली की समस्याओं में अब एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप नहीं कर सकेंगे।

दिल्ली में आगजनी की घटनाओं पर लगेंगे लगाम, बनेंगे 100 और नए फायर स्टेशन

दिल्ली सरकार ने अग्निशमन सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए 100 नए फायर स्टेशन बनाने का फैसला किया है। इसके लिए बजट में 500 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं जिसमें से 125 करोड़ रुपये नए उपकरणों पर खर्च होंगे। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली अग्निशमन सेवा को विश्वस्तरीय बनाने का लक्ष्य है ताकि किसी भी आपात स्थिति से निपटा जा सके।

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली सरकार ने अग्निशमन सेवाओं को बेहतर करने के लिए 100 और फायर स्टेशन बनाए जाएंगे। बजट में अग्निशमन सेवा के उन्नयन के लिए 500 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया है, जिसमें से 125 करोड़ रुपये से नए उपकरण खरीदे जाएंगे। जिसमें चार एरियल वाटर टावर, 17 वाटर बाजर और 24 रैपिड एक्शन व्हीकल शामिल है। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि दिल्ली अग्निशमन सेवा (डीएफएस) विश्वस्तरीय उपकरणों से लैस हो और किसी भी आपात स्थिति के लिए हमेशा तैयार रहे।

आशीष सूद के साथ डीएफएस मुख्यालय का दौरा

मुख्यमंत्री ने शुक्रवार को दिल्ली के गृह मंत्री आशीष सूद के साथ डीएफएस मुख्यालय का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने फायर कर्मियों से मुलाकात की और वहां मौजूद अग्निशमन उपकरणों को देखा। अधिकारियों से विभाग को और बेहतर बनाने पर चर्चा की। मुख्यमंत्री ने बताया कि कम सेवा वाले क्षेत्रों में नए फायर स्टेशन बनाए जाएंगे, जबकि मौजूदा अग्निशमन उपकरणों का पूरी तरह से निरीक्षण, मरम्मत और उन्नयन किया जाएगा, ताकि हर समय तत्परता सुनिश्चित की जा सके।

इसी तरह, प्रत्येक फायर स्टेशन में परिचालन क्षमताओं को मजबूत करने और बुनियादी ढांचे में सुधार के प्रयास होंगे। फायर कंट्रोल रूम का लंबे समय से लंबित पुनरुद्धार भी चल रहा है, ताकि इसे पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत, अत्याधुनिक हब में बदला जा सके। उन्होंने कहा कि हम दिल्ली के लोगों के लिए अत्यधिक कुशल, आधुनिक और विश्वसनीय अग्निशमन सेवा चाहते हैं। सरकार उच्च जोखिम वाले कार्यों के लिए अग्निशमन कर्मियों को तैयार करने के लिए उन्नत कार्यक्रम शुरू करने की भी योजना बना रही है।

स्थायी स्टेशन स्थापित करने की योजना बनाई

इस दौरान आशीष सूद ने कहा कि आसानी से पहुंच में न आने वाली कॉलोनियों में आग से राहत और दुर्घटना प्रतिक्रिया में सुधार के लिए हमारी सरकार ने छोटे अग्निशमन वाहनों के लिए स्थायी स्टेशन स्थापित करने की योजना बनाई है। साथ ही अनधिकृत कॉलोनियों और छोटी सड़कों पर 100 नए अग्निशमन वाहन तैनात किए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि ऊंची इमारतों में 70 मीटर तक पहुंचने वाली लिफ्टों का गहन निरीक्षण किया जा रहा है और व्यापक कवरेज सुनिश्चित करने के लिए 90 मीटर तक पहुंचने वाले उपकरण खरीदने की योजना है।

पाक, आतंक, दुनियां और हम

अशोक कुमार झा

जब भी भारत की ज़मीन पर खून बहता है—चाहे वह उरी का सैन्य अड्डा हो, पुलवामा का कारवां या हाल ही में पहलगाम में निर्दोष पर्यटकों की हत्या—हर बार एक नाम, एक मुल्क उभर कर सामने आता है: पाकिस्तान।

पाकिस्तान पिछले कई दशकों से आतंकवाद को अपनी रणनीतिक गहराई का एक अभिन्न हिस्सा मानता आया है। जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा जैसे संगठनों को उसकी सेना और खुफिया एजेंसी ISI खुले या छुपे तौर पर पालती-पोसती रही हैं। ये संगठन सिर्फ बंदूकें नहीं चलाते, ये पूरे उपमहाद्वीप की शांति और स्थिरता के खिलाफ योजनाबद्ध जंग छेड़े हुए हैं।

लोकतंत्र की सतही झलकियों के पीछे पाकिस्तान की असल सत्ता सेना और आतंक के गठजोड़ के पास है, जिसकी विदेश नीति भारत के खिलाफ 'प्रॉक्सी वॉर' पर केंद्रित रही है।

बदलती वैश्विक सोच: अब सहानुभूति नहीं, सज़ा

एक समय था जब अमेरिका और पश्चिमी देश पाकिस्तान को ₹स्ट्रैटेजिक एलीज़₹ मानते थे लेकिन अब वैश्विक मंचों पर हवा का रुख बदल चुका है। FATF की ग्रे लिस्ट से लेकर आर्थिक सहायता की शर्तें, अब पाकिस्तान पर वैश्विक दबाव पहले से कहीं ज़्यादा है।

भारत ने अपनी दृढ़ कूटनीति के ज़रिए आतंक को अंतरराष्ट्रीय एजेंडा बना दिया है। चाहे वो संयुक्त राष्ट्र में साक्ष्य प्रस्तुत करना हो या मसूद अजहर को वैश्विक आतंकी घोषित कराना—भारत की बात अब गंभीरता से सुनी जाती है।

अब नरमी नहीं, निर्णायक कार्रवाई का दौर है।

उरी हमले के बाद की सर्जिकल स्ट्राइक हो या पुलवामा के बाद बालाकोट एयर स्ट्राइक—भारत ने साफ कर दिया कि अब आतंक का जवाब सीमा के भीतर नहीं, सीमा के पार दिया जाएगा।

नई नीति: रक्षात्मक नहीं, आक्रामक भारत

भारत की सुरक्षा नीति अब 'रणनीतिक संयम' नहीं, बल्कि 'आक्रामक रक्षा' (Offensive Defence) पर आधारित है। अब भारत आतंकवाद का मुकाबला केवल सैन्य बल से नहीं, आर्थिक, साइबर, कूटनीतिक और वैचारिक स्तर पर भी करता है।

भारत ने ₹नरम शक्ति₹ से आगे बढ़ते हुए वैश्विक सुरक्षा मामलों में नेतृत्व की भूमिका संभालनी शुरू कर दी है। UN, G20, SCO जैसे मंचों पर भारत की स्पष्टवादिता अब नीति-निर्धारण को प्रभावित कर रही है।

कश्मीर: आतंक से विकास की ओर

कभी कश्मीर को आतंकियों की प्रयोगशाला बनाया गया था लेकिन अनुच्छेद 370 हटने के बाद वहां जो ₹आगर₹ की कल्पना की जा रही थी, वह रोज़गार, निवेश और पर्यटन के रूप में सामने आई है।

कश्मीरी युवा अब बंदूक नहीं, किताब और कीबोर्ड उठा रहे हैं। सेना और सिविल सेवाओं में उनकी भागीदारी बढ़ी है। ये बदलाव आतंक की विचारधारा पर करारा प्रहार है।

मीडिया की भूमिका: खलनायक को नायक मत बनाइए

आतंकी घटनाओं की रिपोर्टिंग करते समय मीडिया को याद रखना चाहिए कि प्रसारण, प्रचार नहीं बन जाए। किसी भी आतंकी का चेहरा, नाम या उसका मकसद बार-बार दिखाना, कहीं न कहीं उसके एजेंडे को हवा देना है।

भारत की आत्मनिर्भरता: टैंक नहीं, टैक्स से भी जीत

अब भारत हथियारों के लिए सिर्फ रूस, अमेरिका या इज़रायल की तरफ नहीं देखता। तेजस, अग्नि, आकाश, स्वदेशी ड्रोन—ये केवल रक्षा नहीं, आत्मनिर्भर भारत की पहचान हैं।

पाकिस्तान की आर्थिक हालत तबाह है. IMF की बैसाखियों पर टिका हुआ मुल्क आज भारत से तुलना नहीं कर सकता। भारत ने न सिर्फ पाक से MFN का दर्जा छीना बल्कि उसके खिलाफ आर्थिक नाकेबंदी की कोशिशों को भी तेज किया।

साइबर आतंकवाद: नई जंग का नया मैदान

भविष्य का आतंक केवल गोलियों से नहीं, कोड और कीबोर्ड से लड़ा जाएगा। भारत अब National Cyber Security Policy और CERT-In जैसे संस्थानों के ज़रिए इस चुनौती से निपटने की तैयारी कर रहा है।

हमारी सबसे बड़ी ताकत: एकता और लोकतंत्र

भारत की असली शक्ति उसके लोग हैं—उनकी विविधता, सहिष्णुता और एकजुटता। जब आतंक हमारे मंदिरों, मस्जिदों, चर्चों और गुरुद्वारों पर हमला करता है, तो उसका उद्देश्य हमारी साझा विरासत को तोड़ना होता है। लेकिन भारत हर बार पहले से ज्यादा मजबूत होकर उभरता है।

"जब भारत बोलता है, तो दुनिया सुनती है।"

यह सिर्फ एक संवाद नहीं, भारत के बदलते वैश्विक स्वरूप का प्रतीक है। अब समय आ गया है कि भारत आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक नैतिक नेतृत्व का झंडा उठाए।

अब केवल गुस्सा नहीं, समाधान चाहिए

आज पूरे देश में आक्रोश है, लेकिन अब ज़रूरत है ऐसी ठोस नीति और दीर्घकालीन रणनीति की, जो आतंकवाद के हर रूप को जड़ से उखाड़ फेंके। हमें केवल पाकिस्तान को नहीं, बल्कि उस सोच को हराना है जो नफरत और हिंसा को अपना औजार बनाती है। क्योंकि हमें अब शिकार नहीं, बल्कि रणनीति, संकल्प और शक्ति का प्रतीक बनना है।

पहलगाम आतंकी हमले के विरोध में कानपुर के सिख समाज में भी उबाल, कैंडल मार्च निकाल दी श्रद्धांजलि

सुनील बाजपेई

कानपुर। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के खिलाफ सिख समाज में भी जबरदस्त उबाल है। उसने इसके लिए कैंडल मार्च निकाल कर कानपुर के शुभम द्विवेदी तथा 25 अन्य मृतकों के लिए भी शोक सभा आयोजित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि भी अर्पित की।

पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारों के साथ आतंकवादियों द्वारा मारे गए हिंदू पर्यटकों को श्रद्धांजलि देने एवं इस कायरतापूर्ण कृत्य के विरोध में दुर्गा पार्क समिति, वार्ड 48, गोविंद नगर के दुर्गा पार्क परिसर में आयोजित इस सभा को संबोधित करते हुए सरदार महेंद्र वीर सिंह कैप्टन सर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पाकिस्तान और उसके आका आतंकियों को नेस्तनाबूद करके ही दम लेंगे जिसके लिए पूरा भारत उनके साथ खड़ा है।

दुर्गा पार्क समिति के मंत्री सोमिल अवस्थी द्वारा चर्चित शिक्षा विद शिक्षक सरदार महेंद्र वीर सिंह कैप्टन सर की अगुवाई में तथा जसवीर सिंह ,राजेश भल्ला, शम्मी भल्ला, कैप्टन सर अश्विनी पूरी ,विनोद छाबड़ा और सुरेंद्र पुरी आदि की मौजूदगी में हुई इस श्रद्धांजलि सभा में अन्य वक्ताओं ने भी पाकिस्तान द्वारा संरक्षित आतंकवादियों की इस कायराना हरकत की कड़ी निंदा करते हुए उन्हें मिट्टी में मिला देने के रूप में नेस्तनाबूद किए जाने की भी जोरदार मांग भी भारत सरकार से की।

संहारों से भारत का शीष झुका लोगे यह मत समझो

पहलगाम हमले के बाद हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पाकिस्तान को कड़ा संदेश देते हुए यह बात कही है कि 'भारत आतंक के आकाओं की कमर तोड़कर रहेगा।' उन्होंने अपने संबोधन में कहा है कि 'दुश्मनों ने घाटी में आए निहत्थे पर्यटकों को ही नहीं, भारत की आत्मा पर हमला करने का दुस्साहस किया है तथा भारत हमलावरों और साजिशकर्ताओं की पहचान करेगा, उनकी तलाश कर उन्हें सजा देना सुनिश्चित करेगा।' उन्होंने कड़े शब्दों में यह बात कही है कि 'आतंकवादियों और नृशंस हमले की साजिश रचने वालों को उनकी कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी तथा हमलावरों और साजिश रचने वालों को धरती के आखिरी कोने तक भी नहीं छोड़ेंगे।' उन्होंने कहा कि 'कोटि-कोटि देशवासी व्यथित है, कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश में एक जैसा आक्रोश है।' वास्तव में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ऐसा कहकर जहां एक ओर इस देश की आम जनता के आक्रोश को स्वर दिया है, वहीं दूसरी ओर उन्होंने सीधे तौर पर उन ताकतों को भी सीधी चेतावनी दी है, जो भारत को आतंकवाद व आतंकियों के नाम पर अस्थिर करना चाहती है। कहना ग़लत नहीं होगा कि पहलगाम में हुए नृशंस आतंकवादी हमले के दो दिन बाद प्रधानमंत्री मोदी ने न केवल पाकिस्तान को बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी यह संदेश दिया है कि भारत की आतंकवाद के प्रति नीति 'जीरो टालरेंस'(शून्य सहनशीलता) की है और भारत किसी भी हाल और परिस्थितियों में आतंकवाद को बर्दाश्त नहीं करेगा। यहां पाठकों को बताता चलूं कि 14 फरवरी 2019 को हुए पुलवामा हमले के बाद भी प्रधानमंत्री मोदी ने यह बात कही थी कि 'सुरक्षा बलों को कार्रवाई की पूरी छूट दे दी गई है और आतंकियों को इस हमले की भारी कीमत चुकानी होगी।' उस समय उन्होंने कहा था कि 'पाकिस्तान इस भ्रम में न रहे कि वह भारत को अस्थिर कर सकता है।' वास्तव में उस समय प्रधानमंत्री ने जो कहा, वो करके दिखाया था। यहां यह बात गौरतलब है कि 26 फरवरी 2019 की सुबह तीन बजे के करीब पाकिस्तान के बालाकोट में जैश-ए-मोहम्मद के आतंकी शिविरों पर भारतीय लड़ाकू विमानों ने हमला कर उन्हें तबाह कर दिया था। बहरहाल ,पाठकों को मालूम होगा कि पहलगाम हमले के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता वाली सुरक्षा संबंधी कैबिनेट समिति (सीसीएस) ने पाकिस्तान पर कई प्रतिबंध लगा दिए हैं ।मसलन,सार्क वीजा छूट योजना (एसवीईएस) को निलंबित कर दिया गया,सिंधु जल संधि(1960) का निलंबन किया गया तथा पाकिस्तान पर विभिन्न व्यापारिक प्रतिबंध और कूटनीतिक निष्कासन भी किया गया। भारत ने वाघा-अटारी सीमा सील होने के बाद दिल्ली-लाहौर बस और समझौता एक्सप्रेस की टिकट बुकिंग भी रद्द कर दी। इतना ही नहीं पाक उच्चायोग के तीन सैन्य सहायक व दिल्ली दूतावास में तैनात दो आइएसआइ लिंक अधिकारियों को अवैध गतिविधियों के सबूत के आधार पर 48 घंटे में देश छोड़ने को कहा तथा भारत ने अपने सैन्य सहायक व पाँच सहायक कर्मियों को इस्लामाबाद से वापस बुलाया गया। इसके साथ ही भारतीय और पाकिस्तानी उच्चायोगों की अधिकतम स्टाफ-संख्या 30-30 पर सीमित कर दी गई। इतना ही नहीं,वित्त मंत्रालय ने पाकिस्तान को दी जाने वाली सभी व्यापारिक रियायतें वापस ले ली तथा 200% सीमा शुल्क पुनः लागू कर दिया गया और पाकिस्तान को निर्यातित होने वाले कपास, चीनी और सीमेंट पर प्रतिबंध लगा दिया गया ।इसके साथ ही सुरक्षा आयात-निर्यात परिषद ने एलओसी ट्रेड फैसिलिटी (श्रीनगर-मंगल) पर भी अस्थायी रोक लगा दी। वास्तव में कश्मीर घाटी-मुज़फ़्फ़राबाद ट्रक रूट बंद रहने से सालाना 1,500करोड़ रुपये के अनौपचारिक व्यापार पर असर पड़ेगा। उपलब्ध जानकारी के अनुसार

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने सेना, वायुसेना और नौसेना प्रमुखों के साथ सामरिक समीक्षा कर सीमा पार लॉन्च-पैड्स पर प्री-एम्प्टिव स्ट्राइक के विकल्पों को अंतिम रूप दिया है तथा सीमांत क्षेत्रों में आर्टिलरी यूनिट्स को 'नो वार्निंग, फुल रिस्पॉन्स' निर्देश मिला है ।विदेश मंत्रालय ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के पाँच स्थायी सदस्यों और जी-20 सहयोगियों को आधिकारिक डिमार्शे जारी कर भारत की कार्रवाई का समर्थन माँगा है। जानकारी के अनुसार गृह मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान और गुजरात में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर रहने वाले ग्रामीणों के लिए निकटतम राहत-शिविर तैयार रखने के निर्देश भी जारी किए हैं। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि पाकिस्तान एक ऐसा देश है,जो आतंकवाद और आतंकियों को प्रश्रय देता आया है और उस पर आज 'आतंकवाद और आतंकियों' का बदसूरत दाग लग चुका है। कितनी बड़ी बात है कि आतंकियों ने धार्मिक पहचान पूछकर देश में नफ़रत और विभाजन की आग फैलाने की कोशिश की और घटना को अंजाम दिया। एक आतंकी का पर्यटक से यह कहना, 'जाओ, अपनी सरकार को बताओ', साफ दर्शाता है कि यह हमला देश के नेतृत्व को चुनौती देने की कोशिश थी। आज पाकिस्तान आतंकवाद का गढ़ ही नहीं है बल्कि पाकिस्तान भारत में नशीली दवाओं और हथियारों की भी तस्करी कर रहा है। वह सीमावर्ती क्षेत्रों में ड्रोनों द्वारा नशा पहुंचा कर भारत की युवा पीढ़ी को तबाह करने की लगातार कोशिशें कर रहा है और इसके बहुत से प्रमाण हैं। पाठकों को बताता चलूं कि यदि हम यहां मात्र अप्रैल माह की ही बात करें तो इस प्रकार की(नशा तस्करी) अनेक घटनाएं सामने आईं हैं। एक प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक में छपे संपादकीय के अनुसार 17 अप्रैल को गुरदासपुर जिला पुलिस ने सीमावर्ती गांव 'ठाकुरपुर' से पाकिस्तान से ड्रोन

द्वारा हैरोइन मंगवाने वाले 3 तस्करों को गिरफ्तार करके उनके पास से 255 ग्राम हैरोइन और 2 पिस्तौल बरामद की गई। इसी तरह से 20 अप्रैल को बी.एस.एफ. ने अमृतसर, तरनतारन और फिरोजपुर जिलों के गांवों में कार्रवाई के दौरान खेतों से 3 पाकिस्तानी ड्रोन और 545 ग्राम हैरोइन बरामद की। इतना ही नहीं,22 अप्रैल को बी.एस.एफ. ने सीमावर्ती गांव 'बल्लड़वाल' के इलाके में ड्रोन से फेंकी 40 करोड़ रुपए की हैरोइन सहित 2 ग्रेनेड, आई.ई.डी. विस्फोटक, रिमोट, 2 विदेशी पिस्तौल व 5 जिंदा कारतूस बरामद किए गए। इतना ही नहीं, 23 अप्रैल को बी.एस.एफ. अमृतसर सैक्टर की टीम ने 4 अलग-अलग सीमावर्ती गांवों में 8 करोड़ रुपए का नशा व ड्रोन जब्त किए। गांव 'हरदोरत्न' में 6 कारतूस, पिस्तौलों के पुर्जे, मैगजीन व 593 ग्राम हैरोइन, गांव 'मुहावा' में एक पिस्तौल की मैगजीन व 574 ग्राम हैरोइन के अलावा 'राजा ताल' और 'गल्लूवाल' गांवों में 2 मिनी ड्रोन और 514 ग्राम हैरोइन पकड़ी। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि 23 अप्रैल को तरनतारन में ड्रग इंस्पैक्टर और पुलिस द्वारा एक मकान में संयुक्त छापेमारी के दौरान बड़ी मात्रा में पाकिस्तान की बनी हुई 10 प्रकार की दवाएं भी जब्त की गईं हैं ।वास्तव में पाकिस्तान भारत में हथियारों,ड्रग(नशीले पदार्थों) की तस्करी कर जहां भारत की युवा पीढ़ी को बर्बाद करने का सपना संजो रहा है, वहीं दूसरी ओर वह कश्मीर घाटी में आतंकवाद और आतंकी घटनाओं के माध्यम से भारत को कमजोर, अस्थिर, अशांत करने का भी सपना संजो रहा है लेकिन भारत पाकिस्तान के इस सपने को कभी भी पूरा नहीं होने देगा और पाकिस्तान की इन नापाक हरकतों को नेस्तनाबूद करने की क्षमताएं रखता है। समय-समय पर भारत ने पाकिस्तानी आतंकवाद पर कड़ा प्रहार भी किया है लेकिन चीन और अमेरिका जैसे देश चोरी-छिपे पाकिस्तान को सहायता देते आए हैं। हाल फिलहाल पहलगाम हमले के बाद भारत द्वारा पाकिस्तान पर विभिन्न प्रतिबंध लगाने से उसकी बौखलाहट साफ़ दिखाई पड़ रही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि सिंधु जल संधि का निलंबन पाकिस्तान के लिए एक बहुत बड़ा झटका है, क्योंकि सिंधु, झेलम और चिनाब नदियों का पानी, जो संधि के तहत पाकिस्तान को मिलता है, उसके पंजाब और सिंध प्रांतों की अर्थव्यवस्था की असली रीढ़ है। हालांकि भारत द्वारा पाकिस्तान का तत्काल प्रभाव से पानी रोकना इतना आसान काम नहीं है, जैसा कि इसके लिए बड़े बुनियादी ढांचे की जरूरत होती है लेकिन भारत ने सिंधु जल समझौता के जल की आपूर्ति को रोकने की बात कहकर पाकिस्तान पर मनौवैज्ञानिक और रणनीतिक दबाव तो बना ही दिया है। पाठकों को बताता चलूं कि भारत ने पहलगाम हमले को लेकर यूएन में अपनी बात रखते हुए वैश्विक समुदाय से इस हमले की कड़ी निंदा की अपील की थी और भारत के समर्थन में अमेरिका,रूस व संयुक्त अरब अमीरात(यूएई),सऊदी अरब जैसे देश आगे आए हैं ।सच तो यह है कि पहलगाम घटना के बाद विश्व भर में पाकिस्तान पोषित आतंकवादियों की इस कायराना हमले की चर्चा हो रही है। जापान, फ्रांस और इजरायल भी हमारे साथ एकजुट होकर आगे आए हैं। इसके अलावा, ईरान, कुवैत और अन्य इस्लामी देशों ने भी इस हमले की निंदा की है और आतंकवाद के विरुद्ध भारत को समर्थन देने की बात कही है ।बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेखी हसीना भी हमले से 'बेहद आहत' हैं। उन्होंने भी एक संदेश जारी करके इस संदर्भ में भारत के साथ खड़े होने की बात की है ।वास्तव में, अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने इस हमले की निंदा करते हुए आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता दिखाने की बात कही है ।इससे पाकिस्तान पर वैश्विक स्तर भी दबाव बढ़ेगा। सभी जानते हैं कि आज पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था खस्ताहाल है, लेकिन बावजूद इसके वह आतंकवाद और आतंकियों को प्रश्रय देने में लगा हुआ है। वास्तव में पाकिस्तान की यह सोच बन चुकी है कि वह आतंकवाद और आतंकियों की सहायता से भारत से पूर्व में हुए युद्धों का बदला ले लेगा, लेकिन शायद पाकिस्तान को इस बात का अंदाजा नहीं है कि भारत पाकिस्तान की तुलना में एक बहुत ही मजबूत, सुदृढ़ और हर रूप से विश्व का एक सक्षम राष्ट्र है। आज भारत वैश्विक स्तर पर एक बड़ी आर्थिक शक्ति बनकर उभर रहा है और विश्व के सभी देश हर क्षेत्र में भारत का लोहा व भारत को आदर्श मानते हैं। अंत में यही कहूंगा कि पाकिस्तान का मकसद भारत में नफ़रत और विभाजन फैलाना और यहां की युवा पीढ़ी को आतंकवाद के नाम पर दिग्भ्रमित करना है, लेकिन भारत पाकिस्तान के मंसूबे कभी भी कामयाब नही होने देगा। अंत में यही कहूंगा कि -...'अमेरिकी शस्त्रों से अपनी आजादी को दुनिया में कायम रख लोगे, यह मत समझो ।दस बीस अरब डालर लेकर आने वाली बरबादी से तुम बच लोगे यह मत समझो ।धमकी, जिहाद के नारों से, हथियारों से कश्मीर कभी हथिया लोगे यह मत समझो ।हमलों से, अत्याचारों से, संहारों से भारत का शीष झुका लोगे यह मत समझो।'

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

भारतीय कैबिनेट सुरक्षा समिति (सीसीएस) के पांच निर्णयों से घबरा, भारत-पाक शिमला समझौता रद्द करने की गीदड़ भभकी- समझौता रद्द होने पर भारत पीओके वापस लेने के लिए स्वतंत्र होगा

एडवोकेट किशन सनमुनखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ की नजरे अब भारत पर लगी हुई है,कि भारत पहलगाम आतंकी हमले का जवाब उसके आकाओं को कैसे देता है?, ताबड़तोब २३ अप्रैल २०२४ को देर रात्रि तक कैबिनेट सुरक्षा समिति (सीसीएस) ने पांच सख़्त कठोर निर्णय लिए हैं, जिसमें सिंधु जल सन्धि 1960 को अस्थाई निलंबन, एकीकृत चेक पोस्ट अटारी तत्काल प्रभाव से बंद, एसएएआरके पाक नागरिकों पर रोक जारी, वीजा रद्द तथा उच्चआयोग के सैन्य सलाहकारों की वापसी तथा संख्या को घटकर ३० कर दी गई है। इसके जवाब में पाकिस्तान ने भी गुरुवार दिनांक २४ अप्रैल २०२४ को अपने देश के सीसीएस की सभा में 1972 में भारत-पाक के बीच हुए शिमला समझौते जो उस समय के पाक राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो व भारतीय पीएम इंदिरा गांधी के बीच हुआ था, को रद्द करने पर विचार किया गया है जिसकी गीदड़ भभकी दी गई है। इसमें मेरा मानना है कि यह समझौता रद्द करना भारत के लिए अच्छा भी होगा क्योंकि यह पाक के लिए आत्मघाती कदम सिद्ध होगा व भारत के लिए पीओके प्राप्त करने की राह आसान करने वाला होगा, क्योंकि वैसे भी पाक हमेशा से ही इस समझौते का उल्लंघन करते आया है, इसको निलंबित करने में भारत के हाथ खुले हो जाएंगे वह खुल्लम खुल्ला पीओके को भारत में मिलाने की रणनीति पर काम शुरू कर देंगे, वैसे भी भारतीय कश्मीरी आजकल रोड पर उतरकर आंदोलन कर इस घटना पर रोष प्रकट कर गुस्से से विरोध कर रहे हैं। उधर पीओके के बाशिंदे भी भारत के साथ मिलना चाहते हैं, इसलिए शिमला समझौता तोड़ने का यह फैसला भारत के पक्ष में ही जाएगा क्योंकि पहलगाम आतंकी हमला पाक को पड़ गया महंगा! पानी वीजा सीमाचौकी बंद अबकीबार फाइनल जंग कश्मीरीयों के पहलगाम हमले के खिलाफ जंग व भारत के सख्त इश्क एक्शन से आतंक के खिलाफ होगा कड़ा रिएक्शन इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे भारतीय कैबिनेट सुरक्षा समिति (सीसीए) के 5 निर्णयों से घबरा कर शिमला समझौता रद्द करने की गीदड़भबकी समझौता रद्द होने पर भारत पीओके वापस लाने के लिए स्वतंत्र होगा।

साथियों बात अगर हमपाक द्वारा 1972 में हुए शिमला समझौते को रद्द करने की गीदड़भभकी की करें तो पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत के बड़े कदम उठाए हैं जिससे पाक इन कड़े निर्णयों से बौखला गया है, पाक की राष्ट्रीय सुरक्षा समिति की एक बैठक गुरुवार को पीएम की अध्यक्षता में हुई, इसमें पाकिस्तान ने शिमला समझौते को स्थगित करने धमकी दी ।दरअसल, पाक के पीएम ने गुरुवार को आनन-फानन में नेशनल सिक्योरिटी कमेटी की बैठक बुलाई, इसमें पाक ने कई फैसले लिए हैं ।पाक ने भारत पर अंतरराष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया और शिमला समझौते को रद्द करने की धमकी देने लगा है। पाक ने कहा कि वह शिमला समझौते समेत भारत से किए गए सभी द्विपक्षीय समझौतों को निलंबित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। पाक की इस गीदड़ भभकी के बाद शिमला समझौता एक बार फिर चर्चा के केंद्र में आ गया है। इसे 1972 में भारत और पाकिस्तान के बीच एक निर्णायक युद्ध के बाद शांति बहाल करने के लिए साइन किया गया था।

साथियों बात अगर हम शिमला समझौते को समझने की करें तो, हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में उस समय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और पाक के तत्कालीन पीएम जुल्फिकार अली भुट्टो मिले, दोनों नेताओं ने दो जुलाई 1972 को एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, इस समझौते को हम 'शिमला समझौता' के नाम से जानते हैं। इस समझौते में दोनों देशों ने शांतिपूर्ण तरीके से अपने मतभेदों का समाधान करने की प्रतिबद्धता जताई थी। इसका लक्ष्य शांति बनाए रखना और रिश्ते सुधारना था। समझौते के जरिए भारत-पाक ने तय किया कि दोनों देश कोई भी विवाद आपसी बातचीत से सुलझाने की कोशिश करेंगे, इसमें तीसरा देशया संगठन दखल नहीं देगा, कश्मीर में भारत और पाक के बीच नियंत्रण रेखा को कोई भी देश एकतरफा नहीं बदलेगा, दोनों देश इसका सम्मान करेंगे, दोनों देश एक-दूसरे के खिलाफ हिंसा, युद्ध या गलत प्रचार नहीं करेंगे, दोनों शांति से रहेंगे और अपने रिश्तों को बेहतर बनाएंगे, समझौते के तहत भारत ने युद्धबंदी बनाए गए पाकिस्तान के 90 हजार लोगों को रिहा कर दिया, इस दौरान कब्जा की गई जमीन को मुक्त किया, पाक ने भी कुछ भारतीय सैनिकों को रिहाई दी थी, इस समझौते ने जम्मू-कश्मीर के मुद्दे अंतरराष्ट्रीय पटल पर जाने से रोका। भारत की दलील है कि कश्मीर का मामला दोनों देशों के बीच का मामला है ।भारत और पाक के बीच 1971 में युद्ध हुआ, जो पूर्वी पाकिस्तान (आज का बांग्लादेश) की आज़ादी को लेकर थ। पाकिस्तान की सेना ने पूर्वी पाकिस्तान में भारी अत्याचार किए, जिसकी वजह से लाखों लोग भारत में शरण लेने आ गए, इसके जवाब में भारत ने हस्तक्षेप किया और पाक के खिलाफ सैन्य कार्रवाई शुरू की ।यह युद्ध भारत की निर्णायक जीत में समाप्त हुआ, पाक सेना के लगभग 93,000 जवानों ने भारतीय सेना केसामने आत्मसमर्पण कर दिया और एक नया देश- बांग्लादेश विश्व मान चित्र पर उभरा भारत इस स्थिति में था कि वह पाक पर भारी शर्तें थोप सकता था, लेकिन इसके विपरीत, भारत ने शांति और स्थिरता को प्राथमिकता दी,इसी सोच के तहत भारत ने पाक को बातचीत के लिए बुलाया और शिमला समझौता हुआ।

साथियों बात अगर हम शिमला समझौते की मुख्य शर्तों और प्रावधानों की करें तो,शिमला समझौते में कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर सहमति बनी थी, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं - (1) द्विपक्षीयता का सिद्धांत: भारत और पाकिस्तान ने यह स्वीकार किया कि वे अपने सभीविवादों को आपसी बातचीत के माध्यम से सुलझाएंगे,यानी किसी तीसरे पक्ष जैसे कि संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका, या अन्य कोई बाहरी शक्ति की मध्यस्थता को अस्वीकार किया गया,यह भारत के लिए एक कूटनीतिक जीत थी, क्योंकि पाक बार-बार कश्मीर को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाने की कोशिश करता रहा है। (२) बल प्रयोग नहीं होगा: दोनों देशों ने यह वचन दिया कि वे एक-दूसरे के खिलाफ हिंसा या सैन्य बल का प्रयोग नहीं करेंगे और सभी मुद्दों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाएंगे ।(३)नियंत्रण रेखा की पुन: स्थापना: 1971 के युद्ध के बाद की स्थिति के अनुसार एक नई नियंत्रण रेखा निर्धारित की गई, जिसे दोनों देशों ने मान्यता दी। यह वही नियंत्रण रेखा है जो आज भी भारत और पाकिस्तान के बीच सीमाओं को परिभाषित करती है। (4) युद्धबंदियों और कब्जाई जमीन की वापसी: भारत ने पाकिस्तान के लगभग 93,000 युद्धबंदियों को बिना किसी अतिरिक्त शर्त के रिहा कर दिया. इसके साथ-साथ, जो जमीन भारत ने युद्ध के दौरान कब्जा की थी, उसका अधिकांश हिस्सा भी पाकिस्तान को लौटा दिया गया।

साथियों बात अगर हम शिमला समझौते के महत्व और कूटनीति को समझने की करें तो,शिमला समझौते के माध्यम से भारत ने कश्मीर को एक द्विपक्षीय मुद्दा घोषित करवाया, इसका अर्थ यह हुआ कि अब पाक संयुक्त राष्ट्र या किसी तीसरे देश से मध्यस्थता की उम्मीद नहीं कर सकता, एक तरफ पाक की हार और सैनिकों का आत्मसमर्पण था, वहीं दूसरी ओर भारत का परिपक्व और शांति-पसंद दृष्टिकोण था, यह अंतरराष्ट्रीय समुदाय में भारत की छवि को और मजबूत करता है। शिमला समझौते का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव कश्मीर मुद्दे पर पड़ा, पाक अक्सर इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर ले जाने की कोशिश करता है, लेकिन शिमला समझौता इसे द्विपक्षीय संवाद तक सीमित करता है। भारत इसे एक कानूनी आधार के रूप में प्रयोग करता है कि कश्मीर कोई अंतरराष्ट्रीय मुद्दा नहीं है, 1948 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने कश्मीर पर एक प्रस्ताव पारित किया था,जिसमें जनमत संग्रह का उल्लेख था, लेकिन 1972 में शिमला समझौते के तहत पाकिस्तान ने द्विपक्षीयता को स्वीकार कर इन प्रस्तावों की प्रासंगिकता समाप्त कर दी थी, यही कारण है कि भारत संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप को खारिज करता है।

साथियों बात अगर हम समझौता होने के कारणों और, क्या शिमला समझौता तोड़ सकता है पाक? की करें तो २०२५ में पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने पाक पर कड़ी कूटनीतिक कार्रवाई शुरू की, इसके जवाब में पाक ने शिमला समझौते का हवाला देते हुए कहा कि वह भारत के साथ सभी द्विपक्षीय समझौतों को स्थगित करता है, जब तक कि भारत संयुक्त राष्ट्र प्रस्तावों और अंतरराष्ट्रीय कानून का पालन नहीं करता, लेकिन क्या पाक ऐसा कर सकता है? तकनीकी तौर पर, कोई भी देश किसी संधि से खुद को अलग कर सकता है, लेकिन ऐसा करने से उसकी अंतरराष्ट्रीय विश्वसनीयता पर गहरा असर पड़ता है, अगर पाक शिमला समझौते को नकारता है, तो वह यह भी स्वीकार करेगा कि अब कश्मीर मुद्दे को बातचीत से सुलझाने की कोई गुंजाइश नहीं रही, भारत इस स्थिति में दो टूक कह सकता है कि यदि पाक समझौते को रद्द करता है, तो फिर वह भी किसी बंधन में नहीं रहेगा ।अगर पाक शिमला समझौते को रद्द करता है, तो यह द्विपक्षीय वार्ताओं को पूरी तरह रोक सकता है और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर तनाव और बढ़ सकता है, साथ ही शिमला समझौते में लाइन ऑफ कंट्रोल का पालन करना दोनों देशों की जिम्मेदारी है अगर यह समझौता रद्द होता है, तो दोनों देशों की सेनाएं पर अधिक आक्रामक हो सकती हैं और संघर्ष की आशंका बढ़ सकती है, साथ ही भविष्य में युद्धबंदी या संघर्ष के मामलों में भरोसे की कमी हो सकती है ।शिमला समझौता दरअसल भारत और पाकिस्तान के बीच रिश्तों को सामान्य करने और भविष्य में किसी भी विवाद को शांति और संवाद के जरिए सुलझाने की प्रतिबद्धता है। इस समझौते में यह तय किया गया कि भारत और पाक अपने सभी मुद्दों को आपसी बातचीत से हल करेंगे,किसी तीसरे देश या संस्था को इसमें हस्तक्षेप की इजाजत नहीं दी जाएगी ।इस समझौते का एक अहम बिंदु यह भी था कि भारत और पाक, कश्मीर में नियंत्रण रेखा को एक-दूसरे की स्वीकृति के साथ मान्यता देंगे और इसेकोई भी पक्ष एकतरफा रूप से नहीं बदलेगा, दोनों देशों ने यह भी संकल्प लिया कि वे एक-दूसरे के खिलाफ बल प्रयोग, युद्ध या भ्रामक प्रचार का सहारा नहीं लेंगे, शांति बनाए रखेंगे और रिश्तों को बेहतर करेंगे ।पाक की ओर से शिमला समझौते को रद्द करने की धमकी केवल एक राजनीतिक हथकंडा है, भारत पहले ही स्पष्ट कर चुका है कि कश्मीर मुद्दा द्विपक्षीय है और शिमला समझौता इसका आधार है, इस समझौते को रद्द करने की धमकी देकर पाक न केवल खुद की अंतरराष्ट्रीय छवि को नुकसान पहुंचाएगा, बल्कि यह भी साबित कर देगा कि वह शांतिपूर्ण समाधान में विश्वास नहीं करता।

अत: अगर हम उपरोक्त पुरे विवरण का अध्ययन अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे किभारतीय कैबिनेट सुरक्षा समिति (सीसीएस) के पांच निर्णयों से घबरा, भारत-पाक शिमला समझौता रद्द करने की गीदड़ भभकी- समझौता रद्द होने पर भारत पीओके वापस लेने के लिए स्वतंत्र होगा पहलगाम आतंकी हमला पाक को पड़ गया महंगा? पानी वीजा सीमाचौकी बंद-अबकी बार फाइनल जंग ? कश्मीरियों के पहलगाम हमले के खिलाफ़ जंग में उतरने व भारत के सख़्त एक्शन से आतंक के आकाओं खिलाफ़ होगा कड़ा रिएक्शन।

वोक्सवैगन गोल्फ जीटीआई चार बेहतरीन कलर के साथ होगी लॉन्च, मिलेगें कई प्रीमियम और एडवांस फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

वोक्सवैगन गोल्फ जीटीआई भारत में अलगे महीने मई 2025 में लॉन्च होने जा रही है। कंपनी इसे चार कलर ऑप्शन में लॉन्च करने वाली है। इसे पूरी तरह से निर्मित इकाई (CBU) के रूप में भारत में बेचा जाएगा। इसे इसे सीमित संख्या में लाया जाएगा और इसे केवल ऑनलाइन माध्यम के जरिए ही भारत में बेचा जाएगा। आइए इसके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में Volkswagen Golf GTI मई 2025 में लॉन्च होने जा रही है। कंपनी ने इसकी पुष्टि भी कर दी है। इसे सीमित संख्या में लाया जाएगा और इसे केवल ऑनलाइन माध्यम के जरिए ही भारत में बेचा जाएगा। Volkswagen की यह हॉट हैचबैक को पूरी तरह से निर्मित इकाई (CBU) के रूप में भारत में बेची जाएगी। कंपनी ने अब इसके कलर ऑप्शन के बारे में खुलासा किया है। आइए जानते हैं कि Volkswagen Golf GTI को किन कलर ऑप्शन के साथ आने वाली है।

कलर ऑप्शन

Volkswagen Golf GTI को कुल चार कलर ऑप्शन में लॉन्च किया जाएगा, जो किंग्स रेड प्रीमियम मेटैलिक ब्लैक, ग्रेनेडिला ब्लैक मेटालिक, ओरिक्स व्हाइट प्रीमियम मदर-ऑफ-पर्ल ब्लैक और मूनस्टोन ग्रे ब्लैक है।

कीमत

भारतीय बाजार में Volkswagen Golf GTI को 50 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया जा सकता है। वैसे तो भारत में इसका सीधा मुकाबला बहुत कम है। इसका मुख्य प्रतिद्वंद्वी मिनी कूपर एस है।

इंजन

Volkswagen Golf GTI में 2.0-लीटर टर्बोचार्ज्ड गैसोलीन इंजन दिया गया है, जो सात-स्पीड ड्यूल-क्लच ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा गया है। इसका इंजन 245 bhp की पावर और 370 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह महज 5.9 सेकंड में 0 से 100 किमी/घंटा की रफ्तार पकड़ लेती है और इसकी टॉप स्पीड 250 किमी/घंटा है।

इंटीरियर और फीचर्स

Volkswagen Golf GTI में ऑल-ब्लैक इंटीरियर देखने के लिए मिल सकता है। इसमें स्पोर्ट बकेट सीटें, तीन-स्पोक स्टीयरिंग व्हील और डिजिटल क्लाइमेट कंट्रोल देखने के लिए मिलेगा, जो इसकी स्पोर्टी लुक को और भी बेहतर बनाएगी।

इसमें 12.9 इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम मिलेगा, जो स्मार्टफोन इंट्रीग्रेशन कंट्रोल और वायरलेस फोन चार्जिंग ऑप्शन देखने के लिए मिलेगा।

एक्सटीरियर

Volkswagen Golf GTI को स्पोर्टी और बोल्ड लुक दिया गया है। इसमें मैट्रिक्स-एलईडी हेडलाइट्स दी गई है, जो इसके स्पोर्टी लुक को और बढ़ा देता है। इसके सामने के बम्पर को काफी अट्रैक्टिव डिजाइन के साथ पेश किया जाएगा।

इसके पीछे की तरफ स्पोर्टी डिफ्यूज़र और दोहरे एग्जॉस्ट दिए गए हैं, जो इसके लुक को और भी बढ़ा देते हैं। इसमें 18-इंच के डायमंड-कट एलॉय व्हील मिलेंगे।

2025 कावासाकी एलिमिनेटर भारत में हुई लॉन्च, पहले से ज्यादा हुई महंगी

परिवहन विशेष न्यूज

कावासाकी ने भारतीय बाजार में 2025 Kawasaki Eliminator को लॉन्च कर दिया है। इसमें लो-स्लंग और क्रूजर डिजाइन मिलता है। इसे पहले की तरह ही एक कलर ऑप्शन टालिक फ्लैट स्पार्क ब्लैक में पेश किया गया है। इसमें पहले की तरह ही 451cc लिक्विड-कूल्ड पैरेलल-ट्विन इंजन का इस्तेमाल किया गया है। नई Eliminator की पहले से 14000 रुपये ज्यादा महंगी हो गई है।

नई दिल्ली। सुपर बाइक बनाने के लिए पॉपुलर जापानी मोटरसाइकिल निर्माता कंपनी कावासाकी ने भारत में अपनी 2025 Kawasaki Eliminator क्रूजर बाइक को लॉन्च कर दिया है। इसकी कीमत में 14,000 रुपये की बढ़ोतरी की गई है, जिसके बाद इसकी एक्स-शोरूम कीमत 5,76,000 रुपये हो गई है। इसकी पहले एक्स-शोरूम कीमत 5.62 लाख रुपये थी। आइए जानते हैं कि 2025 Kawasaki Eliminator किन बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है?

डिजाइन

2025 Kawasaki Eliminator अपने पहले के मॉडल की तरह ही इसके लो-स्लंग, क्रूजर डिजाइन को बरकरार रखा गया है, इसमें किसी तरह का अपडेट नहीं किया गया है। इसे पहले की तरह ही केवल एक ही कलर ऑप्शन मेटालिक फ्लैट स्पार्क ब्लैक में ऑफर किया जा रहा है। इसका पूरा डिजाइन काफी सिंपल और अट्रैक्टिवव है। इसकी साइड प्रोफाइल पहली की तरह ही काफी बेहतरीन दिखने में लगती है।

इंजन

2025 Kawasaki Eliminator में पहले की तरह ही 451cc, लिक्विड-कूल्ड, पैरेलल-ट्विन इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 45PS की पावर और 42.6Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को स्लिप-एंड-असिस्ट क्लच के साथ छह-स्पीड गियरबॉक्स का साथ जोड़ा गया है।

अंडरनिपिंग

2025 Kawasaki Eliminator में 120 मिमी व्हील ट्रैवल के साथ एक टेलीस्कोपिक फोर्क और 90 मिमी ट्रैवल के साथ दोहरे रियर शॉक के जरिए सस्पेंड किया गया है। इसकी सीट की ऊंचाई 735 मिमी, ग्राउंड क्लीयरेंस 150 मिमी और कर्ब का वजन 176 किलोग्राम है। इसमें 18 इंच के पहिये दिए गए हैं, जो आगे की तरफ 130-सेक्शन का टायर और पीछे की तरफ 16-इंच है। इसमें 310 मिमी का फ्रंट और 240 मिमी का रियर डिस्क दिया गया है। इसके दोनों तरफ डुअल-पिस्टन कैलिपर्स और डुअल-चैनल ABS भी दिया गया है।

फीचर्स

2025 Kawasaki Eliminator में गोल और डिजिटल एलसीडी इंस्ट्रूमेंट कंसोल दिया गया है, जिसमें ओडोमीटर, टैकोमीटर, गियर पोजिशन इंडिकेटर, फ्यूल गेज, ट्रिप मीटर और एक घड़ी जैसी जानकारी मिलती है। इसमें स्मार्टफोन कनेक्टिविटी दी गई है, जो 'राइडोलॉजी' मोबाइल ऐप जरिए कनेक्ट होता है। इसमें नेविगेशन नहीं मिलता है। इसमें कोई राइडिंग मोड या ट्रैक्शन कंट्रोल फीचर भी नहीं मिलता है। इसमें आपको एनालॉग राइडिंग अनुभव मिलता है और इसकी सीट की ऊंचाई कम है और आरामदायक राइडिंग पोजिशन मिलती है।

टीवीएस ने लॉन्च की नई 2025 अपाचे RR 310, जानें क्या है खास

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। टीवीएस) के लिए ₹अपाचेर ब्रांड बहुत अहमियत रखता है। पिछले करीब दो दशकों में अपाचे नाम ने टीवीएस की पहचान बना दी है, चाहे बात स्पोर्टी कम्यूटर बाइक्स की हो या फिर स्पोर्ट्स बाइक्स की। इस पूरे लाइनअप के सबसे ऊपर बैठती है Apache RR 310 (टीवीएस अपाचे RR 310)।

बुकिंग

अब टीवीएस ने अपने इस फ्लैगशिप मॉडल को फिर से अपडेट किया है। दिलचस्प बात ये है कि पिछले साल सितंबर में भी इस स्पोर्ट्स टूरर को बड़े लेवल पर अपग्रेड किया गया था। इस बार के अपडेट में कुछ और शानदार फीचर्स जोड़े गए हैं जो इसे ट्रैक पर और भी दमदार मशीन बना देंगे। नई 2025 टीवीएस अपाचे RR310 की बुकिंग अब शुरू हो गई है।

लुक और डिजाइन

नया 2025 मॉडल टीवीएस की एशिया रोड रेसिंग चैंपियनशिप (ARRC) में हासिल की गई शानदार जीत से प्रेरित है। वहां टीवीएस की रेस-स्पेक बाइक ने 1:49.742 सेकंड का जबरदस्त लैप टाइम दर्ज किया था और 215.9 किमी प्रति घंटा की टॉप स्पीड हासिल की थी। इसी जीत से जोश लेकर अब नए मॉडल को डिजाइन और फीचर्स के मामले में और भी रेस-फोकस्ड बनाया गया है।

2025 TVS Apache RR 310: क्या-क्या नया मिला है?

टीवीएस ने इस बार अपने सेगमेंट में पहली बार कुछ यूनिक फीचर्स जोड़े हैं। अब सीक्वेंशियल टर्न सिग्नल लैंप्स (TSL) और ड्रैग टॉर्क कंट्रोल जैसे फीचर्स भी इसमें मिलेंगे। इसके अलावा, लॉन्च कंट्रोल, नई जनरेशन-2 रेस कंप्यूटर और नई 8-स्पोक एलॉय व्हील्स भी जोड़े गए हैं।

बाइक को नए कलर ऑप्शन के साथ पेश किया गया है। जो सेपांग ब्लू रेस रेप्लिका स्कीम, जो टीवीएस एशिया OMC रेस बाइक से इंस्पायर्ड है। अब यह बाइक रेड और बॉम्बर ग्रे जैसे पुराने कलर ऑप्शन के साथ मिलकर तीन स्टैंडर्ड वेरिएंट्स और दो बिल्ट टू ऑर्डर (बीटोओ) कस्टमाइजेशन ऑप्शन में उपलब्ध होगी।

2025 TVS Apache RR 310: इंजन पावर और परफॉर्मेंस

नई अपाचे RR 310 में वही भरोसेमंद 312cc का रिवर्स-इंक्लाइन्ड DOHC सिंगल-सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन दिया गया है। यह इंजन 9,800 RPM पर 37 बीएचपी और 7,900 RPM पर 29 एनएम टॉर्क पैदा करता है। साथ में 6-स्पीड गियरबॉक्स भी मिलेगा।

राइड मोड्स

खास बात ये है कि अब यह इंजन OBD2B नॉर्म्स के अनुरूप बनाया गया है, जो इसे ज्यादा एडवांस और ईको-फ्रेंडली बनाता है। राइडिंग का मजा बढ़ाने के लिए इसमें चार राइड मोड्स मिलते हैं - ट्रैक, स्पोर्ट, अर्बन और रेन।

ऐसे चेक करें ऑनलाइन ट्रैफिक चालान, ये हैं दो सबसे आसान तरीके

परिवहन विशेष न्यूज

ऑनलाइन ट्रैफिक चालान बाइक स्कूटर या कार कोई भी व्हीकल ड्राइव करने के दौरान कहीं कोई चालान तो नहीं कट गया? कई बार यह सवाल जेहन में रहता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको ट्रैफिक चालान को ऑनलाइन तरीके से चेक करने के बारे में बता रहे हैं। साथ ही बता रहे हैं कि आप ऑनलाइन ट्रैफिक चालान की पेमेंट कैसे कर सकते हैं?

नई दिल्ली। मोटरसाइकिल या कार ड्राइविंग के दौरान बहुत से लोग गलती से या फिर अनजाने में Traffic Rules का उल्लंघन कर बैठते हैं। उनकी इस गलती की वजह से मोटा ट्रैफिक चालान कट जाता है। वहीं, कई बार ट्रैफिक पुलिस या CCTV कैमरे से गलती से भी चालान कट जाता है। ट्रैफिक चालान कटने का मैसेज रजिस्टर मोबाइल नंबर जाता है। इस मैसेज को कई लोग देख नहीं पाते हैं या उनसे मिस हो जाता है। जिसकी वजह से बहुत से लोग अनजान रहते हैं कि उनका ट्रैफिक चालान कटा है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको घर पर ही ऑनलाइन ट्रैफिक चालान को चेक करने के आसान तरीके के बारे में बता रहे हैं।

1. ट्रैफिक चालान चेक करने का ऑनलाइन तरीका

स्टेप 1: सबसे पहले आपको ऑफिशियल वेबसाइट echallan.parivahan.gov.in पर जाना पड़ेगा।

स्टेप 2: यहां पर चेक चालान स्टेटस (Check Challan Status) के ऑप्शन पर क्लिक करना होगा।

स्टेप 3: अब आपको आपको चालान नंबर, व्हीकल नंबर और DL नंबर तीन ऑप्शन दिखाई देंगे।

स्टेप 4: ऊपर दिए ऑप्शन में से आपको व्हीकल नंबर ऑप्शन पर जाकर क्लिक करना होगा।

स्टेप 5: अब आपको व्हीकल नंबर की जगह आपको गाड़ी का नंबर भरना होगा।

स्टेप 6: गाड़ी का चैसिस नंबर या इंजन नंबर के साथ कैप्चा कोड को दर्ज करके Get Detail पर क्लिक करना होगा।

स्टेप 7: अब अगले पेज पर आपको गाड़ी पर कोई चालान है, तो उसके बारे में आपको पता चल जाएगा।

2. ऐप से ट्रैफिक चालान चेक करने का तरीका

स्टेप 1: आपको अपने मोबाइल फोन पर NextGen mParivahan ऐप को डाउनलोड करना होगा।

स्टेप 2: ऐप को डाउनलोड करने के बाद आपको कुछ जरूरी जानकारी शेयर करके रजिस्टर करना होगा।

स्टेप 3: इसके बाद आपको होम पेज पर ऊपर दिखाई दे रहे सर्च ऑप्शन पर अपनी गाड़ी नंबर डालना होगा।

स्टेप 4: गाड़ी नंबर डालने के बाद सर्च ऑप्शन पर क्लिक करने पर आपके वाहन की डिटेल दिखाई देगी।

स्टेप 5: इसी पेज पर आपको नीचे की तरफ डिटेल के नीचे व्यू चालान के ऑप्शन पर टैप करना होगा।

स्टेप 6: अगर आपके गाड़ी पर चालान है तो उसकी जानकारी दिखेगी। अगर नहीं है तो "नो चालान फाउंड" लिखा दिखाई देगा।

3. वेबसाइट से ट्रैफिक चालान भुगतान का तरीका

स्टेप 1: आपको आधिकारिक वेबसाइट https://echallan.parivahan.gov.in/index/accused-challan पर जाना होगा।

स्टेप 2: यहां पर आपको चालान नंबर/डीएल नंबर/वाहन नंबर में से किसी एक ऑप्शन का चुनाव करना होगा।

स्टेप 3: इसके बाद आपको मांगी गई सभी जानकारी को भरने के बाद कैप्चा दर्ज करना होगा।

स्टेप 4: यहां पर आपको गेट डिटेल्स के ऑप्शन पर जाकर क्लिक करना होगा।

स्टेप 5: फिर आपको दिखाई दे रहे Pay Now के ऑप्शन पर क्लिक करना होगा।

स्टेप 6: अब आपको चालान भुगतान के लिए पेमेंट मोड का चुनाव करना होगा।

स्टेप 7: पेमेंट करने के बाद आपको ट्रांजैक्शन आईडी मिलेगी, जिसे आप संभाल कर रख सकते हैं।

मारुति ईविटारा टेस्टिंग के दौरान हुई स्पॉट, जल्द लॉन्च होगी मारुति की पहली इलेक्ट्रिक कार

परिवहन विशेष न्यूज

हाल ही में Maruti eVitara को टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया गया है। जिसे देखते के बाद इसके जल्द लॉन्च होने की उम्मीद बढ़ गई है। इसे मई 2025 में लॉन्च किया जा सकता है। यह कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में आने वाली है। इसमें कई बेहतरीन फीचर्स मिलेगें। इसे दो बैटरी पैक के साथ पेश किया जाएगा जो चार्ज होने के बाद 500 किमी से ज्यादा की रेंज देंगे।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में मारुति सुजुकी अपनी पहली इलेक्ट्रिक कार Maruti eVitara लॉन्च करने वाली है। कंपनी ने इसकी टेस्टिंग भी भारत में शुरू कर दी है। वहीं, यह टेस्टिंग के आखिरी पड़ाव पर है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इसे हाल ही में हरियाणा के गुड़गांव में टेस्टिंग के दौरान पूरे कैमोप्लॉग के साथ स्पॉट किया गया है। आइए जानते हैं कि Maruti eVitara में क्या कुछ खास फीचर्स देखने के लिए मिलेगा।

स्टाइलिंग और स्पेशिफिकेसन

मारुति अपनी पहली इलेक्ट्रिक कार को कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में लेकर आने वाली है। इसमें स्पोर्टी एलईडी हेडलैंप, मजबूत बम्पर देखने के लिए मिलेगा। इसके साइड प्रोफाइल में फेंडर पर मोटी क्लैडिंग, हैवी डोर मोल्डिंग और R18 एयरोडायनामिक अलॉय देखने के लिए मिलेंगे। इसमें रियर डोर हैंडल C-पिलर पर रखे गए हैं। पीछे की तरफ टेल लैंप को हेडलैंप के साथ दिया गया है।

इसमें डुअल-टोन इंटीरियर और डैशबोर्ड, वर्टिकल-ओरिएंटेड एयर वेंट, फ्लोटिंग सेंटर कंसोल और मल्टी-कलर इल्यूमिनेशन के साथ एम्बिएंट लाइटिंग मिलेगी। Maruti eVitara में फिक्स्ड ग्लास सनरूफ, 10.1-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10.25-इंच मल्टी-इंफॉर्मेशन डिस्प्ले, वायरलेस चार्जर जैसे फीचर्स देखने के लिए मिलेंगे।

Maruti eVitara में 7-एयरबैग, ऑल-व्हील डिस्क ब्रेक, टीपीएमएस और ब्रेक होल्ड फ़ंक्शन के साथ एक इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक जैसे सेफ्टी फीचर्स भी मिलेंगे। इसमें फ्रंट और रियर पार्किंग सेंसर और 360 डिग्री व्यू कैमरा भी मिलेगा। साथ ही ADAS लेवल 2 फीचर, लेन कीप असिस्ट, अडेप्टिव क्रूज कंट्रोल, ब्लाइंड स्पॉट मॉनिटरिंग और हाई बीम सिस्टम भी मिलेगा।

बैटरी पैक और रेंज

इसमें दो बैटरी पैक 49-kWh और 61-kWh के साथ पेश किया जाएगा। इसे 2WD और AWD दोनों फॉर्मेट के साथ पेश किया जाएगा। इसकी बैटरी एक बार फुल चार्ज होने के बाद 500 किमी तक की रेंज देगी। इसकी अधिकतम गति 150-160 किमी/घंटा होगी।

भारत में कब होगी लॉन्च

Maruti eVitara की टेस्टिंग आखिरी चरण में चल रही है। इसे भारत में मई 2025 में लॉन्च किया जा सकता है। भारतीय बाजार में इसकी कीमत 17 लाख रुपये से 30 लाख रुपये के रेंज में हो सकती है। भारत में इसका मुकाबला, हुंडई क्रेटा ईवी, टाटा कर्व ईवी, एमजी जेडएस ईवी और महिंद्रा बीई 6 से देखने के लिए मिलेगा।

पुरानी से कितनी अलग है नई होंडा डियो 125

परिवहन विशेष न्यूज

हाल ही में 2025 Honda Dio 125 को लॉन्च किया गया है। नई Dio 125 को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है। इसके साथ ही इसकी कीमत में भी बढ़ोतरी की गई है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको नई Dio 125 और पुराने मॉडल में कितना अंतर है। वहीं दोनों में किसमें ज्यादा बेहतरीन फीचर्स मिलते हैं।

नई दिल्ली। होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (HMSI) ने हाल ही में भारत में 2025 Dio 125 को लॉन्च किया है। कंपनी ने इस स्पोर्टी स्कूटर के डिजाइन से लेकर उसकी अंडरनिपिंग को बरकरार रखा है, लेकिन इसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है। इसे नया इंजन भी दिया गया है, जो OBD-2B उत्सर्जन मानदंड-अनुपालन करता है। आइए जानते हैं कि Honda Dio 125 के नए और पुराने मॉडल के बीच कितना अंतर है।

कीमत

2025 Honda Dio 125 को नए फीचर्स और इंजन के साथ लॉन्च किया गया है, जिसकी वजह से इसकी कीमत में बढ़ोतरी भी देखने के लिए मिली है। इसके बेस मॉडल की एक्स-शोरूम कीमत 96,749 रुपये और टॉप-एंड H-Smart वैरिएंट की कीमत 1,02,144 रुपये (1.02 लाख रुपये) है। नए मॉडल की तुलना में पुरानी Dio 125 की एक्स-शोरूम कीमत 87,851 रुपये से 93,750 रुपये थी। इसे बेस और टॉप वेरिएंट की कीमत में 8,898 रुपये और 8,394 रुपये की बढ़ोतरी हुई है।

वेरिएंट

2025 Honda Dio 125 को केवल दो वेरिएंट में पेश किया गया है, जो Standard और H-smart, है। वहीं, इसका पुराना मॉडल चार वैरिएंट में आता था, जो Standard, Standard 3D emblem, Smart और Smart 3D Emblem था। Standard और Standard 3D emblem के बीच केवल एक अंतर कलर स्कीम और लोगो का था।

इंजन

2025 Honda Dio 125 में 123.92cc, सिंगल-सिलेंडर, एयर-कूल्ड इंजन दिया गया है, जो अब OBD-2B अनुरूप है। नया मॉडल 8.3PS की पावर और 10.5Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह पहले की तुलना में 0.02PS और 0.1Nm ज्यादा है। इसका इंजन आइडल स्टार्ट-स्टॉप फीचर्स पैकेज का एक हिस्सा बनी हुई है। यह माइलेज को बढ़ाने में मदद करते हैं, जो भारी स्टॉप-एंड-गो ट्रैफिक में इस्तेमाल किया जाता है। नए मॉडल में पुराने मॉडल की तरह ही साइलेंट स्टार्टर भी दिया गया है।

फीचर्स

2025 Honda Dio 125 में 4.2-इंच TFT डिजिटल इंस्ट्रूमेंट कंसोल दिया गया है, जो ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन, कॉल और मैसेज अलर्ट जैसे फीचर्स को सपोर्ट करता है। इसमें USB टाइप-C चार्जिंग पोर्ट भी दिया गया है। इसके टॉप-स्पेक H-Smart वैरिएंट में कीलेस सिस्टम को पहले की तरह ही दिया गया है। नए Dio 125 की तुलना में पुराने स्कूटर में फुल LCD कंसोल दिया गया था, जो स्मार्टफोन कनेक्टिविटी फीचर के साथ नहीं आता था। इसमें स्पीडोमीटर, टैकोमीटर, रियल टाइम माइलेज, औसत माइलेज, खाली होने की दूरी और साइड-स्टैंड डाउन इंजन कट-ऑफ फीचर जैसी जानकारी मिलती थी।

कहानी: औरत की चाह

विजय गर्ग

रोजरोज देर से आ कर सोने भी नहीं देता. अब शादी कर ले, फिर तेरी घरवाली ही दरवाजा खोलेगी.

आधी रात का गहरा सन्नाटा. दूर कहीं थोड़ीथोड़ी देर में कुत्तों के भूंकने की आवाजें उस सन्नाटे को चीर रही थीं. ऐसे में भी सभी लोग नींद के आगोश में बेसुध सो रहे थे.

अगर कोई जाग रहा था, तो वह शीला थी. उसे चाह कर भी नींद नहीं आ रही थी. पास में ही रवि सो रहे थे. शीला को रहरह कर रवि पर गुस्सा आ रहा था. वह जाग रही थी, मगर वे चादर तान कर सो रहे थे. रवि के साथ शीला की शादी के15 साल गुजर गए थे. वह एक बेटे और एक बेटी की मां बन चुकी थी.

शादी के शुरुआती दिन भी क्या दिन थे. वे सर्द रातों में एक ही रजाई में एकदूसरे से चिपक कर सोते थे. न किसी का डर था, न कोई कहने वाला. सच, उस समय तो नौजवान दिलों में खिंचाव हुआ करता था. शीला ने तब रवि के बारे में सुना था कि जब वे कुंआरे थे, तब आधीआधी रात तक दोस्तों के साथ गपशप किया करते थे.

तब रवि की मां हर रोज दरवाजा खोल कर डांटते हुए कहती थीं, 'रोजरोज देर से आ कर सोने भी नहीं देता. अब शादी कर ले, फिर तेरी घरवाली ही दरवाजा खोलेगी.'रवि जवाब देने के बजाय हंस कर मां को चिढ़ाया करते थे.

जैसे ही रवि के साथ शीला की शादी हुई, दोस्तों से दोस्ती टूट गई. जैसे ही रात होती, रवि चले आते उस के पास और उस के शरीर के गुलाम बन जाते. भंवरे की तरह उस पर टूट पड़ते. उन दिनों वह भी तो फूल थी. मगर शादी के सालभर बाद जब बेटा हो गया, तब खिंचाव कम जरूर पड़ गया.

धीरेधीरे शरीर का यह खिंचाव खत्म तो नहीं हुआ, मगर मन में एक अजीब सा डर समाया रहता था कि कहीं पास सोए बच्चे जाग न जाएं. बच्चे जब बड़े हो गए, तब वे अपनी दादी के पाससोने लगे.

अब भी बच्चे दादी के पास ही सो रहे हैं, फिर भी रवि का शीला के प्रति वह खिंचाव नहीं रहा, जो पहले हुआ करता था. माना कि रवि उम्र के ढलते पायदान पर है, लेकिन आदमी की उम्र जब 40 साल की हो जाती है, तो वह बूढ़ा तो नहीं कहलाता है.

बिस्तर पर पड़ेपड़े शीला सोच रही थी, 'इस रात में हम दोनों के बीच में कोई भी तो नहीं है, फिर भी इन की तरफ से हलचल क्यों नहीं होती है? मैं बिस्तर पर लेटीलेटी छटपटा रही हूं, मगर ये जनाब तो मेरी इच्छा को समझ ही नहीं पा रहे हैं.

'उन दिनों जब मेरी इच्छा नहीं होती थी, तब ये जबरदस्ती किया करते थे. आज तो हम पतिपत्नी के बीच कोई दीवार नहीं है, फिर भी क्यों नहीं पास आते हैं?'

कैसी दूरियां शीला ने सुन ही नहीं रखा है, बल्कि ऐसे भी तमाम उदाहरण देखे हैं कि जिस आदमी से औरत की ख्वाहिश पूरी नहीं होती है, तब वह औरत दूसरे मर्द के ऊपर डोरे डालती है और अपने खूबसूरत अंगों से उन्हें पिघला देती है. फिर रवि के भीतर का मर्द क्यों मर गया है?

मगर शीला भी उन के पास जाने की हिम्मत क्यों नहीं कर पा रही है? वह क्यों उन की चादर में घुस नहीं जाती है? उन के बीच ऐसा कौन सा परदा है, जिस के पार वह नहीं जा सकती है?

तभी शीला ने कुछ ठाना और वह रवि की चादर में जबरदस्ती घुस गई. थोड़ी देर में उसे गरमाहट जरूर आ गई, मगर रवि अभी भी बेफिक्र हो कर सो रहे थे. वे इतनी गहरी नींद में हैं कि कोई चिंता ही नहीं.

शीला ने धीरे से रवि को हिलाया. अधकचरी नींद में रवि बोले, ''शीला, प्लीज सोने दो.''

''मुझे नींद नहीं आ रही है,'' शीला शिकायत करते हुए बोली.

''मुझे तो सोने दो. तुम सोने की कोशिश करो. नींद आ जाएगी तुम्हें,'' रवि नींद में ही बड़बड़ाते हुए बोले और करवट बदल कर फिर सो गए.

शीला ने उन्हें जगाने की कोशिश की, मगर वे नहीं जागे. फिर शीला गुस्से में अपनी चादर में आ कर लेट गई, मगर नींद उस की आंखों से कोसों दूर जा चुकी थी.

सुबह जब सूरज ऊपर चढ़ चुका था, तब तक शीला सो कर नहीं उठी थी. उस की सास भी घबरा गईं. सब से ज्यादा घबराए रवि.

मां रवि के पास आ कर बोलीं, ''देख रवि, बहू अभी तक सो कर नहीं उठी. कहीं उस की तबीयत तो खराब नहीं हो गई?''

रवि बैडरूम की तरफ लपके. देखा कि शीला बेसुध सो रही थी. वे उसे झकझोरते हुए बोले, ''शीला उठो.''

''सोने दो न, क्यों परेशान करते हो?'' शीला नींद में ही बड़बड़ाई.

रवि को गुस्सा आ गया और उन्होंने पानी का एक गिलास भर कर उस के मुंह पर डाल दिया.शीला घबराते हुए उठी और गुस्से से बोली, ''सोने क्यों नहीं दिया मुझे? रातभर नींद नहीं आई. सुबह होते ही नींद आई और आप ने उठा दिया.''

''देखो कितनी सुबह हो गई?'' रवि चिल्ला कर बोले, तब आंखें मसल कर उठते हुए शीला बोली, ''खुद तो ऐसे सोते हो कि रात को उठाया तो भी न उठे और मुझे उठा दिया,'' इतना कह कर वह बाथरूम में घुस गई.यह एक रात की बात नहीं थी. तकरीबन हर रात की बात थी.मगर रवि में पहले जैसा खिंचाव क्यों नहीं रहा? या उस से उन का मन भर गया? ऐसा सुना भी है कि जिस मर्द का अपनी औरत से मन भर जाता है, फिर उस का खिंचाव दूसरी तरफ हो जाता है. कहीं रवि भी नहीं उन के रवि ऐसे नहीं हैं.

सुना है कि महल्ले के ही जमना प्रसाद की पत्नी माधुरी का चक्कर उन के ही पड़ोसी अरुण के साथ चल रहा है. यह बात पूरे महल्ले में फैल चुकी थी. जमना प्रसाद को भी पता थी, मगर वे चुप रहा करते थे.

रात का सन्नाटा पसर चुका था. रवि और शीला बिस्तर में थे. उन्होंने चादर ओढ़ रखी थी.रवि बोले, ''आज मुझे थोड़ी ठंड सी लग रही है.''

''मगर, इस ठंड में भी आप तो घोडे.बेच कर सोते रहते हो, मैं कितनी बार आप को जगाती हूं, फिर भी कहां जागते हो. ऐसे में कोई चोर भी घुस जाए तो पता नहीं चले. इतनी गहरी नींद क्यों आती है आप को?''

''अब बुढ़ापा आ रहा है शीला.''

''बुढ़ापा आ रहा है या मुझ से अब आप का मन भर गया है?''

''कैसी बात करती हो?''

''ठीक कहती हूं. आजकल आपको न जाने क्या हो गया,'' यह कहते हुए शीला की आंखों में वासना दिख रही थी. रवि जवाब न दे कर शीला का मुंह ताकते रहे. शीला बोली, ''ऐसे क्या देख रहे हो? कभी देखा नहीं है क्या?''

''अरे, जब से शादी हुई है, तब से देख रहा हूं. मगर आज मेरी शीला कुछ अलग ही दिख रही है,'' शरारत करते हुए रवि बोले.

''कैसी दिख रही हूं? मैं तो वैसी ही हूं, जैसी तुम ब्याह कर लाए थे,'' कह कर शीला ने ब्लाउज के बटन खोल दिए, ''हां, आप अब वैसे नहीं रहे, जैसे पहले थे.''

''क्यों भला मुझ में बदलाव कैसे आ गया?'' अचरज से रवि बोले.

''मेरा इशारा अब भी नहीं समझ रहे हो. कहीं ऐसा न हो कि मैं भी जमना प्रसाद की पत्नी माधुरी बन जाऊं.''

''अरे शीला, जमना प्रसाद तो ढीले हैं, मगर मैं नहीं हूं,'' कह कर रवि ने शीला को अपनी बांहों में भर कर उस के कई चुंबन ले लिए.

विलुप्त जीवों के जीवन के संकेत

विजय गर्ग

हम सभी इतने व्यस्त हो गए हैं कि प्रकृति प्रदत्त दुर्लभ जीव-जंतुओं और जैव विविधता की महत्ता को ही भूल गए हैं या फिर जानबूझ कर भुला देते हैं? मगर जब कभी कोई अजूबा जीव-जंतु जीवित दिखा है, तो हम पुराने किस्से-कहानियों को खंगालने लगते हैं। विशेषज्ञों की तरफ अचरज भरी निगाहों से देखते हैं। प्रायः ऐसे जीव दिख जाते हैं, जिन्हें हम विलुप्त मान बैठे होते हैं, लेकिन वास्तव में हैं नहीं जितना इनका मिलना विस्मयकारी है उतना ही विचारणीय भी कि वास्तव में ये दुर्लभ या मानव निर्मित कथित कृत्रिम विकास से डर कर जीवन बचाने के लिए बहुत दूर जा छिपे हैं। हम प्रकृति के उपकार को क्यों नहीं समझते ?

हाल ही में हिमाचल प्रदेश में उड़ने वाला एक जीव मिला। देश और दुनिया के वैज्ञानिक एवं जीव प्राणी विशेषज्ञ चकित रह गए। जिसे दुर्लभ प्रजाति और लगभग सात दशकों से विलुप्त मान कर 1994 से ही खोज ही बंद कर दी थी, वह अचानक जीता-जागता दिख जाए तो सबका अचरज में डूबना स्वाभाविक था। लाहौल-स्पीति में उड़ने वाली गिलहरी, जिसे 'यूपेटारस सिनेरेडस' कहते हैं, वह मानवीय गतिविधियों से मीलों दूर सुनसान इलाके में लगाए गए कैमरों में कैद हुई। यह अकस्मात ही था, क्योंकि वास्तव में सर्वेक्षण हिम तेंदुए का हो रहा था। वन विभाग ने इस क्षेत्र में वर्ष 2023 से बर्फानी तेंदुओं के सर्वेक्षण के लिए दुर्गम इलाकों में कैमरे लगा रखे थे, जिनमें दस अक्तूबर से चार दिसंबर 2024 के बीच हुई रिकार्डिंग को खंगालने के दौरान ऊनी गिलहरी की तस्वीरें कैद हुई।

दरअसल, वहां 'नेचर कंजरवेशन फाउंडेशन' मैसूर द्वारा पिछले 15 वर्षों से शीत रेगिस्तान में दुर्लभ वन्य जीवों की खोज की जा रही थी। वास्तव में हिम तेंदुओं की जानकारी जुटाई जा रही थी, लेकिन अन्य और विलुप्त समझे जाने वाले कुछ वन्यजीवों के अस्तित्व में होने का सच भी सामने आ गया। शीत रेगिस्तानों की जटिल और विकट भौगोलिक परिस्थितियां होती हैं। इससे वन्य प्राणियों उपस्थिति का वास्तविक समय, स्थान और पता करना आसान नहीं होता। शायद इसी वजह से इन्हें खोज न पाने की स्थिति में बहुत ही आसानी से दुर्लभ या विलुप्तप्रायः की श्रेणी में डाल दिया जाता है। जबकि वास्तविकता इसके अलग भी हो सकती है।

हिमाचल की दुर्गम वादियों में एसपीएआइ यानी 'स्नो लेपर्ड पापुलेशन असेसमेंट इन इंडिया योजना' तहत मियार घाटी के अति दुर्गम क्षेत्रों 62 कैमरे लगाना वन विभाग और सरकारी तंत्र के लिए आसान नहीं लेकिन वहां के युवाओं के जोश ने इस बेहद कठिन और चुनौतीपूर्ण काम को कर दिखाया। इस तरह वहां लगे कैमरों से हिम तेंदुओं के सर्वेक्षण के लिए तैनात दल को लाल लोमड़ी, हिमालयी

भेड़िए और पहाड़ी नेवले भी दिखे। ये सभी प्राणी बर्फीले चट्टानी इलाकों और वहां के खुले मैदानों में थे।.. इतना तो कहा जा सकता है कि प्रकृति ने अभी अपना संतुलन काफी हद तक बनाए रखा है। जिसे हम विलुप्त समझ बैठे थे, वे मौजूद हैं।

लाहौल-स्पीति जिले में ही लगभग छह वर्ष पहले 'वैक्सविंग' नामक ऐसा दुर्लभ पक्षी मिला था जो वहां पहले कभी नहीं देखा गया। निश्चित रूप से हमने प्रकृति के विरुद्ध कितनी भी विपरीत परिस्थितियां क्यों नहीं निर्मित कर दीं, लेकिन उसने अपने अनमोल रत्नों को कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में बचा कर रखा है। इनका मिलना बताता है कि मनुष्यों के प्रकृति विरुद्ध कृत्यों से डर कर ऐसे प्राणी कहीं दूर अपनी सुरक्षा ढूंढ़ते हुए धरती के उस आंचल में चले जाते हैं, जहां उन्हें पता होता है कि अभी इंसानों की या तो पहुंच नहीं हुई है या पहुंचना दुरूह है। हमारे लिए सुखद यह है कि अभी भी ऐसे क्षेत्र सुरक्षित बचे हुए हैं, जहां विलुप्त मान बैठे जीव-जंतु मिल रहे हैं।

विलुप्त श्रेणी में डाले गए दुर्लभ प्रजातियों के प्राणियों के मिलने से इतना तो साफ हो गया है कि पहाड़ों पर बर्फीले, रेगिस्तानी चट्टानों और ढलानों वाले पारिस्थितिकी तंत्र में इनकी मौजूदगी अब भी है और वैज्ञानिक तथा वनस्पति-प्राणी शास्त्र के विशेषज्ञों को अपनी राय बदलनी होगी। साफ पता चलता है कि मियार घाटी न केवल जैविक विविधता वरन हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की दृष्टि से अब भी कितना समृद्ध है। पर्यावरण विरोधी माहौल में ऐसे जीव जंतुओं की मौजूदगी किसी बड़ी उपलब्धि से कम नहीं इनका मिलना एक इशारा है कि अब भी ज्यादा कुछ बिगड़ा नहीं है। लगता नहीं कि हम सबको जैव विविधता के बारे में और भी गहराई से जानने-समझने की जरूरत है। वास्तव में यही वह तंत्र है, जिससे पृथ्वी पर जीवन है।

जैव विविधता आनुवंशिकी, प्रजाति, पारिस्थितिकी तंत्र और कामकाज की विविधता जैसे चार हिस्सों में बांटी गई है। इन पर मंडरा रहे खतरों से सभी के स्वास्थ्य और कल्याण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वन्यजीवों को बचाने वाली महत्त्वपूर्ण रपट इन पर आसन्न खतरों को भांपते हुए निपटने के तात्कालिक कदम उठाने के लिए सचेत कर बताती हैं कि अब भी लापरवाह रहे, तो कुछ ही दशकों में दुनिया भर में कई प्रजातियां लुप्त होंगी।

अमेरिका का ही संदर्भ लें, जिस पर आई चौंकाने वाली एक सच्चाई बेहद डरावनी है। वर्ष 1970 के बाद से उत्तरी अमेरिका से लाखों पक्षी म हो गए। । वहीं 40 वर्षों में अमेरिका में भृंगों यानी कीटों के सबसे बड़े समूह की संख्या 183 फीसद की कमी आई है। यह भी हैरान करने वाला है कि अमेरिका का 41 फीसद पारिस्थितिकी तंत्र पहले से जोखिम में हैं। समझा जा सकता कि शेष दुनिया की क्या स्थिति होगी, जिसका कोई व्यापक आंकड़ा या शोध नहीं है। वर्ष 2020 में विश्व आर्थिक मंच ने पाया था कि जैव विविधता में लगातार हो रहा नुकसान वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए शीर्ष खतरों में से एक है। अब हमें तत्काल इसके संरक्षण के प्रयासों को बढ़ाना होगा।

बिगड़ते पर्यावरण और प्राकृतिक आपदाओं के रौद्र रूप से पर्यावरणीय और पारिस्थितिकी तंत्र की क्षति के संकेत मिलते हैं, तो विलुप्त मान बैठे जीव-जंतुओं के मिलने से सुखद संदेश भी इन्हें समझने की जरूरत है। वरना जो हाल हमने अपने गांव-शहर में जल, जंगल और जमीन के साथ किया, वही यहां भी शुरू हो जाएगा तो प्रकृति की बची-खुची और एक तरह से चोरी-छिपे बचाई हुई अमानत भी वाकई विलुप्त हो जाएगी।

माइक्रोप्लास्टिक मेनेस

विजय गर्ग

जैसा कि दुनिया वैश्विक प्लास्टिक संधि को अंतिम रूप देने की ओर बढ़ती है, माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण को कम करना एक तत्काल प्राथमिकता बन गई है, जिसमें नियमों, नवीन प्रौद्योगिकियों और वैश्विक सहयोग से जुड़े बहु-आयामी दृष्टिकोण की मांग की गई है।

माइक्रोप्लास्टिक और उनके वर्गीकरण क्या हैं

परिभाषाः प्लास्टिक व्यास में 5 मिमी से कम, विखंडन के माध्यम से गठित या जानबूझकर विशिष्ट उपयोगों के लिए निर्मित। वर्गीकरणः प्राथमिक माइक्रोप्लास्टिकः वाणिज्यिक उपयोग के लिए निर्मित, जैसे सौंदर्य प्रसाधन, प्लास्टिक छर्रों और सिंथेटिक फाइबर में माइक्रोबीड्स। माध्यमिक माइक्रोप्लास्टिकः सौर विकिरण, महासागर तरंगों और यांत्रिक बलों के कारण बड़े प्लास्टिक, जैसे पानी की बोतलों के टूटने से तैयार किया गया। माइक्रोप्लास्टिक्स के अनुप्रयोग

चिकित्सा और औषधिः प्रभावी ढंग से रसायनों को अवशोषित करने और छोड़ने की उनकी क्षमता के कारण दवा वितरण प्रणालियों में उपयोग किया जाता है। औद्योगिकः एयर-ब्लास्टिंग तकनीक में और सिंथेटिक वस्त्रों के उत्पादन में उपयोग किया जाता है। पर्सनल केयर उत्पादः चेहरे के स्क्रब, टूथपेस्ट और अन्य सौंदर्य प्रसाधनों जैसे एक्सफ़ोलीएटिंग एजेंटों में पाया जाता है। माइक्रोप्लास्टिक के प्रभावः

पर्यावरण परः मृदा उन्नयनः मिट्टी की गुणवत्ता को कम करता है, रासायनिक गुणों को बदल देता है, और पानी के प्रतिधारण और पोषक तत्वों के चक्र को बाधित करता है। जलीय प्रदूषणः समुद्री जीवों में जैव संचय होता है और जल निकायों में विषाक्त रासायनिक लीचिंग में योगदान देता है।

पुस्तकें भविष्य निर्माण का औजार हैं

विजय गर्ग

आज के डिजिटल युग में, जब सोशल मीडिया, मोबाइल एप्स और त्वरित सूचना के स्रोत हमारे चारों ओर फैले हुए हैं, ऐसे समय में किताबों की प्रासंगिकता और उनके महत्व को नए सिरे से समझना पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है। 23 अप्रैल को मनाया जाने वाला 'विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस' न केवल पुस्तकों के महत्व की याद दिलाता है, बल्कि यह दिन हमें यह सोचने को भी विवश करता है कि पुस्तकें क्यों हमारे जीवन का अविभाज्य हिस्सा बनी रहनी चाहिए। पुस्तकों का संसार एक ऐसा अद्भुत संसार है, जो न केवल ज्ञान देता है, बल्कि भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं को भी नई रोशनी प्रदान करता है।

यूनेस्को द्वारा 1995 में शुरू किया गया यह दिवस लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों को एक साझे मंच पर लाकर पुस्तकों के संरक्षण और उनके प्रचार-प्रसार की दिशा में वैश्विक प्रतिबद्धता को दर्शाता है। दरअसल, यह दिन विश्वप्रसिद्ध साहित्यकार विलियम शेक्सपियर, मिगुएल दे सर्वांतेस तथा स्पेनी लेखक इंका गार्सिलासो दे ला वेगा की पुण्यतिथि का प्रतीक है। यह दिन इस विचार से जुड़ा है कि पुस्तकें किसी देश अथवा भाषा तक सीमित न रहकर विश्व सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा होती हैं। आज जब सूचना के स्रोतों की भरमार है, तब पुस्तक पढ़ने की संस्कृति तेजी से क्षीण होती जा रही है। बच्चों से लेकर युवाओं और वयस्कों तक, हर कोई डिजिटल उपकरणों से इतना जुड़ गया है कि पुस्तकों को समय देना अब एक 'पुरानी आदत' मानी जाने लगी है।

विश्व पुस्तक दिवस का उद्देश्य लोगों में पुस्तकों के प्रति लगाव बढ़ाना, लेखकों और प्रकाशकों को वैश्विक सम्मान देना, कॉपीराइट जैसे संवेदनशील विषयों पर जागरूकता फैलाना और पढ़ने की आदत को जीवन का हिस्सा बनाना है।

यह सर्वविदित है कि पढ़ना न केवल ज्ञानार्जन का माध्यम है, बल्कि यह ध्यान केंद्रित करने, सोचने की क्षमता बढ़ाने, कल्पनाशीलता को विकसित करने और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को सुदृढ़ करने में भी सहायक है। जब हम किसी पुस्तक के पन्ने पलटते हैं, तो हमारा मस्तिष्क लेखक की कल्पनाओं में प्रवेश करता है, चरित्रों से जुड़ता है और किसी कथा को गहराई से

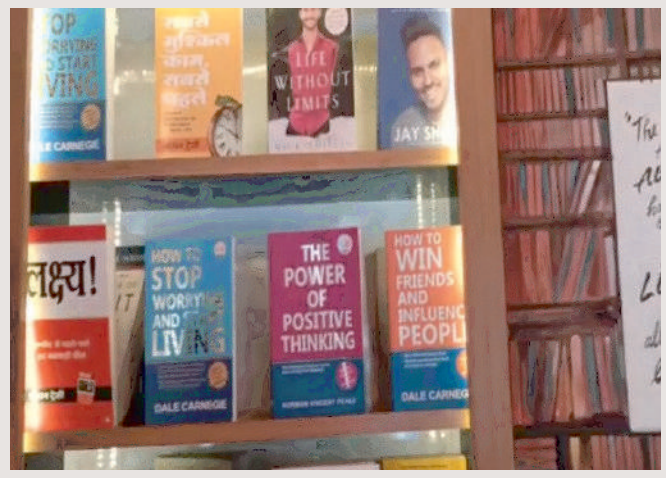

समझने का प्रयास करता है। यह प्रक्रिया मस्तिष्क की उन क्षमताओं को विकसित करती है, जो यंत्रवत सूचना को केवल ग्रहण करने से नहीं हो सकतीं।

इस विषय में विभिन्न न्यूरो-साइकोलॉजिकल शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि नियमित रूप से पुस्तक पढ़ने वाले बच्चों की स्मरण-शक्ति, संज्ञानात्मक कौशल और भाषा दक्षता, उन बच्चों की तुलना में कहीं बेहतर होती है, जो अधिकांश समय स्क्रीन पर बिताते हैं।

भारत में पुस्तक संस्कृति के गिरते ग्राफ को लेकर सबसे बड़ी चिंता यह है कि देश की बहुसंख्यक युवा आबादी की पढ़ने की आदत तेजी से घट रही है। अध्ययन बताते हैं कि औसतन एक भारतीय प्रति वर्ष केवल दो या तीन किताबें ही पढ़ता है। यह संख्या विकसित देशों की तुलना में काफी कम है।

हालांकि, भारत में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास और केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय जैसे संस्थान नियमित रूप से पुस्तक मेलों का आयोजन करते हैं। प्रश्न यह है कि क्या यह आयोजन आम जनमानस के भीतर पुस्तकों के प्रति दीर्घकालिक लगाव उत्पन्न कर पाता है?

एनबीटी की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में बाल साहित्य की बाजार हिस्सेदारी लगभग 26 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है, लेकिन इस साहित्य का ग्रामीण क्षेत्रों और सरकारी स्कूलों में व्यापक प्रसार अब भी सीमित है। बच्चों को बाल साहित्य तक पहुंचाने के लिए स्कूलों और सार्वजनिक पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। 'यू डायस प्लस 2022-23' रिपोर्ट के अनुसार, भारत के सरकारी और निजी स्कूलों के पुस्तकालयों में प्रति छात्र औसतन 3.8 पुस्तकें उपलब्ध हैं। आज जब देश शिक्षा के डिजिटलीकरण की दिशा में तेजी से अग्रसर है, तो यह और अधिक आवश्यक हो जाता है कि हम बच्चों को केवल स्क्रीन पर आश्रित न करें, बल्कि उन्हें संतुलित रूप से डिजिटल और मुद्रित सामग्री के संपर्क में लाएं। वहीं स्कूली पाठ्यक्रमों में रोचक और प्रेरणादायक साहित्य को समाविष्ट करने, स्थानीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण बाल साहित्य प्रकाशित करने और पुस्तकालयों को नवाचार केंद्र बनाने की आवश्यकता है। कॉपीराइट का मुद्दा भी इस दिवस का एक अहम पक्ष है। डिजिटल माध्यमों पर तेजी से हो रही साहित्यिक चोरी और मूल रचनाओं के अनधिकृत उपयोग ने लेखकों और प्रकाशकों को गंभीर संकट में डाल दिया है।

निःसंदेह, पुस्तकें किसी भी समाज की संवेदनशीलता, उसकी सोच, उसकी परंपराओं और उसकी आत्मा की संवाहक होती हैं। वे हमारे विचारों को दिशा देती हैं, नैतिकता की ओर प्रेरित करती हैं और आत्ममंथन की प्रक्रिया को जीवंत बनाए रखती हैं। आज आवश्यकता है कि हम व्यक्तिगत स्तर पर पढ़ने की आदत को पुनर्जीवित करें। बच्चों के साथ मिलकर पुस्तकें पढ़ना, स्कूली शिक्षा में पुस्तकालय पीरियड को अनिवार्य बनाना, सामुदायिक पुस्तकालयों को पुनर्जीवित करना, बुक क्लबों का गठन करना और पुस्तकों को उपहार स्वरूप देना— ये कुछ ठोस उपाय हैं जो पुस्तक-संस्कृति को पुनः जीवंत कर सकते हैं। पुस्तकें भविष्य निर्माण का औजार हैं। वे हमें हमारी जड़ों से जोड़ती हैं और हमें वह दृष्टि देती हैं, जो एक उत्तरदायी नागरिक के रूप में आवश्यक है।

इंटर्नशिप का महत्व

विजय गर्ग

इंटर्नशिप का मतलब है अपनी पढ़ाई करते समय प्रशिक्षण और अनुभव प्राप्त करें। इंटर्नशिप 'ऑन-जॉब ट्रेनिंग' है, जहां जो उम्मीदवार अपने स्नातक स्तर की पढ़ाई कर रहे हैं या जिन्होंने अभी-अभी स्नातक की पढ़ाई पूरी की है, उन्हें वास्तविक कार्य वातावरण में व्यावहारिक कार्य सीखने को मिलता है। इंटर्नशिप आम तौर पर वह अवधि होती है जब आपका स्नातक समाप्त होने वाला होता है; अंतिम सेमेस्टर या पिछले वर्ष में आप एक संगठन में एक प्रशिक्षु के रूप में काम करेंगे जो आपकी कार्य स्ट्रीम से संबंधित है। इंटर्नशिप दोनों हैं; भुगतान किया और अवैतनिक; यह उस संगठन पर निर्भर करता है जिसमें आप इंटर्न के रूप में जा रहे हैं। यह एक अस्थायी नौकरी की तरह है, कार्यकाल आम तौर पर 6 से 12 महीनों के बीच कम होता है। जैसा कि आपके अध्ययन के मानदंडों को पूरा करने के लिए व्यावहारिक कार्य बहुत महत्वपूर्ण है, इस अवधि में हमने सीखा कि अपने सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक तरीके से कैसे लागू किया जाए, हमारे स्नातक की अवधि में हमने जो कुछ भी अध्ययन किया है, उसे यहां लागू किया जा सकता है। पढ़ाई में अच्छे ग्रेड प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है; आपको किसी संगठन या कंपनी में प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने के लिए उचित व्यावहारिक ज्ञान की भी आवश्यकता होगी। इंटर्नशिप हर उम्मीदवार के पेशेवर जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है; आगामी पैराग्राफ में, हम चर्चा करेंगे कि करियर के लिए इंटर्नशिप कैसे महत्वपूर्ण है।

ऐसे कई कारक हैं जो बताते हैं कि इंटर्नशिप एक पेशेवर कैरियर के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और यह उन उम्मीदवारों के पेशेवर कौशल को पोषण देने में कैसे मदद करता है जो अपना करियर शुरू करने जा रहे हैं। आने वाले पैराग्राफ में इंटर्नशिप की कुछ प्रमुख महत्वपूर्ण विशेषताओं पर चर्चा की जाती है।

अनुभवः

एक व्यावहारिक कार्य अनुभव प्राप्त करना कैरियर के विकास और अच्छे स्टार्टअप के लिए आवश्यक है। इंटर्नशिप शुरुआती लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्हें व्यावहारिक काम का शून्य ज्ञान है और अधिकांश कर्मचारी संबंधित क्षेत्र में कम से कम 6 महीने के अनुभव वाले अनुभव उम्मीदवारों को पसंद करते हैं, इसलिए इंटर्नशिप प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित करती है और उन्हें आवश्यक कार्य अनुभव देती है। इस कार्य अनुभव के साथ, वे आसानी से अपने सम्मानित कार्य क्षेत्रों को रोजगार प्राप्त करेंगे। यहां तक कि अगर आपकी इंटर्नशिप अवैतनिक है, तो आप अनुभव और कौशल अर्जित कर रहे हैं जो आपके कार्य क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण हैं और आप स्नातक होने के दौरान ये सब कमा रहे हैं, इसलिए यह इंटर्नशिप का बड़ा लाभ है। यदि आप अपनी इंटर्नशिप के प्रति ईमानदार हैं, तो यह आपके आने वाले समय में आपके लिए फलदायी होगा। आप यह भी सीखते हैं कि पेशेवर वातावरण में कैसे काम करें और अपने नियमित कार्य जीवन को बनाए रखने की क्षमता प्राप्त करें। क्योंकि शुरुआत में, छात्रों के लिए पेशेवर वातावरण में काम करना और कार्यस्थल में पेशेवर की तरह व्यवहार करना और कार्य करना बहुत मुश्किल है।

खुद का अन्वेषण करें:

अनुभव केवल एक चीज है जो हमें आकार देती है और हमें विभिन्न वातावरणों के लिए आदर्श बनाती है। लोग अपने अनुभवों से सीख सकते हैं और खुद को ठीक कर सकते हैं। स्टार्टर के रूप में, आप अपने कार्यस्थल पर विभिन्न गलतियाँ करेंगे और वास्तविक कार्य दुनिया के बारे में जानेंगे। जब आप प्रशिक्षु के रूप में काम करते हैं तो आप खुद का पता लगा सकते हैं। आपको अपनी ताकत और खामियों के बारे में पता चल जाएगा। कभी-कभी, हम अपनी क्षमताओं और शक्तियों के बारे में नहीं जानते हैं, हमें लगता है कि हम दी गई जिम्मेदारियों को करने में सक्षम नहीं हैं। आप पूर्णकालिक नौकरी जिम्मेदारियों के बिना खुद का पता लगा सकते हैं। इसके अलावा, हमें अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों के बारे में पता चल जाएगा, आप इंटर्नशिप के समय यह तय कर सकते हैं कि आप इस कार्य क्षेत्र को जारी रखना चाहते हैं या आप कुछ और करना चाहते हैं, यह आपके लिए एक परीक्षण विकल्प की तरह है। अगर आपको लगता है कि आप इस नौकरी के लिए उपयुक्त हैं तो आप अपना कीमती समय बर्बाद किए बिना भी कुछ और कोशिश कर सकते हैं। इसके अलावा, आप कई इंटर्नशिप की कोशिश कर सकते हैं जब तक कि आपको अपना सर्वश्रेष्ठ कैरियर पथ नहीं मिलेगा जिसमें आप अपना करियर जारी रखना चाहते हैं। क्योंकि किसी क्षेत्र का अध्ययन करना और उस क्षेत्र में काम करना दो अलग-अलग चीजें हैं, अक्सर ऐसा होता है कि आप पाएंगे कि आपका करियर क्षेत्र उबाऊ है और आप अपने काम का आनंद नहीं ले रहे हैं, इसलिए उस समय आप अपना समय ले सकते हैं और अन्य संभावित विकल्पों के बारे में सोच सकते हैं।

तकनीकी और गैर-तकनीकी बुनियादी बातों की समझ जो नौकरी के लिए अपेक्षित हैं और साथ ही यह भी बताती है कि आपके पास व्यावहारिक कार्य में पाठ्यक्रम के अपने सैद्धांतिक ज्ञान को लागू करने की क्षमता है। एक ठोस फिर से शुरू हमेशा आपको साक्षात्कार के मौके हासिल करने में मदद करता है। इसलिए, यदि आप नवसिखुआ हैं और नौकरी के लिए आवेदन करने जा रहे हैं तो अपने फिर से शुरू में अपनी इंटर्नशिप अवधि में प्रवेश करना होगा यह आपको बहुत मदद करेगा और चयन की दर को बढ़ाएगा क्योंकि प्रत्येक नियोक्ता अपने संगठन के लिए कुछ अनुभव और गुणों के साथ उम्मीदवार चाहता है। तो, इस तरह एक इंटर्नशिप एक अच्छा सीवी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आत्मविश्वास बनाता हैः

आपके काम के प्रति आपका आत्मविश्वास स्तर अपने आप बन जाएगा, यह इंटर्नशिप के मुख्य लाभों में से एक है। जब आप अपने हाथों से अपने फील्डवर्क का अभ्यास करते हैं और आपके काम से संबंधित सभी संदेह खत्म हो जाएंगे तो आप अपने काम के बारे में आत्मविश्वास महसूस करेंगे। आप आत्मविश्वास से किसी भी साक्षात्कार का सामना करेंगे और नियोक्ता को व्यावहारिक कार्य के बारे में अपनी बुद्धि और ज्ञान के साथ काम करने के लिए मनाएंगे। यह स्वाभाविक है कि जब आप अपने काम के क्षेत्र को विशेषज्ञता देते हैं तो आप अपने काम और अपने क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों के बारे में सुनिश्चित महसूस करेंगे। आपको लगने लगेगा कि आप अपने संगठन में योगदान देने में सक्षम हैं जो काफी सच है। ये सभी कारक आपके आत्मविश्वास के स्तर को बढ़ावा देते हैं। जब आप साक्षात्कार हॉल में प्रवेश करते हैं तो आप खुद पर और अपने ज्ञान पर भरोसा करते हैं और एक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ समाप्त होते हैं जो हमेशा फलदायी परिणाम देता है। इसलिए, एक अच्छी इंटर्नशिप का आपके आत्मविश्वास के स्तर पर बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

ये इंटर्नशिप के कुछ प्रमुख लाभ हैं। इंटर्नशिप उन संभावित उपकरणों में से एक है जो आपके बौद्धिक को बढ़ाते हैं और आपको कार्य कौशल प्रदान करते हैं, नौकरी आवेदक के रूप में आपकी चयन दर में भी सुधार करते हैं। उपरोक्त बिंदु सही ठहराते हैं कि आपके करियर के विकास के लिए अभ्यास करना महत्वपूर्ण है। यदि आप एक फ्रेशर हैं, तो आपको अनुभव, ज्ञान और अन्य उपयोगी कौशल प्राप्त करने के लिए एक इंटर्न के रूप में काम करना चाहिए, चाहे वह भुगतान किया गया हो या अवैतनिक।

विकास बनाम विनाश: कंक्रीट की चादर के नीचे दबती प्रकृति

जब गर्मी की लपटें चेहरों को झुलसाती हैं और धरती की सांसें थमने लगती हैं, तब हमारे मन में जल और हरियाली की तड़प जागती है। अखबारों की सुर्खियां चीखती हैं, टीवी पर बहसें गूंजती हैं, और सोशल मीडिया 'जल बचाओ, पेड़ लगाओ' के नारों से भर जाता है। मगर यह जागरूकता का जोश क्यों बारिश की पहली फुहार के साथ ही ठंडा पड़ जाता है? क्या विडंबना है कि हम शास्त्रों में प्रकृति की महिमा पढ़ते हैं, दादी-नानी की कहानियों में जल के गीत सुनते हैं, फिर भी उसी धरती को बंजर और जल को बर्बाद करने की भूल करते हैं! हमारी यह लापरवाही आज हमारी धरती, हमारे जलस्रोत, और हमारी भावी पीढ़ियों को भारी पड़ रही है। अब समय केवल शब्दों के जादू का नहीं, बल्कि सच्चे संकल्प और ठोस कदमों का है। क्योंकि जल और हरियाली सिर्फ जीवन की नींव नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता की धड़कन हैं।

जब हम 'विकास' का शोर मचाते हैं, तो हमारी नजरें चमकते हाइवे, दौड़ती मेट्रो, और आसमान छूती इमारतों पर टिक जाती हैं। मगर क्या यही विकास का असली चेहरा है? क्या विकास का मतलब केवल कंक्रीट के जंगल खड़े करना है, या इसमें हर नागरिक की बुनियादी जरूरतें—शुद्ध जल, स्वच्छ हवा, और हरी-भरी धरती—शामिल हैं? सच्चाई कांटों-सी चुभती है। आज भी भारत में करोड़ों लोग शुद्ध पेयजल को तरसते हैं। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (एनएफएचएस-5, 2019-21) की रिपोर्ट चीख-चीखकर बताती है कि 15% से ज्यादा ग्रामीण परिवारों के घरों में नल का पानी नहीं पहुंचता। ग्रामीण भारत में माएं-बहनें और बच्चे, सिर पर घड़े लादे, तपती धूप में मीलों पैदल चलते हैं, सिर्फ एक घूंट पानी के लिए। क्या यह दर्दनाक मंजर हमारे विकास के दावों को बेनकाब नहीं करता?

देश के कई हिस्से – राजस्थान का थार, महाराष्ट्र का मराठवाडा, उत्तर प्रदेश का बुंदेलखंड, और तेलंगाना के सूखे इलाके – साल के बारह महीने जल संकट से जूझते हैं। गर्मियों में यह संकट और भयावह हो जाता है, जब तालाब सूख जाते हैं, कुएं जवाब दे जाते हैं, और भूजल स्तर खतरनाक रूप से नीचे चला जाता है। सेंट्रल ग्राउंड वाटर बोर्ड (सीजीडब्ल्यूबी) की 2023 की रिपोर्ट दिल दहलाने वाली सच्चाई बयान करती है: भारत के 17% ब्लॉकों में भूजल स्तर 'अति-शोषित' स्तर पर है, और 14% ब्लॉक 'क्रिटिकल' श्रेणी में हैं। यह आंकड़े सिर्फ कागजी नहीं, बल्कि उस हकीकत के गवाह हैं, जो हमें झकझोरकर पूछती है—हम अपनी माटी, अपनी धरती मां के साथ ऐसा बेरहम सलूक क्यों कर रहे हैं?

जल संकट का हल न तो सिर्फ सरकारी फाइलों में दबा है, न ही बड़ी-बड़ी नीतियों के शोर में छिपा है। जल जीवन मिशन ने भले ही 2024 तक 12 करोड़ से ज्यादा ग्रामीण परिवारों के घरों में नल पहुंचाए हों, मगर यह कोशिश तब तक अधूरी है, जब तक समाज का हर इंसान इस जिम्मेदारी को दिल से न अपनाए। पानी को महज एक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का अमृत समझने की जरूरत है। यह क्रांति तभी आएगी, जब हम अपनी रोजमर्रा की आदतों में सुधार करेंगे – नल खुला न छोड़ें, बर्तन धोते समय पानी बर्बाद न करें, और घरों में रेनवाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को अनिवार्य समझें। छोटे-छोटे कदम, जैसे नहाते समय बाल्टी का इस्तेमाल या बगीचों में ड्रिप इरिगेशन, बड़े बदलाव की नींव रख सकते हैं।

पौधारोपण जल संकट का एक जीवंत हल है। पेड़ न केवल ऑक्सीजन की सौगात देते हैं, बल्कि मिट्टी की नमी को थामे रखते हैं, भूजल को पोषित करते हैं, और धरती की सांसों को स्थिर रखते हैं। भारतीय वन सर्वेक्षण (एफएसआई) की 2021 की रिपोर्ट बताती है कि भारत का वन क्षेत्र पिछले दशक में बढ़ा है, मगर शहरों में हरियाली पर कंक्रीट का कहर टूट रहा है। तालाब, झीलें, और बावड़ियां शहरों के लालच में निगल ली गई हैं। चेन्नई का 2019 का जल संकट, जब शहर के चार प्रमुख जलाशय रेगिस्तान बन गए, हमें चीख-चीखकर चेतावनी देता है—प्रकृति से छेड़छाड़ की कीमत पूरी सभ्यता चुकाती है। बेंगलुरु, दिल्ली, और हैदराबाद जैसे शहरों में भूजल का तेजी से रसातल में जाना भी इसी दर्दनाक कहानी का हिस्सा है।

हमारी संस्कृति में जल और हरियाली पूजनीय हैं—ये जीवन के आधार ही नहीं, हमारी आत्मा का हिस्सा हैं। हमारे पूर्वजों ने बावड़ियों को तराशा, तालाबों को आकार दिया, और पेड़ों में देवत्व देखा। यह महज आस्था नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ उनकी गहरी दोस्ती थी। मगर आज हमने उन तालाबों को कचरे का अड्डा बना डाला, बावड़ियों को इतिहास की धूल में दफन कर दिया, और पेड़ों की जगह कंक्रीट के ढांचे खड़े कर दिए। अगर अब भी नहीं जागे, तो आने वाला कल और डरावना होगा। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हाइड्रोलॉजी की एक स्टडी चेतावनी देती है कि 2050 तक भारत के कई हिस्सों में भूजल की आखिरी बूंद भी सूख सकती है, अगर हमने अभी इसका लुटेरा शोषण नहीं रोका।

असली विकास तब है, जब हर सांस को शुद्ध हवा, हर प्यास को स्वच्छ जल, और हर नजर को हरियाली नसीब हो। जिस दिन गांवों की माएं-बहनें सिर पर पानी के घड़े लादकर मीलों न चलें, जिस दिन बच्चे स्कूलों में जल संरक्षण और पौधारोपण को किताबों की पंक्तियों से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से जीएं, और जिस दिन हर नागरिक एक पेड़ लगाने को अपने दिल की पुकार समझे—वही सच्चे विकास का सूरज उगेगा। हमें यह अहसास होना होगा कि जल और हरियाली की हिफाजत किसी एक मौसम या एक दिन का जश्न नहीं, बल्कि हर पल, हर दिन की जिंदगी बननी चाहिए।

आज वक्त है एक ऐसे आंदोलन का, जो नारों की गूंज में न थमे, बल्कि धरती की सूरत बदले। यह आंदोलन हमारे घरों की देहरी से शुरू होगा—एक बूंद पानी बचाकर, एक पौधा लगाकर, और अपने बच्चों के दिलों में प्रकृति का प्यार बोकर। स्कूलों में पर्यावरण शिक्षा को किताबों से निकालकर जिंदगी का सबक बनाना, गांव-शहर मिलकर तालाबों-कुओं को नया जीवन देना, और शहरी योजनाओं में हरियाली को दिल से अपनाना—ये कदम क्रांति की मशाल जलाएंगे। साथ ही, हमें अपनी जड़ों की ओर लौटना होगा— उन तालाबों को पुनर्जनन देना होगा, उन बावड़ियों में जीवन की धारा बहानी होगी, और पौधारोपण को महज रस्म नहीं, बल्कि सांसों का हिस्सा बनाना होगा।

अब वक्त आ गया है कि जल और हरियाली को महज बहस का मुद्दा नहीं, बल्कि अपने जीवन का धर्म बनाएं। जल और जीवन एक-दूसरे की धड़कन हैं—एक के बिना दूसरा सांस नहीं ले सकता। यह लड़ाई सिर्फ पर्यावरण की नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता को जिंदा रखने की जंग है। अगर आज हम नहीं जागे, तो कल की पीढ़ियां हमें कभी माफ नहीं करेंगी। इस गर्मी को सिर्फ तपिश का मौसम नहीं, बल्कि एक नए युग का आगाज बनाएं—जहां धरती हरी-भरी मुस्कुराए, जल हर प्यास को गले लगाए, और जीवन आनंद से खिलखिलाए। यह हमारा संकल्प हो, न सिर्फ अपने लिए, बल्कि उस मां-धरती के लिए, जिसने हमें अपनी गोद में सब कुछ सौंपा। हर बूंद और हर पत्ती के साथ एक नया कल रचें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

अब पहलगाम आतंकी हमले की 'टाइमिंग' से उठ रहे कई सवाल?

कमलेश पांडेय

आखिर पहलगाम आतंकी हमले की 'टाइमिंग' पर गौर कीजिए। सीधा सवाल है कि जब भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार (22 अप्रैल, 2025) को ही सऊदी अरब के जेद्दाह पहुँचे थे, जहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ। उस दिन उनके एयरक्राफ्ट को एस्कॉर्ट करने के लिए सऊदी अरब ने अपने जेट्स भेजे जो अपने-आप में पीएम मोदी के प्रति खाड़ी मुल्क़ों के सम्मान को दिखाता है। वहीं जेद्दाह का एक वीडियो भी सामने आया जिसमें एक शेख 'राजी' (2018) फिल्म का गाना 'ऐ वतन, वतन मेरे आबाद रहे तू' गाना गाते हुए दिखा। तब तमाम मुस्लिम शख्स भी पीएम मोदी के सामने इसे गुनगुनाते हुए दिखे।

लेकिन तभी अचानक से, ऐसी चौंकाऊ खबर! पहलगाम आतंकी हमला, 26 पर्यटकों की मौत, से मोदी हिल गए क्योंकि चीनी पिल्ले पाकिस्तान की शह पर हुई एक और नापाक हरकत थी यह। वैसे तो जब भारत सरकार पूर्वी पाकिस्तान यानी बंगलादेश में हुए तख्तापलट और फिर हिन्दुओं के उत्पीडन पर तत्काल सैन्य कार्रवाई करने के बजाय खामोश हो गई तो यह तभी तय हो गया था कि भारत सरकार ने अपनी कमजोरी जाहिर कर दी है और अब फिर से कश्मीर भी सुलगेगा। ऐसा इसलिए कि हमारे विदेश मंत्री एस जयशंकर चीन से डरते हैं, हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बंगलादेश के खिलाफ सीधी कार्रवाई से बचते हैं और पाकिस्तान को दो टूक सबक सिखाने से भयभीत रहते हैं! लिहाजा पाकिस्तान-पूर्वी पाकिस्तान यानी बंगलादेश के सैन्य व राजनीतिक हुक्मरानों का मन बढ़ना ही था। पाकिस्तानी जनरल मुनीर के बयान और बंगलादेशी यूसुफ के मिजाज से भी इस बात की तस्दीक होती है लेकिन भारत द्वारा स्पष्ट पलटवार करने की जगह कूटनीतिक हमले यानी विधवा विलाप!

सवाल यह भी है कि अमेरिका के उप-राष्ट्रपति जे डी वेंस जब जयपुर के दौरे पर थे, जहाँ वो पत्नी और बच्चों समेत आमेर के किले में घूमे, वहीं 1 दिन पहले ही उनकी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ बेहद ही सौहार्दपूर्ण माहौल में बैठक हुई थी। तब इस घटना को जानबूझकर अंजाम दिया गया। वहीं याद कीजिए, फरवरी 2020 के अंत में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प जब दिल्ली आए थे, तब दिल्ली में रणनीतिक पूर्वक दंगा किया गया था। तब शाहीन बाग़ सज़ा हुआ था पड़ोसी मुल्क़ों के पीड़ति हिन्दुओं को नागरिकता देने वाले क़ानून सीएए के विरुद्ध। इसलिए अब अमेरिकी उप-राष्ट्रपति के दौरे के दौरान ये सब होना स्पष्ट करता है कि चीनी शह पर पाकिस्तान यह सबकुछ करता रहता है ताकि अमेरिका, भारत के करीब आने से भयभीत हो। कहने का तात्पर्य यह कि भीतर के दंगाइयों और कश्मीर के आतंकियों की विचारधारा को अलग-अलग करके मत देखिए क्योंकि इनके भीतर भी गहरा कनेक्शन है।

सवाल है कि जब केंद्रीय मंत्री अमित शाह का पूरा ध्यान मार्च 2026 तक देश को नक्सल-मुक्त करने पर है, छत्तीसगढ़ के सुकमा और बीजापुर में हाल ही में 33 नक्सलियों के आत्म-समर्पण की ख़बर आई, जिनपर कुल 50 लाख रुपए का इनाम था। ऐसे सरेंडर लगातार हो रहे हैं। इसप्रकार हमने इन नक्सलियों का उत्पात देखा है, और फिर इनका बचाव करने वाले फादर स्टेन स्वामी, सुधा भारद्वाज, वरवरा राव और गौतम नवलखा जैसों को समाज के भीतर से इन्हें समर्थन देते हुए देखा है। अब जब ये सब जेल गए, तभी नक्सलियों की कमर टूटी। इससे बौखलाए चीन ने अपने पिल्ले पाकिस्तान से यह नई हरकत करवा डाली। यह हमें समझना होगा और उसकी इस टुच्ची सोच के खिलाफ व्यापक प्रतिरक्षात्मक रणनीति बनानी होगी।

आपने यह भी देखा होगा कि कुछ ही दिनों पहले जमीन पर जमीन हड़पते जा रहे भारत के वक़्फ़ बोर्ड में सुधार के लिए जब वक़्फ़ क़ानून बना संसद से पास होकर, तो इसके विरोध के नाम पर पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाने वाले हरगोविंद दास और उनके बेटे चंदन को घर में घुसकर काट डाला गया। वहां पर मुस्लिम भीड़ के उत्पात के कारण लगभग 400 हिन्दुओं को मालदा पलायन करना पड़ा लेकिन कहीं से इस्लामी कट्टरपंथ के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं निकला। न गद्दार विपक्ष की ओर से, न समझदार कोर्ट की ओर से क्योंकि ये तथाकथित भारतीय रंगरूप वाले 'विदेशी' लोग धर्मनिरपेक्षता की भांग पीकर मस्त रहते हैं और अपनों को जहाँ तहां मरते हुए देखने के लिए अभिशप्त रहते हैं।

अब जरा एक और बात गौर कीजिये। एक ओर राहुल गाँधी अमेरिका में जाकर भारत के चुनाव आयोग पर हमला कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर यहाँ पर पाकिस्तानी आतंकवादी पर्यटकों पर गोलियां बरसा रहे हैं। खास बात ये है कि निशाना बनाए गए पर्यटकों में महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, ओडिशा और तमिलनाडु जैसे ग़ैर-हिन्दीभाषी राज्यों के भी लोग हैं। इससे साफ है कि पूरे देश में कश्मीरी आतंक का एक सख्त सन्देश भेजा गया है जिसका प्रति उत्तर भारत सरकार द्वारा दिया जाना अभी बाकी है। सिर्फ कूटनीतिक सर्जिकल स्ट्राइक से काम नहीं चलेगा, यह मोदी-शाह को पता है, क्योंकि शोक संतप्त भारतीय उनसे बड़ी कार्रवाई चाह रहे हैं ताकि रोज रोज के इस झंझट पर पूर्ण विराम लगे। यह मुश्किल भी नहीं है मजबूत इरादे होने पर।

इस हमले के पीछे एक बड़ा कारण ये भी है कि जम्मू कश्मीर से लद्दाख को अलग किए जाने और शांतिपूर्ण विधानसभा चुनाव के बाद सरकार बनने के कारण आतंकी बेचैन थे क्योंकि अब घाटी में पर्यटन फल-फूल रहा था। 2024 में लगभग 35 लाख, 2023 में 27 लाख और 2022 में 26 लाख पर्यटक कश्मीर घाटी पहुँचे थे (आँकड़े जम्मू को हटाकर)। इनमें हजारों की संख्या में विदेशी पर्यटक भी शामिल थे। जैसा कि हमें पता है, भारत ने 2023 में जी-20 अध्यक्षता की और इस दौरान देशभर में तमाम बैठकें हुईं। जम्मू कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में मई 2023 में जी-20 की टूरिज्म वर्किंग ग्रुप की बैठकें हुईं। कश्मीर के उत्पाद विदेशी प्रतिनिधिमंडल को दिखाए गए, कलाकारों से उन्हें मिलवाया गया। श्रीनगर में तमाम स्थलों पर विदेशी प्रतिनिधिमंडल घूमा भी। ऐसे दृश्य आतंकियों को और उनके आकाओं को लगातार असहज कर रहे थे।

ऐसे में सुलगता हुआ सवाल है कि आखिर हिन्दू कहाँ-कहाँ से पलायन करेंगे? सन-711 में हिन्दुकुश से लेकर 2025 में मुर्शिदाबाद तक पलायन ही तो कर रहे हैं जो उनकी नियति बन चुकी है। इसलिए अब देखते हैं कि हम कहाँ तक सिमटते हैं, और कहाँ-कहाँ से भागते हैं। यह समस्या का समाधान नहीं है। हाँ, आरएसएस और भाजपा की बदली हुई फितरत हर हिन्दू को चिंतित करती है, इसलिए चेत जाओ, अन्यथा पछताओगे क्योंकि देश-विदेश के नेता घड़ियाली आंसू ही बहायेंगे. कट्टरपंथी लोगों के बीच शांति और सुरक्षा की गारंटी देना अब इनके बस की बात भी नहीं रही।

जब दर्द सरहदें लांघता है, तो जवाब भी वैश्विक होना चाहिए

[आतंकवाद: एक वैश्विक दानव, जिसके खिलाफ विश्व को जागना होगा]

जब किसी देश की धरती पर मासूमों का लहू बहाया जाता है, तो वह केवल एक राष्ट्र की त्रासदी नहीं होती—वह पूरी मानवता की हार होती है। जम्मू-कश्मीर में हुआ हालिया आतंकी हमला भी ऐसा ही एक अमानवीय कृत्य था, जिसने न केवल भारत को, बल्कि पूरे विश्व को झकझोर कर रख दिया। यह हमला हमें याद दिलाता है कि आतंकवाद अब सीमाओं में कैद नहीं रहा, यह एक वैश्विक दानव बन चुका है, जो कहीं भी, किसी भी समय अपने नापाक पंजे फैला सकता है। और यही कारण है कि इस लड़ाई में केवल संवेदना और निंदा पर्याप्त नहीं—अब समय है निर्णायक और एकजुट कदमों का।

आतंकवाद का यह चेहरा नया नहीं है। दशकों से भारत इस आग में झुलस रहा है। जम्मू-कश्मीर, जो कभी अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांति के लिए जाना जाता था, आज बारूद और खून की कहानियां बयां करता है। हर हमले के बाद एक ही सिलसिला दोहराया जाता है—नेता निंदा करते हैं, संवेदनाएं व्यक्त की जाती हैं, और फिर कुछ समय बाद सब कुछ सामान्य हो जाता है। लेकिन क्या यह सामान्य स्थिति वाकई सामान्य है? क्या हम इस सच को स्वीकार कर सकते हैं कि निर्दोषों की जानें यूं ही जाती रहें और हम केवल शोक मनाकर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर लें? नहीं, यह समय अब और चुप रहने का नहीं है। यह समय है उस व्यवस्था को बदलने का, जो आतंकवाद को बार-बार मौका देती है।

आतंकवाद की जड़ें गहरी हैं। यह केवल हथियारों और हिंसा तक सीमित नहीं है। इसके पीछे एक विचारधारा है, जो नफरत और असहिष्णुता को बढ़ावा देती है। यह विचारधारा सीमाओं के पार फैलती है और उन देशों से पोषण पाती है जो आतंकवाद को अपने राजनैतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। जम्मू-कश्मीर में हुए इस हमले ने एक बार फिर उन देशों की ओर ध्यान खींचा है जो आतंकियों को पनाह देते हैं, उन्हें हथियार और आर्थिक मदद देते हैं। क्या ऐसे देशों को जवाबदेह ठहराने का समय नहीं आ गया है? क्या अंतरराष्ट्रीय समुदाय को अब यह स्पष्ट संदेश नहीं देना चाहिए कि आतंकवाद का समर्थन करने वालों को भी उसी तरह सजा मिलेगी, जैसे आतंकियों को?

लेकिन यह जिम्मेदारी केवल भारत की नहीं है। आतंकवाद एक वैश्विक समस्या है, और इसका समाधान भी वैश्विक स्तर पर ही संभव है। आज भारत में निर्दोष मारे जा रहे हैं, कल यह किसी और देश में हो सकता है। आतंकवाद किसी धर्म, जाति या देश को नहीं देखता—यह केवल तबाही मचाता है। इसलिए हर उस देश को, जो शांति और मानवता में विश्वास रखता है, इस लड़ाई में साथ आना होगा। अंतरराष्ट्रीय सहयोग, साझा खुफिया जानकारी, और आतंकी वित्त पोषण पर सख्त नियंत्रण—ये कुछ ऐसे कदम हैं जो इस दिशा में तुरंत उठाए जाने चाहिए। साथ ही, डिजिटल मंचों पर फैल रही कट्टरता को रोकने के लिए भी कड़े कदम उठाने होंगे, क्योंकि आज आतंकवाद की भर्ती और प्रचार का सबसे बड़ा हथियार इंटरनेट बन चुका है।

इस लड़ाई में सरकारों के साथ-साथ आम लोगों की भी अहम भूमिका है। हमें अपने समाज में उन तत्वों को पहचानना होगा जो नफरत और हिंसा को बढ़ावा देते हैं। शिक्षा और जागरूकता के जरिए हमें अपने बच्चों को यह सिखाना होगा कि हिंसा किसी समस्या का हल नहीं है। हमें उन्हें सहिष्णुता, करुणा और एकता की भावना देनी होगी, ताकि वे भविष्य में नफरत की इस आग को और न भड़कने दें। साथ ही, हमें उन सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को भी दूर करना होगा, जो अक्सर युवाओं को आतंकवाद की राह पर धकेल देती हैं। जब तक हम इन मूलभूत समस्याओं को हल नहीं करेंगे, तब तक आतंकवाद की जड़ें खत्म करना मुश्किल होगा।

जम्मू-कश्मीर में हुए इस हमले ने एक बार फिर हमें यह सोचने पर मजबूर किया है कि आखिर कब तक हम इस तरह की त्रासदियों को सहते रहेंगे? हर बार जब कोई मासूम अपनी जान गंवाता है, तो वह केवल एक परिवार का नुकसान नहीं होता—वह हमारी सामूहिक संवेदनशीलता का नुकसान होता है। हमें यह समझना होगा कि आतंकवाद के खिलाफ यह लड़ाई केवल सेना या सरकार की नहीं है, यह हम सबकी लड़ाई है। हमें अपने स्तर पर भी उन छोटे-छोटे कदमों को उठाना होगा, जो इस जंग में बड़ा बदलाव ला सकते हैं—चाहे वह अपने आसपास फैल रही नफरत को रोकना हो, या संदिग्ध गतिविधियों की सूचना देना हो।

आज विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होकर लड़े। अगर हम अपने राजनैतिक और कूटनीतिक स्वार्थों में उलझे रहे, तो यह आग एक दिन हमें भी अपनी चपेट में ले लेगी। हमें यह समझना होगा कि आतंकवाद के खिलाफ यह युद्ध लंबा हो सकता है, लेकिन इसे जीतना असंभव नहीं है। इसके लिए हमें दृढ़ संकल्प, साहस और एकजुटता की जरूरत है। हमें यह संदेश देना होगा कि हम न केवल आतंकवाद की निंदा करते हैं, बल्कि इसके खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करने को भी तैयार हैं।

जम्मू-कश्मीर में शहीद हुए उन मासूमों और वीर जवानों को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम इस लड़ाई को अंत तक लड़ें। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि उनकी कुर्बानी व्यर्थ न जाए। यह समय केवल शोक मनाने का नहीं, बल्कि उस दृढ़ संकल्प को जगाने का है, जो आतंकवाद को जड़ से उखाड़ फेंके। हमें यह संकल्प लेना होगा कि चाहे कितनी भी मुश्किलें आएं, हम इस जंग को जीतकर ही दम लेंगे। क्योंकि यह लड़ाई केवल भारत की नहीं, बल्कि पूरी मानवता की है। और इस लड़ाई में हर वह शख्स, हर वह देश शामिल होना चाहिए, जो शांति और न्याय में विश्वास रखता है। अब वक्त है कदम उठाने का, क्योंकि इतिहास हमें माफ नहीं करेगा अगर हमने इस मौके पर चुप्पी साध ली।

अब दुनिया को एक होकर सिर्फ यह नहीं कहना है कि "हम निंदा करते हैं"। अब उसे कहना है—"हम कार्रवाई करेंगे, और आतंकवाद को समाप्त कर के ही दम लेंगे।" यही हमारी सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी उन मासूमों को, जो आतंक की भेंट चढ़ गए।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

राजनीति की रंगमंचीय दुश्मनी और जनता की असली बेवकूफी

नेताओं की मोहब्बत और जनता की नादानी

कभी किरण चौधरी और शशि थरूर मंचों पर एक-दूसरे के खिलाफ़ खड़े होते हैं, कभी हिंदू-मुस्लिम के नाम पर पार्टियों की नीतियाँ बँटती हैं, और इसी बीच पिसती है आम जनता। क्या हमने कभी सोचा कि ये नेता तो एक-दूसरे से हाथ मिलाते हैं, कार्यक्रमों में एक-दूसरे की तारीफ़ भी कर देते हैं, मगर हम, जो पड़ोसी हैं, रिश्तेदार हैं, हम इनके बयान सुनकर दुश्मन क्यों बन जाते हैं?

राजनीति को अगर चुनाव तक ही सीमित रखा जाए, तो समाज की शांति बनी रह सकती है। लेकिन जब हम वोट की राजनीति को अपने दिल-दिमाग पर हावी कर लेते हैं, तब नफरत पनपती है।

नेताओं का तो अगला चुनाव आ जाएगा, अगला मंच सज जाएगा, लेकिन आम लोगों के दिलों में जो दरार पड़ती है, वो सालों नहीं भरती। अब वक्त है समझने का—राजनीतिक लड़ाइयों को व्यक्तिगत रिश्तों में घुसने मत दो। जो नेता आज एक-दूसरे को 'गद्दार' कहते हैं, वो कल संसद में साथ बैठकर कानून बनाएंगे, और हम? हम अब भी सोशल मीडिया पर बहस कर रहे होंगे।

— डॉ सत्यवान सौरभ

राजनीति का मंच कभी सीधा नहीं होता। सामने जो दिखता है, वह अक्सर पर्दे के पीछे छिपी सच्चाई का केवल एक दृश्य होता है। एक दृश्य, जिसमें मंच पर नेता जनता के लिए लड़ते, मरते, झगड़ते दिखाई देते हैं, और उसी दृश्य के अंत में वे परदे के पीछे गले मिलकर चाय की चुस्कियों में ठहाके लगाते हैं।

कभी आप ने सोचा है? कि जो लोग टीवी डिबेट्स में एक-दूसरे को 'देशद्रोही' और 'गद्दार' कहते हैं, वे ब्रेक के बाद साथ कॉफी पीते हैं? या जो नेता एक-दूसरे की पार्टियों को 'जनता के दुश्मन' बताते हैं, वे संसद सत्र खत्म होते ही एक-दूसरे के घर डिनर पर भी जाते हैं?

तो फिर असली बेवकूफ़ कौन है? वो नेता जो दिखावे की लड़ाई लड़ता है, या हम, जो उस लड़ाई को दिल पर लेकर अपनों से बैर पाल लेते हैं?

दुश्मनी का अभिनय, यारी की सच्चाई

राजनीति में दुश्मनी एक कला है, और यारी एक ज़रूरत। टीवी पर तीखे तेवर और ट्विटर पर जहरीले तीरों के बाद भी एक सच्चाई बनी रहती है—इन सबका असली उद्देश्य जनता को भावनात्मक रूप से ठगना है। चुनावों में वोट मिलते हैं 'भावना' से, न कि तर्क से। और जब जनता धर्म, जाति, मज़हब, और देशभक्ति के नाम पर जोश में आती है, तभी नेताओं की गोटियाँ सेट होती हैं।

किरण चौधरी और शशि थरूर हों या मोदी और ममता, केजरीवाल और राहुल—ये सब अपने-अपने हिस्से की जनता को भावनाओं में उलझाकर निजी ज़िन्दगियों में आराम से जीते हैं।

जनता: नेता के लिए साधन, खुद के लिए शत्रु

हमें ये सोचकर शर्म नहीं आती कि एक नेता के लिए हम अपने पड़ोसी से झगड़ा कर लेते हैं। वोट डालने से पहले हम दोस्ती तोड़ लेते हैं, व्हाट्सएप पर एक-दूसरे को ब्लॉक कर देते हैं, परिवारों में फूट पड़ जाती है, शादियों में मनमुटाव हो जाते हैं।

क्यों? क्योंकि हमें लगता है कि 'हमारा नेता' देश को बचा रहा है, और 'तुम्हारा नेता' देश बेच रहा है।

इस पागलपन की सीमा तब टूटती है जब आप यह देखते हैं कि जिन नेताओं को आप कट्टर दुश्मन मानते थे, वे एक-दूसरे के बेटे-बेटियों की शादी में साथ फोटो खिंचवा रहे होते हैं।

इतिहास गवाह है: यारी की राजनीति कोई नई बात नहीं

आज का ही नहीं, भारत के राजनीतिक इतिहास में भी ऐसे हजारों उदाहरण मिलते हैं जहाँ विरोधी विचारधाराओं वाले नेता संसद से बाहर एक-दूसरे के घनिष्ठ मित्र रहे हैं।

पंडित नेहरू और श्यामा प्रसाद मुखर्जी एक-दूसरे के कट्टर आलोचक थे, लेकिन व्यक्तिगत सम्मान की लकीर कभी नहीं लांघी।

अटल बिहारी वाजपेयी और सोनिया गांधी संसद में एक-दूसरे पर तीखी टिप्पणियाँ करते थे, परंतु व्यक्तिगत स्तर पर सौहार्द्र बना रहता था।

आज यह मर्यादा खत्म हो चुकी है, पर नेताओं के संबंध अब भी मधुर हैं—बस जनता को भ्रम में रखकर।

धर्म और जाति का खेल: राजनीति का सबसे सस्ता हथियार

हमारे देश की राजनीति धर्म और जाति के ट्रिगर पर चलती है। हिन्दू-मुस्लिम, दलित-ठाकुर, ब्राह्मण-पिछड़ा—हर चुनाव में एक नया विभाजन उछाल दिया जाता है।

और हम? हम झपटते हैं इस जाल पर। जैसे ही कोई नेता कहता है "हिंदू खतरे में हैं", "मुसलमान बढ़ गए हैं", "राम का अपमान हुआ है"—हम तलवारें निकाल लेते हैं, ट्वीट्स छोड़ने लगते हैं, और बहसों में मर्यादा भूल जाते हैं।

जबकि नेता जानते हैं कि ये मुद्दे सिर्फ जनता को उलझाने के लिए हैं, असल खेल कहीं और खेला जा रहा है—प्राइवेट डील्स, सरकारी टेंडर, ट्रांसफर पोस्टिंग, और सत्ता की कुर्सी।

मीडिया: आग में घी डालने वाली फैक्ट्री

जो आग नेता लगाते हैं, उसमें घी डालने का काम करता है मीडिया। न्यूज चैनलों की बहसें स्क्रिप्टेड होती हैं। हर रात एक तय एजेंडा, एक तय दुश्मन, और एक तय "राष्ट्रवाद" का पैमाना।

एंकर चिल्लाता है: "क्या आप देशभक्त हैं या देशद्रोही?"

जनता बंट जाती है: "मैं मोदी वाला हिंदू हूं, तू राहुल वाला मुसलमान है।"

और इसी बहस में हम इंसान से मशीन बन जाते हैं—नफ़रत फैलाने की मशीन।

सोशल मीडिया: अंधभक्तों और लिबरल्स की अखाड़ा राजनीति

सोशल मीडिया ने आम जनता को 'डिजिटल योद्धा' बना दिया है। अब हर कोई फ़ेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम पर एक विचारधारा का झंडा लेकर दूसरे पर टूट पड़ता है।

जो बीजेपी का समर्थक है, वह हर सवाल को 'टुकड़े-टुकड़े गैंग' बता देता है।

जो विपक्ष का है, वह हर सरकारी निर्णय को 'तानाशाही' का उदाहरण बताता है।

इस लड़ाई में तर्क मर गया है, और बची है तो सिर्फ भावनात्मक अंधभक्ति।

असल मुद्दों पर चुप्पी क्यों?

देश में आज भी करोड़ों लोग साफ पानी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित हैं।

लेकिन इन पर कोई नेता नहीं बोलता, क्योंकि इन मुद्दों से भावनाएं नहीं भड़कतीं, वोट नहीं मिलते।

गरीब की भूख, किसान की आत्महत्या, बेरोजगार की बेबसी, छात्र की आत्महत्या—इन सब पर राजनीति चुप है।

हम भी चुप हैं। क्योंकि हम उस "ट्रेंडिंग" मुद्दे पर ध्यान देते हैं जो हमारे नेता और मीडिया परोसते हैं।

क्या हम सच में लोकतांत्रिक हैं?

लोकतंत्र केवल वोट देने भर का नाम नहीं। यह सोचने, सवाल पूछने, और असहमति को सम्मान देने का नाम है। लेकिन आज जैसे ही कोई सरकार या नेता के खिलाफ सवाल उठाता है, उसे "देशद्रोही" करार दे दिया जाता है।

नेताओं की आलोचना अब 'राष्ट्र-विरोधी' हो गई है। क्या यह लोकतंत्र है? या एक भावनात्मक तानाशाही?

अब क्या करें? समाधान क्या है?

1. राजनीति को राजनीति की तरह समझें, धर्म या जाति का प्रतीक न बनाएं।
2. मीडिया और नेताओं के एजेंडे से बाहर निकलें, खुद सोचें, पढ़ें, सवाल करें।
3. आपसी संवाद बनाए रखें—राजनीति के मतभेद को व्यक्तिगत संबंधों पर हावी न होने दें।
4. लोकतंत्र में विपक्ष ज़रूरी है—उसे गालियाँ नहीं, जगह दीजिए।
5. नेताओं के दिखावे की लड़ाइयों में खुद को मोहरा न बनाएं।

अंत में: एक सीधा सवाल—आप असली नेता हैं या गुलाम?

हर चुनाव से पहले ये सोचिए कि आपका वोट किसको दे रहा है—उस नेता को जो आपको सड़कों, मस्जिदों और मंदिरों में लड़वाता है, या उस नेता को जो अस्पताल, स्कूल, पानी और रोज़गार की बात करता है?

अगर आप भी वही गुस्सा, वही नफ़रत लेकर जी रहे हैं जो नेताओं ने बोई थी, तो माफ़ कीजिए—आप आज़ाद नहीं हैं। आप उस तमाशे के दर्शक हैं जहाँ नेता नायक हैं और आप जोकर।

सिंधु नदी समझौता, दोगला पाकिस्तान। पहलगांव, आतंकी हमला,,,,

जिसे सिंधु जल संधि के नाम से भी जाना जाता है, भारत और पाकिस्तान के बीच 1960 में हुआ एक महत्वपूर्ण समझौता है। इस संधि के अनुसार, सिंधु नदी की पूर्वी नदियों (सतलज, ब्यास और रावी) का पानी भारत इस्तेमाल कर सकता है, जबकि पश्चिमी नदियों (सिंधु, झेलम और चिनाब) का पानी पाकिस्तान को मिलेगा।सिंधु जल संधि के तहत, भारत और पाकिस्तान के बीच पानी का बंटवारा होता था।

पाकिस्तान को पश्चिमी नदियों का पानी मिलता था, जो उसकी कृषि और पेयजल की जरूरतों के लिए महत्वपूर्ण है।भारत और पाकिस्तान के बीच स्थायी सिंधु आयोग के माध्यम से संधि के क्रियान्वयन की निगरानी होती थी।हाल ही में, भारत ने सिंधु जल संधि को खत्म करने का फैसला किया है।अब पाकिस्तान के पास संधि को फिर से चालू कराने का कोई रास्ता नहीं है, और न ही वह अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में संधि को लागू करने की मांग कर सकता है।इस फैसले से पाकिस्तान पर गंभीर प्रभाव पड़ेंगे, पानी की उपलब्धता में कमी से फसलों की पैदावार घट सकती है, खाद्यान्न की कमी हो सकती है और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक अस्थिरता बढ़ सकती है।पानी के प्रवाह में रुकावट से बिजली उत्पादन ठप हो सकता है, जिससे उद्योगों और घरों को बिजली की आपूर्ति बाधित हो सकती है।पानी की आपूर्ति में बाधा आने से बेरोजगारी, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन और ऋण चुकाने में चूक जैसी समस्याएं बढ़ सकती हैं।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि भारत का यह फैसला पाकिस्तान द्वारा सीमा पार आतंकवाद को पूरी

तरह से बंद नहीं करने के कारण लिया गया है। अब देखना यह है कि आगे चलकर दोनों देशों के बीच इस मुद्दे पर क्या होता है।

पहलगाम में हुए हमलों के बाद, भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया है, जिसका असर सिंधु जल संधि पर भी पड़ सकता है।भारत ने सिंधु जल संधि की समीक्षा करने का फैसला किया है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि पाकिस्तान अपने हिस्से का पानी सही तरीके से इस्तेमाल कर रहा है।भारत का यह फैसला पाकिस्तान पर दबाव डाल सकता है कि वह अपने देश में आतंकवाद को रोकने के लिए कड़े कदम उठाए।

सिंधु नदी एक प्रमुख नदी है जो तिब्बत, भारत और पाकिस्तान से होकर बहती है। यह नदी हिमालय पर्वत श्रृंखला से निकलकर दक्षिण-पश्चिम दिशा में बहती हुई अरब सागर में गिरती है।सिंधु नदी की लंबाई लगभग 3,180 किलोमीटर है।सिंधु नदी का उद्गम तिब्बत के मानसरोवर झील के पास से होता है।सिंधु नदी का बेसिन लगभग 11,65,000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है।सिंधु नदी पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था और कृषि के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।सिंधु नदी का पानी पाकिस्तान की कृषि के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।सिंधु नदी का पानी पाकिस्तान की आबादी के लिए पेयजल का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।सिंधु नदी पर कई जलविद्युत परियोजनाएं बनाई गई हैं जो पाकिस्तान को बिजली प्रदान करती हैं।भारत का कड़ा रुख और निर्णय पाकिस्तान के लिए बड़े ही नुकसान का सबब बन सकता है।पाकिस्तान को अपनी आतंकी गतिविधियों पर अंकुश लगाने की आवश्यकता है।वरना पाकिस्तान कोबर्बादी की तरफ जाने से कोई भी शक्ति अब नहीं रोक सकती।भारत का निर्णय सिंधु जल संधि के संबंध में महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन इसका प्रभाव कई कारकों पर निर्भर करेगा।

अंतर्राष्ट्रीय कानून,,,,सिंधु जल संधि एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है, और इसके प्रावधानों का पालन करना दोनों देशों की जिम्मेदारी है।

पाकिस्तान की प्रतिक्रिया,,,,पाकिस्तान की प्रतिक्रिया भारत के निर्णय के प्रभाव को निर्धारित करेगी।

अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की भूमिका,,,,अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की प्रतिक्रिया और समर्थन भी महत्वपूर्ण होगा।

भारत की घरेलू राजनीति,,,,भारत की घरेलू राजनीति और जनता की राय भी भारत के निर्णय को प्रभावित करेगी।

निर्णायक और महत्वपूर्ण होने के कारण,,,जल संसाधनों का महत्व,,,सिंधु नदी का पानी दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण है, और इसके उपयोग पर नियंत्रण करना एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।पाकिस्तान सिंधु नदी के पानी पर बहुत अधिक निर्भर है, और भारत का निर्णय उसके लिए महत्वपूर्ण होगा।सिंधु जल संधि का मुद्दा क्षेत्रीय तनाव को बढ़ा सकता है, और भारत का निर्णय इस तनाव को और बढ़ा सकता है। लेकिन भारत का अपने हित में कोई भी निर्णय उसके दूरगामी परिणामों के तहत ही होगा।

भारत का निर्णय सिंधु जल संधि के संबंध में महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन इसका प्रभाव कई कारकों पर निर्भर करेगा। भारत को अपने निर्णय के परिणामों को ध्यान से विचार करना होगा और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की प्रतिक्रिया को भी ध्यान में रखना होगा।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

अग्निवीर योजना: बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी का पर्दाफाश

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : अग्निवीर में नौकरी दिलाने का वादा करके धोखा दिया। खोरधा पुलिस ने एक बड़े रैकेट का भंडाफोड़ किया है। इस घटना में नौसेना अधिकारियों की संलिप्तता को लेकर बड़ा खुलासा हुआ है। इस मामले में आईएनएस चिल्का के एक सेवारत अधिकारी और उत्तर प्रदेश के एक अन्य सेवानिवृत्त नौसेना अधिकारी को गिरफ्तार किया गया है। खोरधा पुलिस एक अन्य व्यक्ति को गिरफ्तार करने के लिए अंडमान एवं निकोबार जाएगी।अग्निवीर योजना में बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी का पर्दाफाश हुआ। अग्निवीर परीक्षा पास कराने के लिए आशायी से पैसे लेने के आरोप में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें तीन नौसैनिक भी शामिल हैं। भारतीय नौसेना में फायरमैन की नौकरी दिलाने का झूठा वादा कर लाखों रुपये की धोखाधड़ी करने के आरोप में तीन नौसेना कर्मियों को गिरफ्तार किया गया है। खोरधा पुलिस ने उनके पास से चार मोबाइल फोन जब्त किए हैं। पुलिस को पता चला है कि इस घटना में दो अन्य लोग भी शामिल थे। खुर्दा एसपी सागरिका नाथ ने कहा कि जांच प्रक्रिया पूरी होने के बाद सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। उनमें से दो अंडमान एवं निकोबार में आईएनएस केशरी पर कार्यरत हैं। अग्निवीर की परीक्षा में अनियमितता और भ्रष्टाचार के बारे में सूत्रों से जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने 19 तारीख को बालूगांव थाने में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी। जांच के दौरान पाया गया कि अग्निवीर परीक्षा में भ्रष्टाचार हुआ था। इच्छुक उम्मीदवारों ने नवंबर 2024 को परीक्षा दी। आरोपियों ने अन्य बातों के अलावा यह सुनिश्चित करने के लिए बड़े पैमाने पर परीक्षा ली कि बच्चे पास हो जाएं। इन दिनों नौकरी दिलाने के नाम पर कई घोटाले हो रहे हैं, लेकिन नौसेना कर्मियों की ऐसी हरकत ने सबको हैरान कर दिया है।

"मुस्कान का दान"

कभी किसी शाम की थकी हुई साँसों में,
तुम्हारा एक हल्का सा रुकैसे हो?ऱ उतरता है —
जैसे रेगिस्तान में कोई बूँद गिर जाए,
जैसे सूनी आँखों में उम्मीद फिर गहराए।

दान क्या है?
सिर्फ अन्न, जल, या स्वर्ण की गाथा नहीं,
कभी-कभी वक्त का दिया पल भी
किसी की टूटती दुनिया की परिभाषा बदल देता है।

तुम जब अनकहे दर्द को पढ़ लेते हो,
बिना माँगे सहारा बन जाते हो —
वो भी एक दान ही है,
जो किसी मंदिर की घंटी से कहीं ज्यादा गूंजता है।

कभी किसी को चुपचाप हौसला दे देना,
बिन शब्दों के उसकी आँखों को पढ़ लेना,
यह भी तो प्रेम की भिक्षा है —
जिसे देने वाला राजा हो जाता है,
चाहे वस्त्र फटे हों या जेबें खाली।

किसी को उसकी खोई मुस्कान लौटा देना,
किसी निराश आत्मा में जीवन की लौ जगा देना —
यह दान नहीं,
मानवता का सबसे पवित्र यज्ञ है।

तो जब भी कर सको,
किसी के मन में एक दीप जला देना,
कोई तुम्हारी वजह से मुस्कराए —
समझो तुमने सृष्टि को एक नया सूर्य दे दिया।

प्रियंका सौरभ

बूंद-बूंद के लिए भी तरस जाओगे...!

अब तो बूंद-बूंद के लिए भी तरस जाओगे,
क्यों? नाहक बहाया लहू तुम पछताओगे।
पहले से ही नाकारा हो रही थी ये जिंदगी,
परवरदिगार भी देकर क्या? करता बंदगी।
सोचों खून की होली से क्या हुआ हासिल,
बदुआएँ ही निकली और मरे हो तिल-तिल।

अब तो बूंद-बूंद के लिए भी तरस जाओगे,
क्यों? नाहक बहाया लहू तुम पछताओगे।
खेती खाब हो गई-सिंचाई नाराज हो गई,
सिंधू की मोहब्बत आप सबसे दूर हो गई।
इस मंजर की तो कल्पना भी ना की होगी,
आसीम तेरे लिए यही सज़ा मुंसिफ़ होगी।

अब तो बूंद-बूंद के लिए भी तरस जाओगे,
क्यों? नाहक बहाया लहू तुम पछताओगे।
सोचना जरूर कौन-कौन अपने वफादार,
जिनके मुंह से टपकती रहीं जिहादी लार।
कौनसी हूरों से मिलवा रहें थे ये कलाकार,
मृत्यु के बाद कैसी जिंदगी बता रज़ाकार।
(संदर्भ-सिंधू जल समझौता रद्द करने पर।)

संजय एम तराणेकर

ऐ मौत भी .....।

' ऐ मौत भी क्या
धर्म पूछ रही है
सस्ती ज़िन्दगी के समाने
लाचार लग रही है ऐ मौत।
बच्चों के समाने पिता की मौत
पत्नी की आंखों समाने पति की
अब खोफ में है दिन रात
आज फिर लाचार लग रही है ऐ
मौत।
नापाक मंसूबों ने फिर धर्म पूछा
और मार दी दनादन गोलियां
इन्हें जिहादी या काफिर कहे
ऐ मौत भी क्या अब धर्म पूछ रही है।
लहूं के इन रंगों में दुनिया से
क्या इंसानियत इस तरह मरती है
ऐ आतंकवादीयो का कोई मजहब
नहीं होता
फिर भी वह धर्म पूछ रहें हैं ?
खून से लतपथ घाटी
फिर क्या सुनसान हो जायेंगी
मोहब्बत प्रेम एकजुटता मिट जायेगी
क्योंकि ऐ मौत भी धर्म पूछ रही है।

हरिहर सिंह चौहान

नये रथ परिचालन मार्ग का अभियंता ने लिया जायजा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला, इलाके का महत्वपूर्ण आध्यात्मिक पर्व आगामी आषाढ़ शुक्ल द्वितीया तिथी को आरंभ होनेवाली रथ यात्रा को लेकर आज मुख्यमार्ग सरायकेला (बडदांड) का निरीक्षण हुआ, कारण इस वर्ष नये रथ का निर्माण होने जा रहा है।सरायकेला नगरीय क्षेत्र से होकर गुजरे वाली प्रस्तावित नये रथ हेतु बिजली विभाग के कार्यपालक अभियंता ने आवश्यक जगह पर नये बिजली खंभे का अधिष्ठापन का मुआयना किया ।इस वर्ष नये रथ का निर्माण के साथ तदनुरूप खंभे व विद्युत प्रवाह तारों को भी कवर युक्त बनाये जाने की बात कही ।

कार्यपालक अभियंता ने मौके पर कहा कि वे हर जगह लोहे के नये पोल लगाने को सोच रहे हैं ।इसके लिए वे मौसी बाड़ी से मुख्य बाजार होते हुए बार्ड संख्या 11 तक पहुंचे तथा वहां से जगन्नाथ मंदिर तक गये ।इसके लिए आज प्रारंभिक अवलोकन किया गया ।कल वे सहायक अभियंता एवं कनीय अभियंता को यहां भेजेंगे ।उसके बाद प्राक्कलन तैयार की जायेगी । फिर उक्त प्राक्कलन को पास कराया जायेगा । संबंधित कार्य हेतु धनराशि के संदर्भ में उन्होंने कहा Goverment of India Urbana Devlopment scheme के तहत इस कार्य को कराया जायेगा ।योजना स्वीकृति मिलने के उपरांत एक महिने के अन्दर कार्य पुरा कर लिया जायेगा ।इस अवसर पर विधायक प्रतिनिधि सानंद आचार्य समेत के अलावे राजा सिंहदेव , गणेश शतपथी , शंकर सतपथी, राजेश मिश्रा , कार्तिक परिच्छा, सुदीप पटनायक आदि अन्य अनेकों निरीक्षण क्रम में विभिन्न जगह पर उपस्थित थे ।

ओडिशा में पाकिस्तानी, सरकार एक्शन मोड में

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : पहलगाम की घटना ने न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में हलचल मचा दी है। इसमें 26 निर्दोष पर्यटक मारे गये। इस घटना के बाद भारत-पाकिस्तान सीमा पर तनाव चरम पर पहुंच गया है। हालांकि लश्कर-ए-तैयबा की एक शाखा पाकिस्तान स्थित 'द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ)' ने हमले की जिम्मेदारी ली है, लेकिन पाकिस्तानी सेना ने हाल ही में जम्मू-कश्मीर के विभिन्न इलाकों में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास गोलीबारी शुरू कर दी है।भारतीय सेना ने भी इसका कड़ा जवाब दिया है। पहलगाम आतंकी घटना को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को अहम बैठक बुलाई है। बैठक में शाह ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से बात की और पाकिस्तानी नागरिकों का वीजा रोकने का आदेश दिया। शाह ने अपने राज्य में पाकिस्तानी नागरिकों की पहचान करने, उनके वीजा रद्द करने और उन्हें तत्काल राज्य से बाहर निकालने का आदेश दिया है। इस बीच, खबर मिली है कि 12 पाकिस्तानी नागरिक फिलहाल ओडिशा में हैं। राज्य में दीर्घकालिक वीज़ा पर 12 पाकिस्तानी हैं। केंद्रीय गृह मंत्रालय के आदेश के बाद उनकी रिहाई की तैयारियां शुरू हो गई हैं। भारत छोड़ने के लिए नोटिस जारी करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

पुलवामा आतंकी कार्रवाई महज संयोग नहीं प्रयोग है : सुप्रियो भट्टाचार्य, झामुमो

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

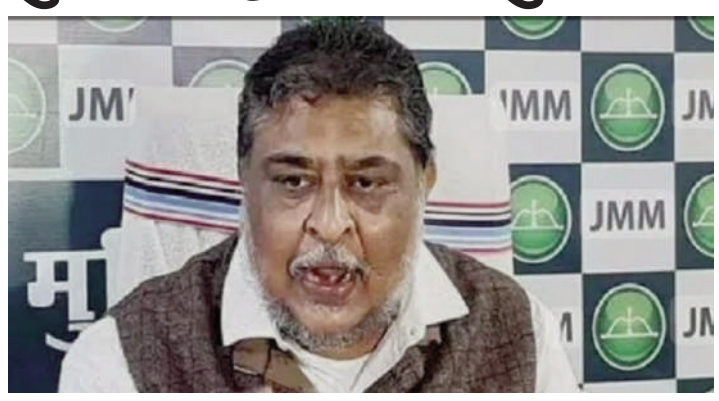

रांची, झारखंड में सत्तारूढ़ पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा की तरफ से पुलवामा पर बयान आया है. पुलवामा आतंकी कार्रवाई महज संयोग नहीं वल्कि प्रयोग है इसपर केन्द्र कड़ी कारवाई करे. उक्त बातें पार्टी के ऊंचे ओहदे के प्रवक्ता रहे सुप्रियो भट्टाचार्य ने कही है.

उन्होंने आगे कहा कि जब-जब देश मे कोई सवेंदनशील मुद्दा सामने आता है तब-तब ऐसे घटना घटती है. जो महज संयोग नहीं, प्रयोग जैसा लगता है. पुलवामा में भी हमलोगों ने देखा था. वहां 40 जवान शहीद हुए थे. उसी प्रकार मंगलवार को कश्मीर के पहलगाम में ऐसे समय में हमला हुआ, जब देश कई सवेदनशील मुद्दे को लेकर चर्चा और बहस चल रही है. उन्होंने कहा कि कश्मीर के पहलगाम में जब टूरिस्म का पीक समय चल रहा है, ऐसे में वहां कोई सुरक्षा नहीं होना कई सवाल खड़ा करती है. अमरनाथ यात्रा को लेकर उसी पहलगाम में बेस कैम्प बनना है और वहां इस प्रकार के हमला हो जाता है. इतनी बड़ी संख्या में लोग वहां घूमने के लिए पहुचे थे और सुरक्षा कुछ नहीं थी.

कड़ा सबक सिखाने की जरूरत

सुप्रियो भटाचार्य ने कहा कि देश का इतना बड़ा सुरक्षा बजट है. केवल पानी रोकने से नहीं होगा. आतंकवाद पर कारगर कदम उठाना होगा. पूरा देश सरकार के साथ खड़ा है. उन्होंने कहा कि देश की अखंड़ता को तोड़ने की साजिश पड़ोसी मुल्क का है. उन्हें कड़ा सबक सिखाने की जरूरत है. कठोर करवाई होनी चाहिए.

बता दें कि पहलगाम में मंगलवार को आतंकी हमले में 26 पर्यटकों को गोलियों से भून डाला गया है. पहलगामा आतंकी हमले की सभी राजनीतिक पार्टियों ने निंदा की है, लेकिन विपक्षी पार्टियों ने खुफिया विफलता को लेकर भी सवाल खड़े किए हैं और अब झारखंड मुक्ति मोर्चा ने हमले की निंदा की है, लेकिन केंद्र सरकार से सवाल भी पूछा है.

गद्दारों की पहचान करे केंद्र सरकार

उन्होंने कहा कि देश का वह गद्दार कौन है? जो ऐसे आतंकियों को उस स्थान तक पहुचाया. कौन है वह गद्दार, उसका पता किया जाना चाहिए. जब-तक हमलोग गद्दार को चिन्हित नहीं कर लेते हैं, तब-तक आतंकियों का सफाया नहीं हो सकता. केंद्र सरकार यह सुनिश्चित करे. उन्होंने कहा कि इस एक घटना से पूरा जम्मू कश्मीर की अर्थवयवस्था खत्म हो गयी है. जम्मू कश्मीर 20 साल पीछे चल जाएगा

उन्होंने कहा कि जब-जब देश मे कोई सवेंदनशील मुद्दा सामने आता है. तब-तब ऐसे घटना घटती है. जो महज संयोग नहीं, प्रयोग जैसा लगता है. पुलवामा में भी हमलोगों ने देखा था. वहां 40 जवान शहीद हुए थे. उसी प्रकार मंगलवार को कश्मीर के पहलगाम में ऐसे समय में हमला हुआ, जब देश कई सवेदनशील मुद्दे को लेकर चर्चा और बहस चल रही है.

उन्होंने कहा कि कश्मीर के पहलगाम में जब टूरिस्म का पीक समय चल रहा है, ऐसे में वहां कोई सुरक्षा नहीं होना कई सवाल खड़ा करती है. अमरनाथ यात्रा को लेकर उसी पहलगाम में बेस कैम्प बनना है और वहां इस प्रकार के हमला हो जाता है. इतनी बड़ी संख्या में लोग वहां घूमने के लिए पहुचे थे और सुरक्षा कुछ नहीं थी. सुप्रियो भटाचार्य ने कहा कि देश का इतना बड़ा सुरक्षा बजट है. केवल पानी रोकने से नहीं होगा. आतंकवाद पर कारगर कदम उठाना होगा. पूरा देश सरकार के साथ खड़ा है. उन्होंने कहा कि देश की अखंड़ता को तोड़ने की साजिश पड़ोसी मुल्क का है. उन्हें कड़ा सबक सिखाने की जरूरत है. कठोर करवाई होनी चाहिए.

बता दें कि पहलगाम में मंगलवार को आतंकी हमले में 26 पर्यटकों को गोलियों से भून डाला गया है. पहलगामा आतंकी हमले की सभी राजनीतिक पार्टियों ने निंदा की है, लेकिन विपक्षी पार्टियों ने खुफिया विफलता को लेकर भी सवाल खड़े किए हैं और अब झारखंड मुक्ति मोर्चा ने हमले की निंदा की है, लेकिन केंद्र सरकार से सवाल भी पूछा है.

उन्होंने कहा कि देश का वह गद्दार कौन है? जो ऐसे आतंकियों को उस स्थान तक पहुचाया. कौन है वह गद्दार, उसका पता किया जाना चाहिए. जब-तक हमलोग गद्दार को चिन्हित नहीं कर लेते हैं, तब-तक आतंकियों का सफाया नहीं हो सकता. केंद्र सरकार यह सुनिश्चित करे. उन्होंने कहा कि इस एक घटना से पूरा जम्मू कश्मीर की अर्थवयवस्था खत्म हो गयी है. जम्मू कश्मीर 20 साल पीछे चल जाएगा

झारखंड में उत्कल गौरव जयंती पर उनके आदर्शों का वार्ता वाहक होगें पत्रकार

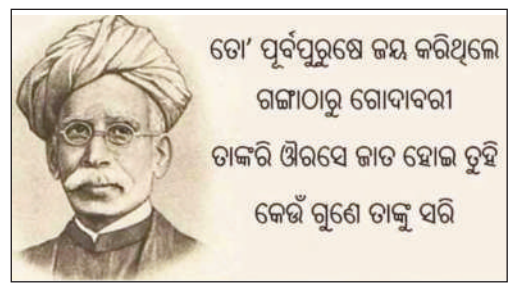

उपेक्षित ओड़िया भाषा, संस्कृति रोजगार, आर्थिक - राजनीति हक पर होगी फोकस

सरायकेला, उत्कल गौरव मधुसूदन दास जी की जयंती आगामी 28 अप्रैल को सरायकेला में कुछ विशेष तरीके से मनेगी ।इसको लेकर वरिष्ठ पत्रकार कार्तिक परिच्छा की अध्यक्षता में एक बैठक सरायकेला परिसदन में विगत रविवार हुई है ,जिसमें सभी ओडिया पत्रकारों जोड़कर तीनों सिंहभूम में ओडिया उपेक्षा एवं मूल निवासी जनमानस की आवाज को बुलंद करने की अपील की गयी जो उत्कल गौरव मधूबाबू का आदर्श रहा ।इसके साथ बैठक में समाज का जागरूक वर्ग पत्रकारों ने आवश्यक तैयारियां शुरू कर दी है तथा अब लोगों को सरायकेला , खरसांवां विलय दस्तावेज 1947 तथा1936 से ओडिशा से अलग हुए सिंहभूम के संवैधानिक हक के आधार पर जनता को उनके अधिकार दिलाई जायेगी । सिंहभूम के आमजनों को उनके हक के लिए लड़ाई लड जनता को उनका अधिकार दिलने में पत्रकार महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में अब काम करेंगे ।अब वे हर ओड़िया सामाजिक संस्थान, गांव एवं शोषित पीड़ित लोगों की लड़ाई लड़ेंगे जो मधु बाबू का आदर्श रहा है । ओड़िशा में मधुबाबू के जन्मदिन को अधिवक्ता दिवस के रूप में मनाया जाता यद्यपि सरायकेला, खरसावां , सिहभूम के लोगों के 1936-37 उसके पश्चात 1947 से अबतक न्याय नहीं मिल पाना उस षड्यंत्र पर कलम व कैमरे का विशेष फोकस होगा ।जिस पर आगे महत्वपूर्ण रणनीति बना कर धर्म, जाती , राजनीति पार्टी , उसकी विचारधारा से ऊपर उठकर काम किया जायेगा । सबसे महत्वपूर्ण बात ओछी राजनीति मानसिकता से ऊपर उठकर पत्रकार मानव अधिकार निमित्त काम करेंगे तथा इतिहास के गर्त में डूबे ओडिया को उठाया जायेगा ।

थैंक यू पाक, लश्करे तोयबा...., ट्विट करने वाले धार्मिक शिक्षक की जांच एटीस झारखंड को

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद इंटरनेट मीडिया एक्स पर विवादित पोस्ट डालने वाले बोकारो के गिरफ्तार युवक मोहम्मद नौशाद उर्फ मोहम्मद नौशाद काशमी से झारखंड पुलिस की आतंकवाद निरोधक दस्ता (एटीएस) ने लंबी पूछताछ की है।

एटीएस से आरोपित युवक से बालीडीह थाने में पूछताछ की और उसके घर भी गई, जहां अन्य रिश्तेदारों से पूछताछ की है और तलाशी भी ली है। अब तक की छानबीन में एटीएस को कुछ संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी मिली है, जिसका सत्यापन चल रहा है। एटीएस गिरफ्तार मोहम्मद नौशाद के अन्य सहयोगियों के बारे में भी जानकारी जुटा रही है। बताया जा रहा है कि छानबीन में एटीएस के हाथ बड़ी सफलता लग सकती है और देश में सांप्रदायिक तनाव भड़काने वालों का एक बड़ा नेटवर्क पकड़ा जा सकता ।

युवक मोहम्मद नौशाद धार्मिक शिक्षक है। उसने पहलगाम आतंकी हमले के बाद इंटरनेट मीडिया एक्स पर पोस्ट कर थैंक यू पाकिस्तान, थैंक यू लश्कर ए तैयबा लिखा था। वह बोकारो के मिल्लत नगर, मखदुमपुर का रहने वाला है। उसने अरबी, हिंदी, उर्दू व अंग्रेजी की शिक्षा हासिल कर रखी है।

एटीएस उसके सभी शैक्षणिक केंद्रों के बारे में भी जानकारी जुटा रही है। यह जानने की कोशिश में है कि उसके सहयोगी, उसके प्रशिक्षक कौन-कौन हैं और उनकी गतिविधियां वर्तमान में क्या है।

नौशाद के पिता मोहम्मद मुस्ताक ने बताया कि वे बिहार के दरभंगा के मुलत रहने वाले हैं। उनका बेटा पढ़ाई के लिए कई जगह गया, लेकिन सहारनपुर के मदरसे से लौटने के बाद उसके व्यवहार में काफी बदलाव आ गया था। उन्होंने बताया कि नौशाद न केवल विरोध की बातें करने लगा, बल्कि परिवार के साथ भी गाली-गलौज करता था। मुस्ताक ने यह भी माना कि नौशाद ने गलत किया है।

बलीडीह थाना प्रभारी नवीन कुमार सिंह ने बताया कि प्रोटोकॉल के तहत नौशाद के घर की तलाशी ली गई ताकि यदि कोई साक्ष्य मिले तो उसे सख्त सजा दिलाई जा सके। उन्होंने बताया कि घरवालों से पूछताछ की गई है, लेकिन अभी कुछ खुलासा नहीं किया जा सकता।

बोकारो एसपी मनोज स्वर्गियारी ने कहा कि पुलिस यह जानने की कोशिश कर रही है कि नौशाद का कोई सहयोगी तो नहीं है और अगर है तो वह कहां है। उन्होंने बताया कि ATS की टीम भी जांच में जुटी हुई है और फिलहाल कड़ी से कड़ी जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

देशद्रोह का केस दर्ज किया गया है बालीडीह थाना प्रभारी नवीन कुमार सिंह ने कहा कि एसआई अजय कुमार के बयान पर उसके खिलाफ देशद्रोह का केस दर्ज किया गया है। पूछताछ में बताया कि उसने सहारनपुर देवबंद से पढ़ाई की है। वह लोहरदगा के गिदो प्रखंड के एक मस्जिद में बच्चों को पढ़ाता है। नौशाद के सोशल मीडिया अकाउंट पर मिले कई आपत्तिजनक पोस्ट बालीडीह पुलिस ने जब नौशाद के सोशल मीडिया अकाउंट को खंगाला तो उस पर ढेरों आपत्तिजनक पोस्ट मिले, जो लोगों को भड़काने के लिए काफी थे। उसने वॉलपेपर पर रिजेक्ट वक्फ अमेंडमेंट एक्ट-2025 का पोस्टर लगा रखा है। वक्फ एक्ट के विरोध में कई आपत्तिजनक पोस्ट किया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023